हिंदी सीखनेवाले मलयालम भाषा-भाषी छात्रों की भाषावैज्ञानिक त्रुटियाँ: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

(जिला कालिकट के छात्रों के विशेष सन्दर्भ में)

AN ANALYTICAL STUDY OF THE LINGUISTIC ERRORS OF MALAYALAM SPEAKING LEARNERS OF HINDI

(With special reference to the Students of Calicut district)

कालिकट विश्वविद्यालय की डॉक्टर ओफ फिलोसफी
की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

Thesis submitted to the University of Calicut for the Degree of
Doctor of Philosophy in Hindi

2022

निर्देशक:
प्रोफ. (डॉ.) आर. सेतुनाथ
प्रोफेसर
हिंदी विभाग
कालिकट विश्वविद्यालय

प्रस्तुतकर्ता:
सजना पी.
शोध छात्रा
हिंदी विभाग
कालिकट विश्वविद्यालय

Supervising Teacher:
Prof. (Dr.) R. SETHUNATH
Professor

Submitted by
SAJNA P.
Research Scholar

DEPARTMENT OF HINDI
University of Calicut

CERTIFICATE

This is to certify that this thesis entitled "**An Analytical Study of the Linguistic errors of Malayalam Speaking Learners of Hindi (With special reference to the students of Calicut district)**" is a bonafide record of research work carried out by **Smt. SAJNA P.**, under my guidance and supervision and that no part of this thesis has hitherto been submitted for any Degree, Diploma or other similar title in any other University.

The examiners have not suggested any modifications or corrections in the thesis and therefore the original thesis is resubmitted as such. Soft copy attached is the same as that of the resubmitted copy.

Present Address

Prof.(Dr.) R. Sethunath
DIRECTOR
School of Distance Education
University of Calicut

Prof. (Dr.) R. Sethunath
(Supervising Teacher)
Professor
Department of Hindi
University of Calicut

DEPARTMENT OF HINDI
UNIVERSITY OF CALICUT

C.U. Campus

Date: 21.08.2023

DECLARATION

I, Sajna P., do hereby declare that this thesis entitled "**An Analytical Study of Linguistic Errors of Malayalam Speaking Learners of Hindi (With special reference to the students of Calicut district)"** is a record of bonafide research work carried out by me and this has not previously formed the basis for the award of any Degree, Diploma, Associateship, Fellowship or other similar Title or Recognition before in any other University or Institution.

This research work was supervised by Prof. (Dr.) R. Sethunath, Professor of the Department of Hindi, University of Calicut.

SAJNA P.
Research Scholar

C.U. Campus

Date:

अनुक्रम

प्राक्कथन 1 – 5

पहला अध्याय : **व्यतिरेकी भाषाविज्ञान और त्रुटि विश्लेषण** 6 – 24

१.१. भाषा

१.१.१. भाषाविज्ञान

१.१.२. भाषाविज्ञान स्वरूप एवं परिभाषा

१.१.३. भाषाविज्ञान के अध्ययन की पद्धतियाँ

१.१.३.१. वर्णनात्मक भाषाविज्ञान (Descriptive Linguistics)

१.१.३.२. ऐतिहासिक भाषाविज्ञान (Historical Linguistics)

१.१.३.३. तुलनात्मक भाषाविज्ञान (Comparative Linguistics)

१.१.३.४. व्यतिरेकी भाषाविज्ञान (Contrastive Linguistics)

१.१.३.५. अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान (Applied Linguistics)

१.२. भाषाविज्ञान के अंग

१.२.१ ध्वनिविज्ञान (Phonology)

१.२.२ रूपविज्ञान (Morphology)

१.२.३ शब्दविज्ञान (Wordology)

१.२.४ वाक्यविज्ञान (Syntax)

१.२.५ अर्थविज्ञान (Semantics)

१.३ व्यतिरेकी भाषाविज्ञान (Contrastive Linguistics)

१.३.१ व्यतिरेकी भाषाविज्ञान की मूल स्थापनाएँ

१.३.२ व्यतिरेकी विश्लेषण के सामान्य सिद्धांत

१.३.३ व्यतिरेकी विश्लेषण और भाषा शिक्षण

१.४ दूसरी भाषा शिक्षण

१.४.१ व्यतिरेकी विश्लेषण से प्राप्त स्थितियाँ और कठिनाईयाँ

१.५ अन्तरभाषा (Inter Language)

१.५.१ अन्तरभाषा की मुख्य विशेषताएँ

१.६ त्रुटि विश्लेषणः स्वरूप और स्रोत

१.६.१ १) भूल २. अशुद्धि ३. त्रुटि।

१.६.२ अंतरभाषा संदर्भित त्रुटियाँ

१.६.३ अतिसामान्यीकरण

१.६.४ उपनियमों की अज्ञानता

१.६.५ नियमों का अपूर्ण प्रयोग

१.६.६ भ्रांतिपूर्ण धारणा

१.७ मातृभाषा का व्याघात

१.७.१ मातृभाषा में होनेवाली त्रुटियाँ

१.७.२ चुक

१.७.३ भूल

१.७.४ अज्ञानजनित

१.७.६ अनिश्चितजनित

दूसरा अध्याय : **भाषाओं का आकृतिमूलक एवं पारिवारिक वर्गीकरण** 35 – 62

२.१. संसार की भाषाएँ और उनका वर्गीकरण

२.२. आकृतिमूलक वर्गीकरण (Morphological Classification)

२.२.१. अयोगात्मक भाषाएँ (Isolating Languages)

२.२.२. योगात्मक भाषाएँ (Agglutinating Languages)

२.२.२.१. प्रश्लिष्ट योगात्मक

२.२.२.२. अश्लिष्ट योगात्मक

२.२.३. श्लिष्ट योगात्मक

२.३. पारिवारिक वर्गीकरण (Genealogical Classification)

२.३.१. भारोपीय परिवार

२.३.२. द्राविड़ परिवार

२.३.३. चीनी या एकाक्षरी परिवार

२.४. भारोपीय परिवार का महत्व

२.४.१. भारोपीय परिवार का विभाजन

२.४.२. केन्तुम वर्ग

२.४.३. सतम् वर्ग

२.५. भारतीय आर्य भाषाएँ

२.५.१. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा (१५०० ई. पूर्व. से ५०० ई. पूर्व तक)

२.५.२. मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा (५०० ई. पूर्व से १००० ई. पु. तक)

२.५.२.१. प्रथम प्राकृत (पालि)

२.४.२.२. द्वितीय प्राकृत (साहित्यक प्राकृत)

२.५.२.३. तृतीय प्राकृत (अपभ्रंश)

२.५.३. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ (१००० ई. से वर्तमान समय तक।)

२.५.४. आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का वर्गीकरण

तीसरा अध्याय : **हिन्दी और मलयालम भाषाओं का भाषावैज्ञानिक विश्लेषण** 63 – 117

३.१. हिन्दी की ध्वनिव्यवस्था

३.२. स्वर

३.२.१. स्वरों का वर्गीकरण

३.२.१.१. जिह्वा के उन्नत होनेवाले भाग के आधार पर स्वरों के भेद

३.२.१.१.१. अग्र स्वर

३.२.१.१.२ मध्य स्वर

३.२.१.१.३ पश्च स्वर

३.२.१.२ जीभ के उन्नत होने की या जीभ की ऊचाई की स्थिति के आधार पर स्वरों के भेद

३.२.१.२.१. संवृत स्वर

३.२.१.२.२. विवृत स्वर

३.२.१.२.३. अर्द्ध संवृत

३.२.१.२.४. अर्द्ध विवृत स्वर

३.२.१.३. ओठों की स्थिति के आधार पर स्वर स्वनिमों के भेद

३.२.१.३.१. गोलित और अगोलित।

३.२.१.४. मात्रा के आधार पर स्वरों के भेद

३.२.१.५. कोमलतालु की स्थिति के आधार पर स्वरों के भेद

३.२.१.६. जीभ के चल - अचल स्थिति के आधार पर स्वरों के भेद

३.२.१.७. स्वरतन्त्रियों की स्थिति के आधार पर स्वरों के भेद

३.२.१.८. मुँह की माँसपेशियों की दृढता - शिथिलता के आधार पर स्वरों के भेद।

३.३. व्यंजन

३.३.१ व्यंजनों का वर्गीकरण

३.३.१.१ स्थान के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

३.३.१.१.१ ओष्ठ्य

३.३.१.१.२ दन्तोष्ठ्य

३.३.१.१.३ दन्त्य

३.३.१.१.४ वर्त्स

३.३.१.१.५ तालव्य

३.३.१.१.६ मूर्धन्य

३.३.१.१.७ कंठ्य

३.३.१.१.८ अलिजिह्वीय

३.३.१.१.९ स्वरयन्त्र मुखीय (काकल्य)

३.३.२. प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

३.३.२.१. स्पर्श

३.३.२.२. संघर्षी

३.३.२.३. स्पर्श संघर्षी

३.३.२.४. पार्श्विक

३.३.२.५. लुंठित

३.३.२.६. उत्क्षिप्त

३.३.२.७. नासिक्य

३.३.२.८. अर्द्धस्वर

३.३.३. घोषण के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

३.३.३.१. घोष

३.३.३.२. अघोष

३.३.४. प्राणत्व के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

३.४. मानस्वर Cardinal Vowels

३.५. श्रुति (Glide)

३.६. हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था

३.६.१. खंड्य स्वनिम

३.६.२. हिन्दी के स्वर स्वानिमों का वितरण

३.६.३. खंड्येतर स्वनिम (अधिखण्डिय स्वनिम)

३.६.३.१. अनुनासिकता

३.६.३.२. दीर्घता

३.६.३.३. बलाघात

३.६.३.४. सुर

३.६.३.५. संगम या संहिता

३.७. हिन्दी भाषा का रूपवैज्ञानिक सन्दर्भ (रूपिम विज्ञान) (Morphonics)

३.७.१. रचना और प्रयोग के आधार रूपिम के दो भेद हैं।

३.७.२. उपरूप या संरूप (Allomorph)

३.८. हिन्दी का शब्द भंड़ार

३.८.१. व्युत्पत्ति के आधार पर हिन्दी भाषा में चार प्रकार के शब्द है

३.८.१.१. तत्सम

३.८.१.२. तद्भव

३.८.१.३. देशी या देशज

३.८.१.४. विदेशी

३.८.२. अर्थ के आधार पर हिन्दी के शब्दों के तीन भेद किये है

३.८.२.१. वाचक या अभिधार्थ

३.८.२.२. लाक्षणिक या लक्ष्यार्थ

३.८.२.३. व्यंजक या व्यंग्यार्थ

३.९. हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना

३.९.१. वाक्य के अंग

३.९.२. वाक्य रचना

३.९.२.१. पदक्रम

३.९.२.२. अन्वय

३.९.२.३. लोप

३.९.२.४. आगम्

३.९.३. वाक्यों के प्रकार

३.९.३.१. अयोगात्मक वाक्य

३.९.३.२. प्रश्लिष्ट योगात्मक वाक्य

३.९.३.३. अश्लिष्ट योगात्मक वाक्य

३.९.३.४. श्लिष्ट योगात्मक वाक्य

३.९.४. व्याकरणिक संरचना की दृष्टि से वाक्य के भेद - सरल वाक्य और मिश्र वाक्य।

३.९.५. भाव या अर्थ की दृष्टि से वाक्य के अनेक भेद हैं।

३.९.६. क्रिया के होने और न होने के आधार पर वाक्य दो प्रकार के होते हैं -

३.१०. हिन्दी भाषा की अर्थपरक संरचना (Semantics)

३.१०.१. अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ

३.१०.१.१. अर्थविस्तार

३.१०.१.२. अर्थ संकोच

३.१०.१.३. अर्थादेश

३.११. द्राविड़ परिवार की विशेषताएँ

३.११.१. काल विभाजन

३.११.१.१. प्राचीन काल (९ ई से १३ ई तक)

३.११.१.२. मध्यकाल (९४ वीं सदी से १८ वी सदी तक)

३.११.१.३. आधुनिक काल (१९ वी, सदी से अब तक)

३.१२. मलयालम भाषा का भाषावैज्ञानिक परिचय

३.१२.१. मलयालम भाषा की ध्वनि व्यवस्था

३.१२.१.१. जिह्वा के उन्नत होनेवाले भाग के आधार पर स्वरों के तीन भेद है।

३.१२.१.२. जीभ के उन्नत होने की या जीभ की ऊचाई की स्थिति के आधार पर स्वरों के चार भेद हैं।

३.१२.१.३. मुँह की स्थिति के अनुसार स्वरों के तीन भेद हैं।

३.१२.१.४. ओष्ठों की स्थिति के अनुसार स्वरों के दो भेद हैं।

३.१२.१.५. संयुक्त स्वर

३.१३. मलयालम के स्वर स्वनिमों का विवरण

३.१४. मानस्वर മാനസ്വരങ്ങൾ (Cardinal vowels)

३.१५. मलयालम व्यंजन स्वानिम व्यवस्था

३.१५.१. तालव्य (താലവ്യം) palate

३.१५.२. मृदु तालव्य (soft palate)

३.१५.३. दन्त्य ദന്ത്യം (Dental)

३.१५.४. वर्त्स വർത്സ്യം (Alveolar)

३.१५.५. मूर्धन्य മൂർദ്ധന്യം (Retroflex)

३.१५.६. ओष्ठ्य ഓഷ്ഠ്യം (Bilabial)

३.१६. वायु प्रवाह के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण:

३.१६.१. स्पर्श സ്പർശങ്ങൾ (Stops)

३.१६.२. संघर्षी ഘർഷം (fricative)

३.१६.३. अनुनासिक അനുനാസികം (Nasal)

३.१६.४. पार्श्विक പാർശ്വികം (lateral)

३.१६.५. प्रवाही പ്രവാഹി (continuant)

३.१६.६. उत्क्षिप्त ഉൽക്ഷിപ്തം (Flap)

३.१७. मलयालम भाषा का व्यंजन स्वनिम

३.१८. मलयालम भाषा का रूप वैज्ञानिक सन्दर्भ

३.१८.१. प्रयोग की दृष्टि से मलयालम के रूपिम मुख्यत: दो प्रकार के होते है

३.१८.२. स्वतन्त्र रूपिम (സ്വതന്ത്രരൂപിമം)

३.१८.३. आश्रित रूपिम (ആശ്രിത രൂപിമം)

३.१८.४. उपरूप या संरूप (Allomorph)

३.१९. मलयालम भाषा के प्रत्यय (മലയാള ഭാഷയിലെ പ്രത്യയങ്ങൾ)

३.१९.१. मलयालम भाषा की सभी प्रत्यय आश्रित रूपिम है। इसके अनुसार मुख्यत: इन्हें तीन प्रकार के भेद हैं।

३.२०. मलयालम भाषा का शब्द वैज्ञानिक सन्दर्भ

३.२०.१. अर्थ के आधार पर मलयालम शब्दों का वर्गीकरण

३.२०.२. अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ

३.२१. मलयालम भाषा की वाक्य संरचना

चौथा अध्याय : **हिन्दी सीखनेवाले मलयालम भाषा-भाषी छात्रों की भाषावैज्ञानिक त्रुटियाँः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।** 118 – 158

४.१. हिन्दी सीखनेवाले मलयालम भाषा-भाषी छात्रों के उच्चारण संबंधी त्रुटियाँ

४.२. हिन्दी और मलयालम स्वर स्वानिमों का व्यतिरेकी विश्लेषण

४.२.१. हिन्दी भाषा के /ए/ऍ/ और मलयालम भाषा के എ, ഏ

४.२.२. हिन्दी भाषा के /ऐ/ और मलयालम भाषा के /ഐ/ स्वन

४.२.३. हिन्दी भाषा के /ओ/ और मलयालम भाषा के /ഒ/ /ഓ/ स्वन

४.२.४ हिन्दी भाषा के /औ/ और मलयालम भाषा के /ഔ/

४.२.५. हिन्दी भाषा के /अ/ स्वन

४.३. व्यजनों के उच्चारण संबन्धी व्यतिरेकी विश्लेषण

४.३.१. /ड/ /ढ/ (ड़) (ढ़) ध्वनियों का व्यतिरेकी विश्लेषण

४.३.२. /न/ (ऩ) ध्वनियों का व्यतिरेकी विश्लेषण

४.४. रूप संबन्धी त्रुटियाँ

४.४.१ स्वतन्त्र रूपिम 'ने' का व्यतिरेकी विश्लेषण

४.४.२ 'ने' रूपिम और 'को' रूपिमों का व्यतिरेकी विश्लेषण

४.४.३ शून्य रूपिम का व्यतिरेकी विश्लेषण

४.४.४ स्वतन्त्र रूपिम में, पर संबन्धी व्यतिरेकी विश्लेषण

४.४.५ संबन्ध कारक का, के, की संबन्धी व्यतिरेकी विश्लेषण

४.५. समस्वनात्मक शब्द संबन्धी त्रृटियों का व्यतिरेकी विश्लेषण

४.६. वाक्य संबन्धी त्रुटियाँ

१.६.१ अन्विति

४.६.२ 'और' संबन्ध बोधक अव्यय संबन्धी व्यतिरेकी विश्लेषण

४.७. अन्तरभाषा संबन्धी त्रुटियाँ

४.७.१ नियमों का अपूर्ण प्रयोग
(Incomplete Application of Rules)

४.७.२ भ्रांतिपूर्ण धारणा

४.७.३ उपनियमों की अज्ञानता (Ignorance of Rule Restrictions)

४.७.३.१ वाक्य में विशेषण संबन्धी त्रुटियों का व्यतिरेकी विश्लेषण

४.७.४ अतिसामान्यीकरण (Over Generalisation)

४.८. अभिसरण और अपसरण संबन्धी त्रुटियाँ

४.८.१. अभिसरण संबन्धी त्रुटियाँ

४.८.२. अपसरण संबन्धी त्रुटियाँ

उपसंहार 159 – 166

परिशिष्ट 167 – 177

संदर्भ ग्रंथ सूची 178 – 187

प्राक्कथन

हिंदी सीखनेवाले मलयालम भाषा-भाषी छात्रों की भाषावैज्ञानिक त्रुटियाँः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (जिला कालिकट के छात्रों के विशेष सन्दर्भ में) शीर्षक प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में मैं ने हिन्दी सीखनेवाले मलयालम भाषा - भाषी छात्रों की भाषावैज्ञानिक त्रुटियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है।

भाषा सार्थक शब्दों की एक सुगठित एवं व्यवस्थित इकाई है, जिसके द्वारा हम अपने मन के भावों एवं विचारों को दूसरों तक पहूँचाते हैं। मानव मुँह से उच्चरित भाषा प्रतीकात्मक है। ये प्रतीक यादृच्छिक होते हैं। क्योंकि प्रतीकों के साथ जो अर्थ जुड़ा हुआ है वह बिलकुल यादृच्छिक अथवा माना हुआ होता है। हर भाषा की अपनी एक व्यवस्था होती है। अभिव्यक्ति की विशिष्टता और उसके उपयोग एंव प्रयोग की दृष्टि से भाषा के रूपों में उसकी संरचना में विविधता का होना स्वाभाविक है। संरचना की दृष्टि से स्वन, रूप, शब्द, पद, वाक्य आदि भाषा के विभिन्न स्तर होते हैं।

भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन को भाषाविज्ञान कहा जाता है। भाषा विज्ञान के अध्ययन की पद्धतियों में तुलनात्मक भाषाविज्ञान प्रमुख हैं। जिसके अन्तर्गत किन्हीं दो अथवा दो से

अधिक भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। आज भाषा विज्ञान के अध्ययन की शाखाओं में व्यतिरेकी भाषा विज्ञान का स्थान महत्वपूर्ण है।

कोई व्यक्ति मातृभाषा से भिन्न अन्य भाषा सीखते समय उस पर मातृभाषा का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। दोनों भाषाओं की समानताएँ भाषा सीखने वाले के लिए कठिनाई नहीं पैदा करती लेकिन दोनों भाषाओं में जो व्यतिरेकी तत्व है वह भाषा सीखने में कठिनाई उत्पन्न करती है। इस प्रकार के प्रभाव के कारण कई त्रुटियाँ शिक्षार्थी में दिखाई देती है। व्यतिरेकी भाषा विज्ञान के अन्तर्गत इन व्यतिरेकी तत्वों का अध्ययन किया जाता है। इसके आधार पर अन्य भाषा शिक्षण में सरलता ला सकते हैं। इसका वैज्ञानिक अध्ययन त्रुटि विश्लेषण के अन्तर्गत किया जाता है। भाषा शिक्षण और अनुवाद के सन्दर्भ में प्रस्तुत विश्लेषण का अपना महत्व है।

''हिन्दी सीखनेवाले मलयालम भाषा भाषी छात्रों की भाषावैज्ञानिक त्रुटियाँः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (जिला कालिकट के छात्रों के विशेष सन्दर्भ में)'' शीर्षक प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में मैं ने हिन्दी सीखनेवाले मलयालम भाषा-भाषी छात्रों में भाषावैज्ञानिक त्रुटियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। अन्त में उपसंहार भी दिया गया है।

शोध प्रबन्ध का पहला अध्याय है ''व्यतिरेकी भाषा विज्ञान और त्रुटि विश्लेषण''। प्रस्तुत अध्याय में भाषा की उत्पत्ति एवं उसके स्वरूप की चर्चा करने के बाद भाषा विज्ञान

की परिभाषा, भाषाविज्ञान के अध्ययन की पद्धतियाँ और भाषाविज्ञान की विविध शाखाओं के बारे में प्रकाश डाला गया है। इसके अलावा व्यतिरेकी भाषाविज्ञान की उत्पत्ति एवं उसके स्वरूप की चर्चा की गयी है। दूसरी भाषा शिक्षण, मातृभाषा का व्याघात आदि पर विचार करने के बाद अन्तरभाषा, उसके स्वरूप, उसकी विशेषताएँ और त्रुटि विश्लेषण के स्वरूप एवं स्रोतों के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी है।

दूसरा अध्याय है ''भाषाओं का आकृतिमूलक एवं पारिवारिक वर्गीकरण''। प्रस्तुत अध्याय में आकृतिमूलक एवं पारिवारिक वर्गीकरण पर विचार करने के बाद संसार की भाषाओं का वर्गीकरण करते हुए भारोपीय परिवार और द्राविड़ परिवार की भाषाओं का परिचय दिया गया है।

तीसरा अध्याय है ''हिन्दी और मलयालम भाषाओं का भाषावैज्ञानिक विश्लेषण''। प्रस्तुत अध्याय में भाषाविज्ञान के सिद्धांतों के आधार पर हिन्दी और मलयालम के स्वर और व्यंजन स्वनिमों, रूपिमों, शब्दों और वाक्यों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही दोनों भाषाओं के अर्थ संबन्धी व्यतिरेकी तत्वों पर भी प्रकाश डाला गया है।

चौथा अध्याय है ''हिन्दी सीखनेवाले मलयालम भाषा भाषी छात्रों की भाषावैज्ञानिक त्रुटियाँ एक विश्लेषणात्मक अध्ययन''। प्रस्तुत अध्याय में हिन्दी सीखनेवाले मलयालस भाषा - भाषी छात्रों के स्वन वैज्ञानिक, रूप वैज्ञानिक, शब्द वैज्ञानिक , वाक्य वैज्ञानिक एंव अर्थ वैज्ञानिक त्रुटियों का विश्लेषण किया गया है। इस अध्याय में चुने हुए छात्रों के बीच किये गये

सर्वेक्षण के आधार पर स्वर, रूप, शब्द, वाक्य एवं अर्थ स्तर पर मलयालम भाषी छात्र-छात्राओं में पायी जानीवाली त्रुटियों का विश्लेषण करने का प्रयास मैं ने किया है। साथ ही साथ अपसरण और अभिसरण संबन्धित त्रुटियाँ और अन्तरभाषा संबन्धी त्रुटियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन भी किया गया है।

अध्ययन का सारांश एवं निष्कर्ष ''उपसंहार'' में दिया गया है। मैं ने अपने शोधकार्य में विषय से संबंधित प्रश्नावली तैयार करके प्रश्नावली एंव सर्वेक्षण पद्धति के माध्यम से शोध कार्य किया है।

प्रस्तुत शोध का वास्तविक श्रेय कालिकट विश्व विद्यालय के प्रोफेसर डॉ - आर सेतुनाथ जी को है। आपका विद्धतापूर्वक निर्देशन और स्नेहयुक्त सहयोग, विषय चयन, संशोधन, समस्यानुकूल परामर्श तथा कुशल मार्गदर्शन से ही मैं यह शोध प्रबन्ध पूर्ण कर सकी हूँ। मैं अपने श्रद्धेय गुरुवर के प्रति सहृदय आभारी हूँ।

वर्तमान अध्यक्ष महोदय डॉं प्रमोद कोवप्रत जी ने जो प्रोत्साहन मुझे दिया है उसके लिए भी उनके प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ। विभाग के अन्य गूरुजनों के प्रति भी मैं अपना आभार व्यक्त करती हूँ। जिन्होने भी मुझे आवश्यक प्रोत्साहन दिया है। विभाग के भूतपूर्व आचार्यों के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ जिनका प्रोत्साहन मुझे बराबर मिलता रहा। जिला कालिकट के विविध स्कूलों से मुझे अपने शोध कार्य संबन्धी सर्वेक्षण करने के लिए सहायता

मिली हैं। स्कूलों के अध्यापक गणों प्रधान अध्यापक - गणों तथा इसमें भागीदारी दिये गये छात्रों से भी मैं आभारी हूँ।

विविध पुस्तकालयों एंव संस्थाओं से मुझे अपने शोध-कार्य में सहायता मिली हैं। उन संस्थाओं के अधिकारियों एंव पुस्तकालय अध्यक्षों के प्रति विशेषकर कालिकट विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग पुस्तकालय एवं विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के कार्यकर्ताओं के प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ।

इन सबके अलावा जिन मित्रों एंव हितैषियों ने मेरी मदद प्रत्यक्ष एंव परोक्ष रूप से की हैं उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूँ।

विनम्रतापूर्वक

सजना - पी

प्रथम अध्याय

व्यतिरेकी भाषाविज्ञान और त्रुटि विश्लेषण

१.१. भाषा

भाषाविचार विनिमय का बेजोड़ साधन है। अभिव्यक्ति की विशिष्टता और उसके उपयोग एवं प्रयोग की दृष्टि से भाषा के रूपों में, उसकी संरचनाओं में विविधता का होना स्वाभाविक है। संरचना की दृष्टि से स्वन, रूप, शब्द, पद वाक्य आदि भाषा के विभिन्न स्तर होते हैं। भाषा शब्द का संबंध 'भाष्' धातु से है। भाषा का शब्दार्थ है बोलना या कहना। भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम अपने विचारों को दूसरों तक पहूँचते हैं। भाषा के संबन्ध में कुछ विद्वानों के विचार निम्नलिखित हैं।

(१) हिंदी के प्रसिद्ध वैयाकरण पं. कामता प्रसाद गुरु ने 'हिंदी व्याकरण' में कहा है ''भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली-भाँती प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार या स्पष्टता समझ सकता है''।[१]

(२) डॉ. श्यामसुन्दरदास के अनुसार मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने केलिए व्यक्त ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं।[२]

---

१ पं. कामता प्रसाद गुरू - हिंदी व्याकरण, पृ. ११

२ डॉ. श्यामसुन्दरदास - भाषा विज्ञान, पृ. २०.

(३) डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा किसी भाषा समाज के लोग आपस में विचार विनिमय करते हैं। [३]

(४) डॉ. बाबुराम सक्सेना के अनुसार ''जिन ध्वनि समूहों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार विनिमय करता है उनको समष्टि रूप से भाषा कहते है।''[४]

(५) डॉ. उदयनारायण तिवारी के अनुसार भाषा मनुष्य के प्रतीकात्मक कार्यों का प्राथमिक एवं बहु विस्तृत रूप है। इसके प्रतीक ध्वनि अवयवों से उत्पन्न ध्वनि अथवा ध्वनि समूहों से बने होते हैं एवं विभिन्न वर्गों तथा आकारों में इस प्रकार सजाये हुए रहते हैं कि उनका संयुक्त एवं डौल आकार बन जाता है।[५]

(६) Language may be defined as an arbitrary system of vocal symbols by means of which human beings as memebrs of a social group and participants in culture interact and communicate (Encyclopedia Britanica).

(७) Language may be defined as the expression of thought by means of speech-sounds (Henry Sweet).

---

[३] डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान, पृ. ५.

[४] डाँ. बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषा विज्ञान, २०

[५] डॉ. उदयनारायण तिवारी - भाषा शास्त्र की रूपरेखा, पृ. ६.

१.१.१. भाषाविज्ञान

भाषा का विशिष्ट ज्ञान भाषाविज्ञान कहलाता है। अर्थात् भाषाविज्ञान के अन्तर्गत भाषा की उत्पत्ति, उसके विकास एवं परिवर्तन का अध्ययन करने के साथ-साथ ध्वनी, रूप, शब्द, वाक्य, अर्थ आदि भाषा की विभिन्न इकाइयों का अध्ययन विश्लेषण किया जाता है।

१.१.२. भाषाविज्ञान स्वरूप एवं परिभाषा

भाषाविज्ञान का संबन्ध विश्व की समस्त भाषाओं से है। भाषा की प्रगति उसके गठन और व्यवहार आदि की वस्तुनिष्ठ परीक्षा करनेवाला विज्ञान है भाषाविज्ञान। डॉ. देवीशंकर द्विवेदी ने भाषा विज्ञान के लिए 'भाषिकी' शब्द का प्रयोग किया है। भाषिकी की परिभाषा उन्होंने इस प्रकार किया है - ''भाषा की प्रगति उसके गठन तथा व्यवहार आदि की वस्तुनिष्ठ परीक्षा करनेवाला विज्ञान का नाम भाषिकी है।[६]

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार - ''भाषाविज्ञान वह विज्ञान है, जिसमें भाषा विशिष्ट कई और सामान्य का समकालिक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक और प्रायोगिक दृष्टि से अध्ययन और तद्विषयक सिद्धान्तों का निर्धारण किया जाता है।''[७]

डॉ. देवीनाथ शर्मा के अनुसार - ''भाषाविज्ञान का सीधा अर्थ है - भाषा का विज्ञान और विज्ञान का अर्थ है विशिष्ट ज्ञान भाषा विज्ञान कहलाएगा''।[८]

---

[६] डॉ. देवीशंकर द्विवेदी, भाषा और भाषिकी, पृ. २४.

[७] डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान पृ. ४२.

[८] डॉ. देविनाथ शर्मा - भाषाविज्ञान, पृ. ११.

आस्कर लुइस चावरिया - The general term 'linguistics' includes in addition to descriptive linguistics historical and cooperative study of language.[९]

संक्षेप में भाषाविज्ञान वह विज्ञान है, जिसमें भाषा के संबंध में विभिन्न प्रकारों व पद्धतियों से अध्ययन किया जाता है।

१.१.३. भाषाविज्ञान के अध्ययन की पाँच पद्दतियाँ मानी जाती है।

१.१.३.१. वर्णनात्मक भाषाविज्ञान (Descriptive Linguistics)

किसी भाषा के निर्दिष्ट काल का अध्ययन विश्लेषण वर्णनात्मक भाषाविज्ञान कहलाता है। इसका दूसरा नाम एककालिक भाषाविज्ञान (Synchronic linguistics) है। जैसे हिन्दी भाषा के आदिकालीन स्वरूप का अध्ययन करें तो वह एककालिक अध्ययन के अन्तर्गत आता है। वर्णनात्मक भाषाविज्ञान भाषा के स्वन (ध्वनि) रूप आदि की संरचना को केन्द्र में रखकर अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार के अध्ययन में अर्थपक्ष पर कम ध्यान दिया जाता है।

१.१.३.२. ऐतिहासिक भाषाविज्ञान (Historical Linguistics)

ऐतिहासिक भाषाविज्ञान में किसी भाषा के विकास का ऐतिहासिक या क्रमिक अध्ययन होता है। इसका दूसरा नाम कालक्रमिक भाषाविज्ञान (Dichronic linguistics) है।

---

[९] आस्कर लुइस चावरिया - थ्दढ़द्धत्द्मद्यत्ड़द्म

१.१.३.३. तुलनात्मक भाषाविज्ञान (Comparative Linguistics)

तुलनात्मक भाषाविज्ञान में दो या अधिक भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन होता है। वर्णनात्मक और ऐतिहासिक दोनों दृष्टियों से तुलना संभव है।

१.१.३.४. व्यतिरेकी भाषाविज्ञान (Contrastive Linguistics)

व्यातिरेकी भाषाविज्ञान का संबन्ध वस्तुतः तुलनात्मक भाषाविज्ञान से है। लेकिन आज यह एक स्वतंत्र शाखा मानी जाती है। भाषाओं की तुलना करते समय दो प्रकार के तत्व हमारे सामने आते हैं एक तो समान तत्व और दूसरा दोनों के व्यतिरेकी तत्व। व्यतिरेकी तत्वों का अध्ययन विश्लेषण-व्यतिरेकी भाषाविज्ञान का विषय है। व्यतिरेकी तत्वों का अध्ययन भाषा विज्ञान में महत्वपूर्ण है।

१.१.३.५. अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान (Applied Linguistics)

विविध प्रकार के यंत्रों के सहारे आजकल भाषा की ध्वनियों का और उसके रूपों और शब्दों का भी अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार के अध्ययन प्रायोगिक-भाषाविज्ञान है। प्रायोगिक भाषाविज्ञान के अन्तर्गत उसका और एक रूप विकसित हुआ है जो अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान कहलाता है।

१.२ भाषाविज्ञान के अंग

भाषाविज्ञान की मुख्यतः पाँच शाखाएँ मानी जाती है।

१. ध्वनिविज्ञान (Phonology)

२. रूपविज्ञान (Morphology)

३. शब्दविज्ञान (Wordology)

४. वाक्य विज्ञान (Syntax)

८. अर्थ विज्ञान (Semantics)

१.२.१ ध्वनिविज्ञान (Phonology)

भाषा की सबसे लघुतम इकाई ध्वनि (स्वन) है। इसका कोई अर्थ नही होता है। ध्वनियों का उच्चारण, उच्चारण अवयव, उच्चरित स्वनों का वर्गीकरण, ध्वनिगुण आदि का अध्ययन-विश्लेषण ध्वनि विज्ञान के अन्तर्गत होता है।

१.२.२ रूपविज्ञान (Morphology)

भाषा की सबसे लघुतम सार्थक इकाई रूप है। रूपविज्ञान में भाषा विशेष के रूपों का अध्ययन होता है। दूसरे शब्दों में रूपविज्ञान भाषा के प्रकृति-प्रत्यय, धातु, उपसर्ग आदि व्याकरणिक रूपों का विश्लेषण करता है।

१.२.३ शब्दविज्ञान (Wordology)

शब्द के अध्ययन को ही शब्द विज्ञान कहा जाता है। शब्द विज्ञान में शब्द की परिभाषा उसके विभिन्न भेदों की चर्चा होती है। शब्द परिवर्तन के कारण तथा दिशाएँ, कोश विज्ञान, व्युत्पत्ति विज्ञान आदि का अध्ययन भी शब्द विज्ञान के अंर्तगत होता है।

१.२.४ वाक्य विज्ञान (Syntax)

वाक्य ही भाषा में सबसे अधिक स्वाभाविक और महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। भाषाविज्ञान की जिस शाखा में इसका अध्ययन होता है, उसे वाक्यविज्ञान कहते हैं। वाक्य विज्ञान में भाषा की सहज इकाई वाक्य का अध्ययन होता है। वाक्य की परिभाषा, वाक्यों के भेद, पदक्रम, पदलोप, पदबंध रचना, पद रचना (Phrase construction) उपवाक्य रचना (Clause Construction) आदि से संबन्धित नियमों का अध्ययन होता है।

१.२.५ अर्थ विज्ञान (Semantics)

अर्थ विज्ञान में भाषा के अर्थतत्व का अध्ययन होता है। अर्थ विज्ञान एककालिक ऐतिहासिक, तुलनात्मक तथा व्यतिरेकी इन चारों प्रकारों का हो सकता है। इसमें अर्थ की संरचना में सहायक संकेत के साधक एवं बाधक तत्वों, उसकी विभिन्न स्थितियों उसके परिवर्तन के कारणों दिशाओं एवं परिणामों का अध्ययन विश्लेषण होता है।

प्रस्तुत अध्ययन दो भाषाओं से यानी हिन्दी और मलयालम से संबन्धित है। अतः व्यतिरेकी भाषा विज्ञान के संदर्भ उसका अध्ययन करने की आवश्यकता है। आगे व्यतिरेकी भाषाविज्ञान के महत्वपूर्ण सैद्धान्तिक पहलुओं पर विचार करने का प्रयास किया जा रहा है।

१.३ व्यतिरेकी भाषाविज्ञान

अन्य भाषा शिक्षण की बढ़ती माँग ने ही व्यतिरेकी भाषाविज्ञान को जन्म दिया है। व्यतिरेकी भाषा विज्ञान का इतिहास बहुत ही अल्प समय का है यानी केवल पच्चीस-तीस वर्ष का। व्यतिरेकी भाषाविज्ञान को एक व्यवस्थित शाखा के रूप में विकसित कराने का श्रेय दो

अमरीकी भाषावैज्ञानिकों को जाता है वे है चार्ल्स सी फ्रीज़ और राबर्ट लेडो। सन् १९५७ में प्रकाशित राबर्ट लेडो की पुस्तक "Linguistics across cultures" व्यतिरेकी भाषाविज्ञान का आधार ग्रन्थ है। इन्हीं दिनों अन्य भाषाओं को सिखाते हुए भाषा वैज्ञानियों ने महसूस किया कि अन्य भाषा सीखने वाला कुछ ऐसी भाषा बोलता या लिखता है जो सीखी जानेवाली भाषा के अनुरूप नहीं होती। इसके दो कारण है या तो उसने उस भाषा के नियमों को गलत तरीके से सीखा है या अभी उसने उस नियमों पर दक्षता हासिल नहीं की है।

व्यतिरेक का अर्थ है विरोध (contrast)। दो या दो से अधिक भाषाओं के सभी स्तरों पर तुलनात्मक अध्ययन द्वारा असमानताओं का अध्ययन संभव है। व्यतिरेकी तत्वों के अध्ययन को व्यतिरेकी भाषाविज्ञान कहते हैं। भाषा में ध्वनियों के योग से शब्द, शब्दों (पद) के निश्चित क्रम से पदबंध और वाक्यों का निर्माण होता है। भाषा के इन सामान्य सिद्धान्तों में जो अंतर भिन्न भाषाओं में पड़ता जाता है उसका ही अध्ययन किया जाता है।

१.३.१ व्यतिरेकी भाषाविज्ञान की मूल स्थापनाएँ

१. अन्य भाषा शिक्षण में सरलता और कठिनाई की व्याख्या सीखने वाले की स्रोत भाषा और लक्ष्य की व्यतिरेकी तुलना में है।

२. अन्य भाषा शिक्षण के लिए सबसे अधिक प्रभावी शिक्षण-सामग्री वह है जो सीखनेवाले की स्रोत भाषा और लक्ष्यभाषा का समानांतर वैज्ञानिक व्यतिरेकी विश्लेषण तथा पाठ्य बिन्दुओं का चयन और अनुस्थरण करके तैयार की जाती है।

३. जो शिक्षक शिक्षार्थी की स्रोतभाषा तथा लक्ष्य भाषा की वैज्ञानिक विधि से तुलना करने की क्षमता रखता है वह शिक्षार्थी की शिक्षण समस्याओं को बेहतर ढंग से समझ सकता है और उनका बेहतर समाधान प्रस्तुत कर सकता है।

१.३.२ व्यतिरेकी विश्लेषण के सामान्य सिद्धान्त

व्यतिरेकी विश्लेषण के लिए दो भाषाएँ ली जाती हैं और उनमें उन कठिनाइयों का पूर्वानुमान लगाने की प्रक्रिया अपनाई जाती है जो किसी एक भाषा भाषी को दूसरी भाषा सीखने में आती हैं। यदि हम एक को स्रोत भाषा और दूसरी को लक्ष्य भाषा का सर्वांगपूर्ण विश्लेषण किया जाए या उनके कुछ अंशों का ही विश्लेषण किया जाए। व्यतिरेकी विश्लेषण का सीधा संबंध शैक्षिक प्रयोजन से होता है। अतः सर्वांगीण विश्लेषण की आवश्यकता नहीं होती है चुने हुए कुछ अंशों का व्यतिरेकी विश्लेषण पर्याप्त रहता है।

व्यतिरेकी भाषा विज्ञान मूलतः वैज्ञानिक होता है जिसका सीधा संबंध भाषायी संरचनाओं से होता है। दूसरी ओर व्यतिरेकी विश्लेषण का लक्ष्य भाषा अधिगम के संदर्भ में तथ्यों को उद्‌घाटित करना है। व्यतिरेकी विश्लेषण की प्रक्रिया के मुख्य तीन चरण हैं - १) वर्णन २) तुलना ३) सीखने का प्रस्तुतीकरण।

प्रथम चरण में भाषा का विवरणात्मक वर्णन किया जाता है। भाषा की विभिन्न इकाइयों - ध्वनि, रूप, शब्द, वाक्य आदि व्याकरणिक इकाइयों का वर्गीकरण किया जाता है। इसमें यह आवश्यक है कि मॉडल एक ही हो। दूसरे चरण में दो भाषाओं के व्यतिरेकी

विश्लेषण में तुलनात्मक तकनिक अपनाई जाती है, अलग-अलग विवरण प्रस्तुत किए जाते हैं। उसके आधार पर देखा जाए कि लक्ष्य भाषा में क्या-क्या विषमताएँ हैं। यदि लक्ष्य भाषा को प्रमुखता दी जाती है तो स्रोत भाषा की असमानताएँ देखा जाएँगी। मलयालम या अंग्रेज़ी या कन्नड़ भाषी को हिन्दी सिखानी हो तो अंग्रेज़ी या मलयालम या कन्नड़ भाषा के सन्दर्भ में हिन्दी का व्यतिरेकी विश्लेषण होना चाहिए।

१.३.३ व्यतिरेकी विश्लेषण और भाषा शिक्षण

व्यतिरेकी विश्लेषण और भाषा शिक्षण का गहरा संबंध है। व्यतिरेकी विश्लेषण का जन्म भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में ही हुआ है। क्योंकि विद्वानों ने इसे भाषा शिक्षण में उपयोगी माना है। किन्तु यहाँ भाषा शिक्षण की व्याख्या अन्य भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में की गई है। द्वितीय भाषा शिक्षण में व्यतिरेकी विश्लेषण काफी उपयोगी सिद्ध होता है।

१.४ दूसरी भाषा शिक्षण

दूसरी भाषा या द्वितीय भाषा उसे कहते हैं जो अपनी मातृभाषा से भिन्न कोई दूसरी भाषा होती है। श्री रवीन्द्रनाथ - वास्तव ने दूसरी भाषा की परिभाषा यों दी है - मातृभाषा से इतर जिस किसी भी भाषा को प्रयोक्ता सीखना चाहता है उसे द्वितीय भाषा की संज्ञा है। [१०]

मातृभाषा और द्वितीय भाषा में काफी अन्तर है। मातृभाषा से तात्पर्य है कि जन्म होने के बाद बच्चा जिस परिवेश में पलता है वहाँ की भाषा से अनुकरण से सीखता है। बच्चा

---

[१०] डॉ. रवीन्द्रनाथ श्री वास्तव, हिन्दी शिक्षण, पृ. ३४.

पहले मातृभाषा का ही अर्जन करता है। अतः उसकी जड़े बच्चे के मस्तिष्क में गहरी होती है। और द्वितीय भाषा मातृभाषा के आधार पर सीखी जाती है। परिणाम यह होता है कि लिखने तथा बोलने की जो दक्षता मातृभाषा में प्राप्त होती है यह द्वितीय भाषा में नहीं होती। क्योंकि मातृभाषा सहज रूप से अर्जित की जाती है जब कि अन्य भाषा एक प्रकार से ऊपर से आरोपित होती है। बच्चा मातृभाषा का अर्जन जिस विविधता एवं सार्थकता के साथ करता है उसी प्रकार की विविधता एवं सार्थकता अन्य भाषा शिक्षण में प्राप्त होती नही।

द्वितीय भाषा शिक्षण में समझना, पढ़ना, लिखना और बोलना चारों कौशलों को सीखना होता है। कई बार कृत्रिम वातावरण में भाषा सीखना पड़ती है और एक नई आदत के रूप में ढालनी पड़ती है। अन्य भाषा शिक्षण में लक्ष्यभाषा की ध्वनियों, शब्दों और व्याकरणिक नियमों का प्रायः शिक्षार्थी को ज्ञान नही होता और इसके साथ ही उसे प्रायः सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भों का भी परिचय नहीं होता। इसलिए व्याघात की स्थिती बनी रहती है। विजय राघव रेड्डी ने अन्य भाषा शिक्षण प्रक्रिया में तीन मुख्य बातों की ओर संकेत किया है। १) शिक्षण और अधिगम २) शिक्षण प्रणाली ३) सिखाई जानेवाली भाषा की सामग्री। ये तीनों अलग-अलग अंग होते हुए भी एक दूसरे से संबंध है कि कभी-कभी इन्हें अलग करना मुश्किल होता है। शिक्षण के साथ साथ अधिगम की प्रक्रिया भी चलती रहती है। शिक्षण और शिक्षण प्रणाली में भी गहरा संबंध है। उपयुक्त भाषा सामग्री और उत्तम शिक्षा प्रणाली के होते हुए भी यदि शिक्षण कार्य सही रूप से नही होता तो भी अधिगम का विकास होना असंभव हैं।

अन्य भाषा शिक्षण के अन्तर्गत व्यतिरेकी विश्लेषण के योगदान पर चर्चा करते हुए पीट कार्डर ने पाठ्यक्रम की योजना इस प्रकार बनाई है-

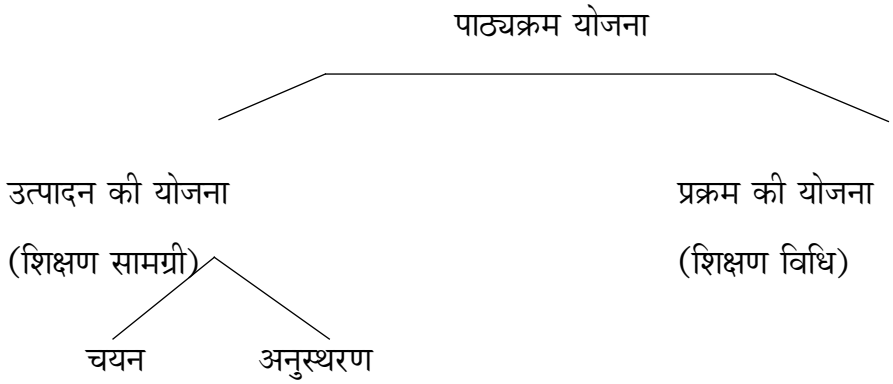

अन्य भाषा शिक्षण के लिए पाठ्यक्रम योजना तैयार करते समय सबसे पहले शिक्षण सामग्री निर्माण की योजना बनाई जाती है। इस योजना के अन्तर्गत विषय के दो भाषाओं की समान संरचनाओं पर अधिक ध्यान न देकर असमान संरचनाओं का चयन किया जाता है। इसमें दो भाषाओं की समान संरचनाओं पर अधिक ध्यान न देकर असमान संरचनाओं पर अधिक ध्यान दिया जाता है। इस शिक्षण सामग्री का चयन करते समय अनुस्थरण को भी ध्यान में रखना होता है कि किन-किन संरचनाओं को किस-किस क्रम के अनुसार सिखाया जाए। असमान संरचनाओं का अनुस्थरण सरल से जटिल संरचनाओं की ओर होता है जिससे शिक्षार्थी को दोनों संरचनाओं में तुलना करने में आसानी होती है और व्याघात की स्थिति कम होती है।

१.४.२ व्यतिरेकी विश्लेषण से प्राप्त स्थितियाँ और कठिनाइयाँ

व्याघात के स्थलों को जानने के लिए भाषा विज्ञान ने जो साधन दिया है, उसी का नाम है, व्यतिरेकी विश्लेषण। दो भाषाओं को व्यतिरेकी विश्लेषण करने पर जो स्थितियाँ सामने आती है उनमें से मुख्य बातें ये है कि व्यतिरेकी विश्लेषण मातृभाषा और अन्य भाषा में विद्यमान भेदों का अध्ययन प्रस्तुत करता है। शिक्षण सामग्री के चयन में अन्य भाषा के उन स्थलों पर विशेष ध्यान रखा जाता है जहाँ मातृभाषा के नियम व्याघात पैदा करते हैं। सीखनेवाले को अन्य भाषा के सभी नियम सिखाये नहीं जाते बल्कि उन नियमों को सिखाया जाता है जो किसी न किसी रूप में मातृभाषा के नियमों के विपरीत होते हैं। व्यतिरेकी विश्लेषण का मुख्य उद्देश्य ऐसे ही नियमों का पता लगाना और वर्णन करना होता है।

मातृभाषा और अन्य भाषा के व्यतिरेकी विश्लेषण से मोटे रूप से तीन प्रकार की स्थितियाँ सामने आती है -

१. मातृभाषा के नियम के समान नियम अन्य भाषा में विद्यमान रहना। यह सीखनेवाले के लिए सरल स्थिति मानी जाती है।

२. मातृभाषा के नियम के समान नियम का अन्य भाषा में अभाव। इस स्थिति में सीखनेवाले को मातृभाषा के नियम को अन्यभाषा के व्यवहार में छोड़ना पड़ता है। यह कठिन स्थिति होती है।

३. अन्य भाषा के नियम के समान नियम का मातृभाषा में अभाव। इस स्थिति में सीखनेवाले को नया नियम सीखना पड़ता है। यह स्थिति भी कठिन होती है।

मातृभाषा और अन्य भाषा में समान नियमों के होने पर भी एक दूसरे प्रकार की कठिनाई सीखनेवाले के सामने आती है। समान नियमों में भी चुनाव की दृष्टि से भेद हो सकता है। इसमें दो स्थितियाँ हो सकता है।

(क) जहाँ मातृभाषा के नियम में चुनाव अधिक हो और अन्य भाषा के नियम में कम, इस स्थिति को अभिसरण कहा जाता है।

जैसे : मलयालम में अन्य पुरुष सर्वनाम के लिए प्रयुक्त होनेवाले शब्द ഇവൻ, ഇവൾ, ഇത്, ഈ के स्थान पर हिन्दी में केवल एक शब्द 'यह' प्रयुक्त होता है।

(ख) जहाँ मातृभाषा के नियम में चुनाव कम हो और अन्य भाषा के नियम में अधिक। इस स्थिति को उपसरण कहते है।

जैसे : यह (हिन्दी मातृभाषा के रूप में) के स्थान पर मलयालम में ഇവൻ, ഇവൾ, ഇത്, ഈ का प्रयोग होता है।

मलयालम भाषा में / ए / और / ഏ/ दो अलग स्वनिम है। लेकिन हिन्दी में /ഏ/ स्वनिम का अभाव है। इस स्थिति में जब दक्षिण के छात्र हिन्दी सीखते है उस समय उन्हें अपनी भाषा के नियम को छोड़ना पड़ता है और उन्हें सर्वत्र /ए/ का ही प्रयोग करना पड़ता

है। दक्षिण की भाषाओं में संज्ञा पदबंध के स्तर पर संज्ञा के लिंग और वचन के अनुसार उसके विशेषक नहीं बदलते लेकिन अन्य भाषा हिन्दी में कुछ स्थितियों में ये बदलते हैं। अर्थात् मातृभाषा में नियम का अभाव है तो अन्य भाषा में नियम है।

जैसेः	हिन्दी	मलयालम
	चेहरा (ह्रस्व)	चेहरा (दीर्घ)
	मेहमान (ह्रस्व)	मेहमान (दीर्घ)

दूसरी भाषा शिक्षण के संदर्भ में अन्तरभाषा की चर्चा अनिवार्य मानी जाती है।

१.५ अंतरभाषा (Interlanguage)

जब भी कोई व्यक्ति कोई अन्य भाषा सीखता है, तो सीखने की प्रक्रिया के दौरान उसके मन में सीखी जानेवाली भाषा का एक रूप बन जाता है। यह रूप न तो पूर्णतः उसकी अपनी मातृभाषा का होता है, जो अपने नियमों को प्रक्षेपित कर व्याघात उपस्थित करती है, न पूर्णतः लक्ष्यभाषा का बल्कि दोनों का बीच का होता है। ज्यों-ज्यों वह लभ्य भाषा के नियमों तथा अपवादों को हृदयंगम करता जाता है उसकी यह 'अंतरभाषा' बदलती जाती है। अर्थात् उसका नया-नया रूप उसके मन में बैठता जाता है, जिसमें रोज़ मातृभाषा का प्रभाव कम होता जाता है। इसलिए इसे संक्रातिभाषा भी (Transitional Language) भी कहा गया है। यह ध्यान देने की बात है कि प्रारंभ में यह अंतरभाषा अपने स्वरूप में मातृभाषा से बहुत अधिक प्रभावित-तथा विभिन्न कारणों से होने वाली भूलों और त्रुटियों से युक्त होती है। लेकिन

धीरे-धीरे ये कम होती जाती हैं तथा अन्तरभाषा लक्ष्य भाषा के समीप पहूँचती जाती है। अन्त में जब वह व्यक्ति लक्ष्य भाषा को पूरी तरह सीख लेता है, मातृभाषा का प्रभाव तथा अन्य भूलें और त्रुटियाँ पूर्ण समाप्त हो जाती है तो अंतरभाषा लक्ष्य भाषा में विलीन हो जाती है।

१.५.१ अंतर भाषा की मुख्य विशेषताएँ

१. अन्तरभाषा मातृभाषा से इतर कोई भाषा सीखनेवाले के अंतस में स्थित एक भाषा होती है।

२. अन्तरभाषा की अपनी व्यवस्था होती है। जो मातृभाषा और लक्ष्य भाषा की व्यवस्थाओं के मिश्रण तथा सीखनेवाले के मन में घर की हुई अन्य त्रुटियों और भूलों से युक्त होती है।

३. सामाजिक दृष्टि से यह यथार्थ भाषा नही होती। किन्तु जिसके मन में यह स्थिति होती है उसकी वैयक्तिक दृष्टि से या उसके लिए यह यथार्थ भाषा होती है।

४. यह भाषा परिवर्तनशील होती है। जैसे-जैसे व्यक्ति लक्ष्य भाषा को हृदयंगम करता जाते है, उनके मन में स्थित अंतर भाषा परिवर्तित होती जाती है।

५. यह परिवर्तन मातृभाषा एवं अन्य-भाषा का प्रभाव के नियमों के ठीक रूप में अधिकाधिक ग्रहण किए जाते रहने की दिशा में होता है।

६. अन्तरभाषा का जन्म लक्ष्यभाषा सीखने की शुरुआत के साथ ही हो जाता है और यह भाषा-परिवर्तित होती हुई, भाषा सीखनेवाले के अंतस् में स्थित रहती है।

७. भाषा सीखनेवाला जो भी भूलें और त्रुटियाँ करता है, वे लक्ष्य भाषा की दृष्टि से वे अशुद्दि नही होती। वे इसकी व्यवस्था और इसके नियमों के अनुसार शुद्द-प्रयोग संज्ञा की अधिकारिणी होती है।

८. एक मातृभाषा वाले यदि दो या अधिक कोई व्यक्ति एक लक्ष्य भाषा सीखें तो उन सभी के अंतस की अन्तरभाषा एक समय में पूर्णतः एक तो नही होती। किन्तु मोटे रूप से हर एक की अंतरभाषा लगभग एक ही प्रकार के विकास से गुज़रती है।

सेंलिकर ने अन्तरभाषा की प्राक्कलपना द्वीतीय भाषा अधिगम के सिद्धान्त-प्रतिपादन - हेतु आँकड़ों को व्यवस्थित करने में सहायक उपादान के रूप में की है। अंतरभाषिक पहचान देशीय भाषा, लक्ष्य भाषा, प्रस्तरीकरण वाक्यगत सूत्र और वर्गीकरण स्वनिम को सेलिंकर ने अन्य सहायक सैद्धान्तिक उपदान माना है। ये सभी उपदान सेलिंकर के अनुसार प्रच्छन्न मनोवैज्ञानिक संरचना के अंग होते है जो मस्तिष्क में पूर्व विरचित व्यवस्था होती है और एक प्रौढ़ द्वारा अधिगम हेतु प्रस्तुत द्वितीय भाषा में भाव (अर्थ) प्रस्तुत करने की दिशा में क्रियान्वित होती है।

अंतरभाषिक पहचान को सेलिंकर ने 'वाइनरिख' की मान्यता से जोड़ा है, जिसके अनुसार एक द्विभाषी भाषा संपर्क की स्थिति में दो भाषाओं के स्वनिम, व्याकरणिक संबंध और अर्थगत विशेषताओं की परस्पर पहचान की चेष्टा करता है। देशीय भाषा वक्ता द्वारा अधिकृत मातृ या प्रथम भाषा है, लक्षित भाषा वह द्वितीय भाषा है, जिसके अधिगम के लिए वह प्रस्तुत है। सेंलिकर द्वितीय भाषा - अधिगम कर्ता में ''एक भिन्न भाषिक पद्धति के अस्तित्व'' की प्राक्कल्पना को अंतरभाषा की संज्ञा देते हैं।[११]

द्वितीय भाषा की अधिगमकर्ता अर्थ विशेष को व्यक्त करने के लिए जो कुछ उच्चरित करता है वह उस लक्षित भाषा के देशीय वक्ता द्वारा उसी अर्थ को व्यक्त करने के लिए उच्चरित वाक् के समान नही होता। द्वितीय भाषा अधिगम के पाँच केन्द्रीय प्रक्रियाएँ इस प्रकार है।

१) भाषा अन्तरण

२) प्रशिक्षण का अन्तरण

३) द्वितीय भाषा अधिगम की युक्तियाँ

४) द्वितीय भाषा संपर्क की युक्तियाँ

एक व्यक्ति जहाँ एक भाषा की पृष्ठभूमि में दूसरी भाषा सीख रहा हो और जहाँ एक भाषी द्विभाषी बन रहा हो वहाँ व्यक्ति में होने वाले भाषा विकास के अध्ययन को पूर्ण रूप से

---

[११] त्रुटियाँ विश्लेषण और सुधार - राजेश कुमार, पृ. २८.

अन्तर भाषागत कालक्रमिक अध्ययन कह सकते है। अनुवाद प्रक्रिया में भी जहाँ एक भाषा का पाठ दूसरी भाषा में प्रस्तुत किया जा रहा हो, वहाँ भी द्विभाषी के मस्तिष्क के अन्तर्गत अन्तर भाषा की प्रक्रिया काम आती है। अंतर भाषा के अध्ययन से सीखनेवालों की त्रुटियों का पता लगाया जा सकता है और उन त्रुटियों को दूर करने के लिए नयी शिक्षण-सामग्री का निर्माण किया जा सकता है।

१.६ त्रुटि विश्लेषणः स्वरूप और स्रोत

स्वरूप

'त्रुटि' का सामान्य अर्थ, कम, अपूर्णता, भूल, चूक आदि है। लेकिन भाषा शिक्षण में 'त्रुटि' का प्रयोग भाषा के बोलने या लिखने में होनेवाली ऐसी अशुद्धियाँ है, जो व्यवस्था बद्ध और नियमित होते हैं। दूसरे शब्दों में इस व्यवस्था बद्ध अशुद्धियाँ, दूसरी भाषा या बोली के व्याघात, मातृभाषा का व्याघात नियमों और उपनियमों का अज्ञान, अतिसामान्यकरण या अपवादों की जानकारी न होने तथा अन्य अनेक प्रकार की गलतियों के कारण बोलने तथा लिखने में आती है।[१२]

व्यतिरेकी पद्धति अन्य भाषा शिाक्षण के सन्दर्भ में द्विभाषियों के भाषा व्यवहार में व्याघात की संकलपना लेकर चलती है। व्याघात की संकल्पना इस मान्यता पर आधारित है कि कोई भी दो भाषाएँ पूर्णतया समान नही होती। उनमें भाषा के हर स्तर पर कुछ न कुछ भिन्नता रहती हैं। जो भाषा मातृभाषा के रूप में व्यक्ति सीखता है। उसके विभिन्न पक्ष नियम

---

[१२] हिन्दी भाषा शिक्षण - भोलानार्थ तिवारी, कलाश चन्द्रभाव्य पुः १२८

एवं प्रयोग स्वभावतः व्यक्ति की आचरण में जम जाते हैं। दूसरी भाषा सीखने के समय यह व्यक्ति स्वभावतः मातृभाषा के इन नियमों को दूसरो भाषा के नियमों पर प्रक्षेपित करता है। वह सीखी जानेवाली भाषा के सही नियमों को अगर बौद्धिक स्तर पर जान भी ले तब भी अपने भाषा प्रयोग एंव भाषा व्यवहार में पहले से मन पर बैठी मातृभाषा के नियमों की नई भाषा पर लागू करने को और प्रवत्त हो उठता है। इस प्रवृत्ति को विद्वानों ने व्याघात की संज्ञा दी है।

व्याघात की प्रक्रिया के कारण भाषा - सीखने में जो कठिनाईयों आती है उन्हें जानने और समझने को लिए व्यतिरेकी विश्लेषण को बल मिला। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की तुलना के आधार पर वह उनके बीच पाई जानेवाली समानता और असमानता के क्षेत्रों का निर्धारण करता है। वह यह मानता है कि दो भाषाओं के बीच पाई जाने वाली-असमानता ही व्याघात का कारण है। इसलिए लक्ष्य भाषा के सीखने में आनेवाली कठिनाईयों का अगर दूर करना है तब स्रोत भाषा और लक्ष्यभाषा के व्यवस्था वैषम्य का पता लगना अनिवार्य बन जाता है।

त्रुटियों को तीन रूपों में देखा जा सकता हैः-

१.६.१ (क) भूल (ख) अशुद्धि (ग) त्रुटि

(क) भूलः यह त्रुटि व्याकरण के कारण नही होती है। बल्कि भाषा प्रयोग करते हुए असावधानी या जुवान फिसल जाने के कारण होती हैं। इसलिए इसे 'भूल' कहना उचित होगा।

(ख) अशुद्धि

इसका संबन्ध लक्ष्यभाषा की नियमों की सही जानकारी न होने के कारण से है। उदाहरण के लिए - 'नौकर आया है और चाचा आया है''। - इस वाक्य में आदरार्थक प्रयोग होना चाहिए इस पर ध्यान नहीं दिया गया। यह अशुद्धि अन्तरभाषा को अपनी व्यवस्था के साथ होती है। अतः यह शिक्षार्थी की वास्तविक त्रुटि होती है। अतः यह त्रुटि भाषा आधिगम प्रक्रिया की स्वाभाविक परिणाम है। अन्तरभाषा शिक्षण में पायी जानवाली कई त्रुटियों की प्रकृति मातृभाषा सीखते समय आनेवाली त्रुटियों के समान होती है।

१.६.२ अंतरभाषा संदर्भित त्रुटियाँ

इस वर्ग में वे अशुद्ध प्रयोग आता है जिनका मूलकारण 'अंतरभाषा' की अपनी व्यवस्था के साथ होता है। ये अशुद्ध - प्रयोग एक निश्चित व्यवस्था को उद्धारित करते हैं, अतः इन्हें व्यवस्था संबन्ध त्रुटियाँ भी कहा जाता है। ये ही शिक्षार्थी को वास्तविक त्रुटियाँ है। इन त्रुटियों की प्रकृति गयात्मक होती हैं। क्योंकि इनका संबन्ध 'संक्रान्तिपरक भाषा' के साथ होता है। ये ही भाषा अधिगम प्रक्रिया के स्वाभाविक परिणाम कहे जा सकते हैं।

अन्तरभाषा संदर्भित त्रुटियों के विश्लेषण का एक संदर्भ उनके स्रोतों का विवरण और वर्गीकरण का भी होता है। व्यतिरेकी विश्लेषण का सिंद्धान्त यह प्रतिपादित करता है कि ऐसी त्रुटियों का मूल कारण मातृभाषा के प्रयोगों से उत्पन्न जड़ता होती है। जो गुरुत्वाकर्षण के समान लक्ष्य भाषा के नियमों पर हावी होकर उनको अपने नियमों में परिवर्तित कर लेती

है। व्याघात की यह प्रक्रिया ही उनकी दृष्टि में सभी वास्तविक त्रुटियों का कारण है। पर यह भी देखा-गया है कि लक्ष्य भाषा की संरचना स्वंय में त्रुटियों का कारण बन जाती है। और अन्य भाषा सीखने के समय पाई जाने वाली कई त्रुटियों का प्रकृति मातृभाषा सीखने के समय प्रयोग में आनेवाली त्रुटियों के समान होती है। उनके अनुसार ऐसी त्रुटियों के निम्नलिखित स्रोत हैं।

१.६.३ अतिसामान्यीकरण

इस प्रक्रिया का संबन्ध लक्ष्य भाषा की तथ्य सामग्री और भाषा व्यवस्था के आधार भूत नियमों का सादृश्य विधान के आधार पर प्रयोग प्रसार है। शिक्षार्थी भाषाई तथ्यों के आधार पर नियमों का सामान्यीकरण करता है। पर जब यह प्रवृत्ति अति व्याप्ति दोष तक पहूँच जाती है त्रुटियाँ अपने आप भाषा प्रयोग में देखने को मिलने लगती है।

उदाहरण के लिए:

वह पढ़ता है - उसने पढ़ा

वह खाता है - उसने खाया

वह देखता है - उसने देखा।

वह रोता है - 'उसने रोया' (गलत प्रयोग)

वह बोलता है - 'उसने बोला' (गलत प्रयोग)

अतिसामान्यीकरण की प्रक्रिया भाषा को सरलीकृत करने की प्रवृत्ति से प्रेरित होती है।

१.६.४ उपनियमों की अज्ञानता

हर भाषा में कुछ सामान्य नियम होते हैं, और कुछ उन नियमों के विशेषीकृत प्रयोग, जिनका संबंध उपव्यवस्था या उपनियमों से रहता है। इन उपनियमों की जानकारी के अभाव में भी शिक्षार्थी त्रुटियाँ करता है।

उदाहरणः -

आप- जाइए

आप - खाइए

आप - 'पीइए' (पीजिए)

आप - 'करिए' (कीजिए)

१.६.५ नियमों का अपूर्ण प्रयोग

भाषा में नियम गुच्छ रूप में आते हैं, अतः जब एक नियम को लागू किया जाता है तो स्वभावतः उस पर आधारित दूसरे - नियम को भी लागू करना पड़ता है। पर भाषा अधिगम प्रक्रिया क्रमिक - होती है। और इसकी संभावना हमेशा बनी रहती है कि शिक्षार्थी एक नियम को तो लागू करे, पर दूसरे को न लागू करे।

उदाहरणः- राम ने रावण को मारा। (सही प्रयोग)

सीता ने नीलू को मारी (गलत प्रयोग)

१.६.६ भ्रान्तिपूर्ण धारणा

भाषा सीखने के समय कभी-कभी कुछ धारणाएँ, भ्रान्ति रूप से मन में बैठ जाती हैं। जो त्रुटियों का कारण बनती है। हिन्दी की दूसरी भाषा के रूप में सीखनेवाली विद्यार्थी को जब यह बताया जाता है कि हिन्दी में दो वाच्य होते हैं। कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार वचन-लिंग प्रत्यय लेती है। तब कर्मवाच्य के वाक्यों में प्रायः जो त्रुटियाँ देखने को मिलती है उसका कारण जटिभूत भ्रान्ति ही होता है।

उदा : लडके ने रोटी खा ली,

'लड़के ने रोटी को खा ली'

तुमने किताब पढ़ी

'तुमने किताब को पढ़ी'

त्रुटियों के वर्गीकरण के और भी आधार है। १) भाषा का संरचनात्मक संदर्भ २) भाषा का बोधात्मक संदर्भ ३) भाषा का सामाजिक संदर्भ। इन तीनों संदर्भ से संबद्ध त्रुटियों भी तीन निश्चित प्रकार होते हैं।

१) भाषा का संरचनात्मक संदर्भः

भाषा के संरचनात्मक संदर्भ के भी दो उपवर्ग हैं

(क) संरचना का रूपात्मक प्रकार्यात्मिक सन्दर्भ। यह भेद कारक चिह्न और कारक या प्रयोग और वाच्य के अंतर को स्पष्ट करता है।

ख) भाषा का बोधात्मक संदर्भ और त्रुटियाँ इस वर्ग की त्रुटियाँ मात्र व्याकरण के कारण नहीं होतीं। व्याकरण के दृष्टि से यह वाक्य शुद्ध हो सकते हैं फिर भी वाक्य अर्थ के धरातल पर अशुद्ध होता है।

ग) भाषा का सामाजिक संन्दर्भ और त्रुटियाँ

ऐसी त्रुटियों का सन्दर्भ उस सामाजिक बोध से रहता है जो भाषा की रचना से प्रभावित करते हैं। सामाजिक अर्थ का संबन्ध चयन और विकल्प के साथ रहता है। विकल्प के रूप में उपलब्ध दो में किसी एक का चयन करते समय जो त्रुटियाँ होती है, इनको संबन्ध भाषाई सामाज के आचरण उचित व्यवहार की जानकारी का अभाव हो सकता है। त्रुटियों के इन कारणों पर ध्यान देने से स्पष्ट हो जाता है कि भाषा-शिक्षण को अगर प्रभावी रूप में उपादेय बनाना हैं तब हमें शिक्षार्थी को क्रेन्द्र में रखकर उसको भाषा अधिगम प्रक्रिया के सन्दर्भ में भाषा शिक्षा पद्धति को स्वाभाविक और यथार्थपरक बनाना होगा।

१.७ मातृभाषा का व्याघात

अन्य भाषा सीखने से पहले सीखने वाला मातृभाषा पर अधिकार प्राप्त कर चुका होता है। पहले मातृभाषा का ही अर्जन करता है अतः उसके जड़े बच्चे की मस्तिष्क में गहरी होता है। मातृभाषा का प्रभाव इस प्रकार उस पर गहरा रहता है। जिसके बच्चा द्वितीय भाषा सीखने

समय मातृभाषा में सोचता है, विचार करता है और अनुवाद के ज़रिए द्वितीय भाषा में रूपान्तरित करने का प्रयास करता है। इस प्रक्रिया में मातृभाषा का प्रभाव या व्याघात आ जाता है। इसके अलावा मातृभाषा की तरह अन्य भाषा अनौपचारिक संदर्भ में प्रायः सीखी नहीं जाती। अन्यभाषा अधिक से अधिक अपने शुद्ध रूप में और व्यवस्थित रूप से सीखनेवाले के सामने प्रस्तुत की जाती है। इसके बावजूद सीखनेवाला अन्य भाषा के प्रयोग में त्रुटियाँ करता है। अन्य भाषा और मातृभाषा की संरचनाओं में हर एक स्तर पर कुछ न कुछ अंतर रहता है। यह अंतर अन्य भाषा के प्रयोग में व्याघात पैदा करता है। इस व्याघात से त्रुटियाँ होती है। अन्य भाषा के अधिगम में होनेवाली इन्ही शुद्ध भाषाई कठिनाईयों के स्थलों को ही व्यघात के बिन्दू कह सकते हैं।

१.७.१ मातृभाषा में होनेवाली त्रुटियाँ

मातृभाषा में होनोवाली त्रुटियाँ मुख्यतः तीन प्रकार की होती है।

१.७.२ चूक

ये वे अशुद्धियाँ होती हैं जिनको शुद्धि करने वाले अशुद्धी रूप में जानता है। तथा बोलने या लिखने के बाद प्रायः उसे पता चल जाता है कि उसने अशुद्धि की है। इसे अग्रेज़ी में जबान की चूक (slip of tongue) कहता है।[१३] असवधानी, घबराहट, जल्दी, उत्तेजना, अनिश्चय, परेशानी तथा थकावट आदि के कारण बोलने या लिखने में चूक होती है।

---

[१३] डॉ. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी भाषा शिक्षण, पृ. ४८

कोरडर ने अधिगम कर्ता त्रुटियों की अर्थवत्ता पर महत्पूर्ण चर्चा प्रस्तुत की है। शिशु द्वारा मातृभाषा-अधिगम की प्रक्रिया की चर्चा करते हुए उन्होंने लिखा है कि ''मातृभाषा-अधिगम कर्ता बालक से कोई भी यह उपेक्षा नहीं रखता कि वह आरंभिक स्थिति से ही उन्हीं रूपों का उत्पादन करे, जो प्रौढ़ों के अनुसार शुद्ध या अविचलित हो। हम उसके अशुद्ध वाक्यों को इस बात का प्रमाण मानते हैं कि वह भाषा संप्राति की प्रक्रिया में है और भाषा विकास के किसी बिन्दु पर उसके भाषा ज्ञान का विवरण प्रस्तुत करने वाले के लिए महत्वपूर्ण प्रमाण वस्तुतः त्रुटियाँ ही जुटाती हैं।''[१४]

भाषा अधिगम प्रक्रिया के विश्लेषण में अधिगमकर्ता की भाषा मूल में रहती है। और उसकी भाषा - विशेषण की द्वारा प्रस्तुत अंतरालों की व्याख्या करते हुए हम अधिगम कर्ता के लिए बेहतर से बेहतर अधिगम वातावरण की रचना में प्रवृत्त हो सकते हैं। 'चूक' मुख्यतः उच्चारण की दृष्टि से होती है किन्तु शब्दों, रूपों या वाक्य आदि की दृष्टि से भी हो जाती है। जैसे - एक के स्थान पर दूसरे का प्रयोग जैसे - हिन्दी में 'चोर आया है का ज़ोर आया है'। 'प्रकट' को 'प्रगट' नायक को 'नायग' कभी स्थानांतरण से गलती होती है, 'मैं कल भटकता रहा' के लिए मैं भटकता कल रहा। लोप से- 'आतोतायी', के लिए 'आतायी' 'कविता' केलिए 'कव्ता' आदि। उसी तरह आगम से किसी अनपेक्षित ध्वनि या शब्द का व्यर्थ में प्रयोग कर जाना। उस प्रकार पुनरुक्ति दोष, (कृपया आने की कृपा करे) और वाक्य की अटपटी रचना से भी अनेक प्रकार की चूक प्रायः हो जाती है।

---

[१४] राजोश कुमा, त्रुटियाँ - विश्लेषण और सुधार, पृ ३४.

१.७.३ भूल

भूल ऐसी अशुद्धि है जिसका पता भूल करनेवाले को नहीं होता, अतः वह बिना बनाए उसे ठीक नहीं कर सकता। मातृभाषा शिक्षण में शिक्षार्थी का ध्यान इस वर्ग की अशुद्धियों की और दिलाना चाहिए, ताकि वह उनसे बचकर शुद्ध भाषा बोल और लिख सके। भूलों कई प्रकार की हो सकती हैं।

१.७.४ अज्ञानजनित

उच्चारण, लेखन, शब्द - रचना तथा रूप रचना आदि की होती है। उदाहरण के जबरदस्त - जबर जस्त, व्यापार - ब्यापार, कवित्री - कवयित्रि, अत्यधिक, अत्याधिक, तुझको - तेरे को। उसी तरह प्रयुक्ति में शब्दों का प्रयोग प्रयुक्ति के अनुसार (Register) बदलता है।

सामान्य भाषा : पानी, जल

नमक, लवण (रसायन शास्त्र)

अतिशोधन (Hyper correction) जनित इसमें अनेक प्रकार की भूल हो जाती है।

शाप - श्राप

पर्णा - प्रण

फ़ौज - फौस

प्रसाद - प्रासाद आदि

१.७.५ अनिश्चितजनित

कुछ प्रयोग ऐसे होते हैं कि लोग निश्चित रूप से नहीं जानते कि कौन सा शुद्ध है, और कौन-सा अशुद्ध, अतः दोनों का ही प्रयोग करते हैं।

मुझको - मेरे

हमको - हमारे

तुमको - तुम्हारे

उपर्युक्त - उपरोक्त

दूसरा अध्याय

भाषाओं का आकृतिमूलक एवं पारिवारिक वर्गीकरण

२.१. संसार की भाषाएँ और उनका वर्गीकरण

भाषा संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। हम अपनी बात दूसरों तक पहूँचाने और दूसरों की बात हम को समझने के लिए भाषा का सहारा लेते हैं। कभी हम स्फुट शब्दों या वाक्यों द्वारा भावाभिव्यक्ती करते तो कभी संकेतों द्वारा हमारा काम हो जाता है। अपने मन के बातों और विचारों की अभिव्यक्ति मनुष्य भाषा प्रतीकों के माध्यम से करते हैं। ये भाषा प्रतीक (वाक्प्रतीक) यादृच्छिक होते हैं। संसार में जितनी भाषाएँ बोली जाती है उनकी निश्चित संख्या ज्ञात नहीं है। मानव जीवन में जो भी विकास आज देखने को मिलता है उसका श्रेय भाषा को ही है। हम अपना समस्त आर्जित ज्ञान आनेवाली पीढ़ियों को लिखित और मौखिक रूप में भाषा के माध्यम से ही देते हैं। भाषा के माध्यम से ज्ञान, विज्ञान, कला, संस्कृति आदि सभी का विकास होता है। भाषाविहीन समाज कभी प्रगति नहीं कर सकता। भाषा मानव जीवन में नही ताकत का काम करती है।

वर्गीकरण से किसी वस्तु के अध्ययन में सरलता आता है और उसे अच्छी तरह समझने में सहायता मिलती है। वर्गीकरण की यही व्यावहारिक उपयोगिता है। संसार की

भाषाओं का वर्गीकरण कई आधार हो सकते हैं। किन्तु भाषाविज्ञान की दृष्टि से दो ही आधार माने गये हैं। वे है आकृतिमूलक वर्गीकरण और पारिवारिक वर्गीकरण।

संसार की भाषाओं का वर्गीकरण कई आधारों पर हो सकता है। जैसे महाद्वीप के आधार पर (एश्ययी भाषायें, यूरोपीय भाषायें, आफ्रिकन भाषायें), देश के आधार पर (चीनी भाषाएँ, भारतीय भाषाएँ), धर्म के आधार पर (ईसाई भाषाएँ, मुसलमानी भाषाएँ, हिन्दू भाषाएँ), काल के आधार पर (प्रागैतिहासिक भाषाएँ, मध्ययुगीन भाषाएँ, आधुनिक भाषाएँ), भाषाओं की आकृति के आधार पर (द्राविड़ परिवार, एकाक्षर परिवार), प्रभाव के आधार पर (संस्कृत प्रभावित भाषाएँ और फारसी प्रभावित भाषाएँ) आदि। इनमें आकृतिमूलक और परिवारिक वर्गीकरण प्रमुख हैं।

किसी वाक्य का अर्थ हम दो तत्वों के माध्यम से समझ सकते हैं - एक है अर्थ तत्व और दूसरा संबन्ध तत्व। संबन्ध तत्व या पद रचना का संबन्ध व्याकरण या भाषा की रूप रचना से है। इसलिए इस पर आधारित वर्गीकरण को आकृतिमूलक या रूपात्मक वर्गीकरण कहते हैं। पारिवारिक में संबन्ध तत्व की समानता पर भी ध्यान देते हैं साथ ही भाषा के शब्द भणडार की समानता पर भी।

२.२. आकृतिमूलक वर्गीकरण (Morphological or Synthactical Classification)

आकृतिमूलक वर्गीकरण का आधार संबंध तत्व है। इस वर्गीकरण में दो बातों पर ध्यान देना है। (१) वाक्य में शब्दें का पारस्परिक संबध जैसे - 'मैं ने भोजन किया' वाक्य में 'मैं' 'भोजन', 'कर' आदि अर्थतत्वों की आपसी संबध (२) शब्द किस प्रकार धातु, प्रत्यय या

उपसर्ग लगाकर बनाये जाते हैं। जैसे मैं, भोजन, कर आदि अर्थतत्वों के साथ संबंध तत्व जोड़कर कैसे 'मैं ने भोजन किया' वाक्य बने।, आकृति या रूप की दृष्टि से संसार की भाषाओं को मुख्य तरह से दो वर्गों में रखा जा सकता है, अयोगात्मक भाषाएँ और योगात्मक भाषाएँ।

२.२.१. अयोगात्मक भाषाएँ (Isolating Languages)

'अयोग' शब्द से स्पष्ट है कि इस वर्ग की भाषाओं में संबन्ध तत्व का योग नही होता अर्थात् पद या वाक्य बनाने केलिए इन भाषाओं में उपसर्ग या प्रत्यय नही जोड़ते। इन भाषाओं में किसी भी शब्द में कोई परिवर्तन नहीं होता। शब्द स्थान के बदलने पर अर्थ बदलता है। इसलिए इन भाषाओं के स्थान प्रधान भाषाएँ भी कहते हैं।

उदा : पुरानी चीनी में

ता लेन उ बड़ा आदमी (विशेषण)

लेन ता उ आदमी बड़ा है (क्रिया)

अयोगात्मक भाषाओं में शब्द क्रम का महत्व है और तान का भी। जैसे स्टेओनिक

भाषा में KEKCI = boy (falling tone)

KEKCI = girl (rising tone)

इसे तान प्रधान भाषाएँ भी कहते हैं।

२.२.२. योगात्मक भाषाएँ (Agglutinating Languages)

इसमें अर्थतत्व और संबन्ध तत्व दोनों का योग होता है अर्थात् दोनों मिल जुले रहते हैं। योगात्मक भाषाओं को योग की प्रकृति के अनुसार तीन वर्गों में बाँटा जाता है। (१) प्रश्लिष्ट योगात्मक (२) अश्लिष्ट योगात्मक (३) श्लिष्ट योगात्मक

१. प्रश्लिष्ट योगात्मक

इन भाषाओं में अर्थ तत्व और संबध तत्व का योग इतना मिल जुल होता है कि न तो उन्हें अलग अलग पहचाना जा सकता है और न एक को दूसरे से अलग किया जा सकता है। ये समास प्रधान भाषाएँ हैं उदाः शिशु – शैशव। इसके दो वर्ग किये गये हैं। क) पुर्णतः प्रश्लिष्ट और आंशिक प्रशिलष्ट

(क) पूर्णतः प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाः इसमें अर्थ तत्व और संबन्ध तत्व धुल मिलकर एक पूरा वाक्य या सामासिक शब्द बन जाते हैं। दक्षिणी अमेरिका की चिरोकी भाषा इसका उदाहरण है।

नातेन = लाओ

अमेखेल = नाव

निन = हम

इन तीनों से बना वाक्य - 'नाधोलिनिन' का अर्थ है - हमारे पास नाव लाओ।

(ख) अंशतः प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाः इन भाषाओं में समास की प्रक्रिया अंशिक है। इन में सर्वनाम तथा क्रियाओं का ऐसा सम्मिश्रण हो जाता है कि क्रिया आस्तित्वहीन होकर सर्वनाम की पूरक बन जाती है। उदाहरण केलिए गुजराती में मेंकहंयूजे (मैं ने वह कहा) - मुकजे।

२. अश्लिष्ट योगात्मक

इन में अर्थ तत्व और संबध तत्व स्पष्ट है। जैसे सुन्दरता (सुन्दर + ता) यह प्रत्यय प्रधान है। इसके अनेक भेद हैं।

(क) पूर्व योगात्मकः शब्दों की रूप रचना में संबन्ध तत्व केवल आरंभ में ही लगता है। काफिरी भाषा में – कु केलिए अथवा को

ति = हम, नि = वे

कुति = हमारेलिए, हमको, कुनि = उनकेलिए, उनको

(ख) मध्ययोगात्मकः संबन्ध तत्व मध्य में अर्थात् दोनों अक्षरों के बीच में जोड़ता है और अर्थ बदलता है सिथाली भाषा का एक अच्छा उदाहरण है -

मांझि = भुखिया

प = बहुवचन बोधक चिह्न

मंपझि = मुखिया लोग

(ग) अंतयोगात्मकः इस वर्ग की भाषाओं में संबन्ध तत्व केवल अंत में जोड़ा जाता है। कन्नड भाषा में -

सेवक - रू (कर्त - ने)

सेवक - रन्नु (कर्म - को)

सेवक - रिन्द (करण - से)

सेवक - रिगे (संप्रदान - केलिए)

(घ) पूर्वान्त योगात्मकः संबन्ध तत्व शब्द के पूर्व और पश्चात जोड़ा जाता है। न्युगिनि की मकोर भाषा में - मनक = सुनना

जन्मफउ = मैं तेरी बात सुनता हूँ

(ज + मनक + उ)

३. श्लिष्ट योगात्मक

इन भाषाओं में संबन्ध तत्व जोड़ने के बाद अर्थ तत्व वाले भाग में विकार पैदा हो जाता है। इन भाषाओं को विभक्ति प्रधान भाषाएँ भी कहते हैं। इसके दो भेद हैं - अन्तर्मुखी शिलष्ट और बहिर्मुखी श्लिष्ट।

(क) अन्तर्मुखी श्लिष्ट : इसमें विभक्ति प्रत्यय प्रकृति में धुल मिल जाते हैं और अर्थ भेद उपस्थित करते हैं। अरबी ऐसी भाषा हैं। उदाहरण केलिए -

क्त्ब्उ लिखना, किताब, - जो लिखा गया

कातिब = लिखनेवाला, कुतूब = बहुत सी किताबें

(ख) बहिर्मुखी श्लिष्ट : इसमें प्रकृति और प्रत्यय का योग स्पष्ट दिखायी देता है। अर्थ तत्व के बादवाले भाग में संबन्ध तत्व जुड़ जाता है और अर्थतत्व वाले भाग में परिवर्तन होता है। संस्कृत और हिन्दी ऐसी भाषाएँ हैं। संस्कृत के संयोगात्मक रूप है जैसे ''राम गच्छति''। हिन्दी के वियोगात्मक रूप है ''जैसे - राम जाता है''।

आकृतिमूलक या रूपात्मक वर्गीकरण की दृष्टि से हिन्दी बहिर्मुखी श्लिष्ट योगात्मक भाषा है। इसमें संबन्ध तत्व और अर्थतत्व का योग होता है। संबन्ध तत्व का कार्य विभक्तियाँ करती है।

२.३. पारिवारिक वर्गीकरण (Genealogical Classification)

पारिवारिक वर्गीकरण का आधार अर्थ तत्व और संबन्ध तत्व - दोनों की समानता है। जिन भाषाओं में अर्थ तत्व और संबन्ध तत्व में बहुत अधिक साम्य पाये जाते हैं, उन्हें एक परिवार की भाषा मानी जाती है। संसार में प्रारंभ में बारह भाषा परिवार माने गये हैं। अधिकाँश भाषावैज्ञानिकों ने चार चक्र तथा १५ परिवारों में भाषाओं का वर्गीकरण किया है। डॉ,

देवेन्द्रनाथ शर्मा ने १५ परिवारों में तथा डॉ. भोलानाथ तिवारि ने २० से अधिक परिवारों में संसार की भाषाओं का वर्गीकरण किया है।

प्रमुख भाषा परिवार इस प्रकार है -

१. युरेशिया खंड़ :

इस खंड में भारोपीय, द्राविड़, चीनी तिब्बती, सामी, काकेशी, युरल अल्ताई, जापानी और कोरियाई परिवारों की गणना की जाती है।

२. आफ्रिका खंड़ :

इसमें हामि, सुडानी, बंटू तथा बुशमेनी परिवार माने जाते हैं।

३. प्रशान्त महासागरीय खंड़ :

इसमें आस्ट्रेलियायी, पापुई, गलय बहुद्वीपीय तथा दक्षिण पूर्व एशियाई परिवार आते है।

४. अमेरिका खंड़ :

इसमें उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका परिवार गिने जाते हैं।

५. भारोपीय परिवार

संसार के भाषा - परिवारों में भारोपीय परिवार का स्थान सर्वप्रथम है। भारत से लेकर प्रायः पुरे युरोप तक बोले जाने के कारण इस परिवार को भारोपीय परिवार कहते हैं। यह

परिवार भारत, बँगलादेश, श्रीलंका, पाकिस्तान, अफगानिस्थान, ईरान, रूस, रुमानिया, फ्रान्स, पुर्तगल, स्पेन, इगलैड़, जर्मनि, अमेरिका, आफ्रिका और आस्ट्रेलिया के अनेक भागों में बोली जाती है। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवेस्ता, ग्रीक आदि इस परिवार की मुख्य भाषाएँ है। अन्य परिवारों की तुलना में भाषाओं और बोलियों की संख्या बहुत अधिक हैं। साथ ही बोलनेवालों की संख्या भी इसमें अधिक है।

भारतीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो वर्गों में बाँटा है - **'सतम्'** और **'केन्तुम'**।

६. द्राविड़ परिवार

इस परिवार का क्षेत्र दक्षिणी भारत, उत्तरीलंका, लक्षद्वीप, बलूचिस्तान, मध्य प्रदेश, बिहार, और उड़ीसा हैं। तमिल, मलयालम, तेलुगु और कन्नड़ इस परिवार की मुख्य भाषाएँ है।इसका क्षेत्र क्रमशः तमिलनाडु, केरल, आंध्रप्रदेश और कर्नाटक है। इसके अलावा बूंदेलखंड तथा आसपास में बोली जानेवाली भाषा गौंड़, बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश में प्रचलित ओराव, बलूचिस्तान में बोली जानेवाली बाहुई आदि गौण भाषाएँ भी है। प्रधानतः इस परिवार की भाषाएँ अश्लिष्ट अन्त योगात्मक है। मूल शब्द या धातु में प्रत्यय एक के बाद दूसरे जुड़ते हैं। इस परिवार की भाषाओं पर आर्य परिवार का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है विशेष कर संस्कृत भाषा का प्रभाव बहुत स्पष्ट है।

७. चीनी या एकाक्षरी परिवार

इस परिवार की मुख्य भाषा चीनी है। इस परिवार के अधिकाँश शब्द एकाक्षरी होती है। अतः इसे एकाक्षरी परिवार भी कहते हैं। चीनी, तिब्बति, बर्मा,स्याम आदि स्थानों पर इस परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं। चीनी, तिब्बति, बर्मा, स्य़ामी आदि प्रमुख भाषाएँ हैं। चीनी चीन की मुख्य भाषा हैं। इसकी छः बोलियाँ है, जिन में मन्दारिन, कैटनी, फुकनी आदि प्रमुख है। इस परिवार की भाषाएँ स्थान प्रधान या अयोगात्मक है। संबन्ध तत्व का पता बहुधा शब्द के स्थान से ही चल जाता है। अनुनासिक ध्वनियों के प्रयोग का यहाँ बाहुल्य है। इस परिवार की तिब्बती, बर्मा आदि भाषाओं की लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से ही उत्पत्र है।

८. सेमेटिक - हेमेटिक परिवार

कुछ लोग इन दोनों को एक ही परिवार की दो शाखाएँ मानते हैं। यह परिवार अत्तरी आफ्रिका तथा पास के परिचमी एशिया में फैला है। पौराणिक कथा के अनुसार हज़रत नूह के पुत्र सेम और हेम इस परिवार की भाषाओं के आदि पुरुष कहे जाते हैं। इन्ही के नाम पर यह नाम पड़ा है। मिस्र, ईराक अरब, सीरिया, इथियोपिया, मोस्को, अलजीरिया आदि सेमेटिक परिवार का क्षेत्र तथा लिबिया, सोमालिआ, इथियोपिया अति हेमोटिक भाषा-क्षेत्र हैं। हिबू, अरबि, सुमेरियन आदि सेमेटिक परिवार की भाषाएँ तथा प्राचीन मित्र, काष्टिक, सोमाली, गुल्ला, नामा, आदि हेमेटिक परिवार की मुख्य भाषाएँ हैं। इनमें अरबि भाषा सभी दृष्टियों से संपन्न रही हैं।

९. पूरल-अल्टाड़क परिवार

इसका क्षेत्र पूरल और अलटाई पर्वत के बीच तुर्की, सोवियत संघ, हरंगि, फिनलैंड आदि में फैला है। भारोपीय परिवार के बाद यह सबसे बड़ा परिवार है। फिनलैन्ड की भाषा फिनिडा, हंगरी की भाषा हंगारियन, इस्तोनिया की इस्तानियन, यूरालि की भाषाएँ तथा तुर्की, मंगोलियन, कजाक आदि अल्टाई की भाषाएँ हैं। इसकी भाषाएँ अश्लिष्ट अंतयोगात्मक है।

१०. काकेशियन परिवार

इस परिवार का क्षेत्र कैस्पियन साग ़और कुष्णा साग ़के बीच में काकेरास पर्वत का पहाड़ी क्षेत्र और आसपास का भूभाग हैं। उत्तर में चेचेल कबार्दियन, अब ़वासियन आदि भाषाएँ बोली जाती है और दक्षिण में जाजियन और मिसेलियन।

११. जापानि - कोरियाई परिवार

यह परिवार जापान, कोरिया तथा आसपास के कुछ द्वीप में फैला हैं। इसकी मुख्य भाषाएँ जापानीऐर कोरियाई हैं। कोरियाई लिपि ब्राहि से विकासित है। यह परिवार अशिलष्ट योगात्मक है। शब्द अनेकाक्षर के होते हैं।

१२. मलय - पोलिनेशियन परिवार

यह परिवार मेडगारकार, जावा, सुमात्रा, बोनियों बाली फिलीज़ीन, न्युजिलैन्ड, मलया, फारमोसा आदि में फैला हुआ है। मलय इन्डोनेशियन, माओरी, फिड़ियन आदि मुख्य भाषाएँ हैं। भाषाएँ अश्लिष्ट योगात्मक है। मूल शब्द और धातुएँ - दो अक्षरों की है।

१३. आस्टो – एशियाटिक परीवार

इसे आग्नेय परिवार भी कहते हैं। इयाम, ब्राहा, निकोबार, कप्बोडिया, बंगल, विहार, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु आदि में यह सीमित हो गया है। संथाली, मुडारी आदि इस वर्ग की मुख्य भाषाएँ हैं।

१४. बूशमैन परिवार

इसका क्षेत्र दक्षिणी आफ्रिका में ओरेजं नदी से नगामी झील तक है। वहाँ बृशमैन जाति के लोग अधिकतर रहते हैं। इस कारण से इसे यह नाम पडा हैं। ऐकवे, औकवे, हौतेतोत आदि इसकी मुख्य भाषाएँ है। इसमें क्लिक ध्वनियों का प्रयोग होता है।

१५. बाँटू परिवार

यह परिवार मध्य और दक्षिणी आफ्रिका तथा जंजिबार द्वीप आदि में फैला है। इसका मुख्य भाषाएँ काफिर, स्वाहिलि, जुलु, कांगो आदि हैं। इसकि दक्षिण पूर्व भाषाओं - में क्लिक ध्वनियाँ हैं।

१२. सूड़ान परिवार

यह परिवार आफ्रिका में भूमध्य रेखा के उत्तर भाग में फैला हुआ है। इसकी मुख्य भाषाएँ हौसा, इवे, बाँटू, न्युवबियन् यरूबा आदि हैं। यह परिवार अनेक बातों में चीनी तथा बाँटू परिवार से मिलता जुलता है।

१३. अमेरीकी परिवार

इस परिवार की भाषाएँ उत्तरी अमरीका, मध्य अमरीका, दक्षिणी अमरीका, गीनलैडं तथा आसपास के आसपास के द्रवीपों में बोली जाती हैं। ऐस्किमो, करीब, चेरौती आदि इसकी मुख्य भाषाएँ हैं।

२.४. भारोपीय परिवार का महत्व

भारोपीय परिवार विश्व का सबसे बड़ा भाषा - परिवार है। इस परिवार के बोलनेवाले संसार में सबसे ज्यादा हैं। भौगालिक दृष्टि से भी यह परिवार बड़े भूभाग में फैला हुआ हैं। सभ्यता, सस्कृति और साहित्य का विकास आदि की दृष्टि से भी अन्य परिवारों से आगे है। इसी परिवार की कुछ भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से भाषाविज्ञान के अध्ययन का आविर्भाव हुआ।

संसार में ऐसा कोई भूभाग नहीं है जहाँ इस परिवार की भाषाओं का प्रयोग न होता हो। आज अंग्रेज़ी फ्रंसीसी और स्पेनि भाषाओं के प्रभाव और प्रसार के कारण उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रलिया तक यह परिवार फैला है। इस परिवार की भाषाएँ मुख्य रूप से हमारे

देश के अधिकांश भूभागों के अतिरिक्त इरान और अर्मेनिया में, प्रायः समस्त यूरोप महाद्वीप में अमेरिका महाद्वीप में तथा आफ्रिका के दक्षिण - पश्चिम क्षेत्रों में और आस्ट्रलिया में प्रयुक्त होती हैं। जनसंख्या की दृष्टि से भी इस परिवार का प्रथम स्थान है।

इस परिवार के अन्तर्गत सर्वाधिक प्रयुक्त की जानेवाली अंग्रोज़ी के अलावा फ्रांसिसी, स्पेनी, पुर्तगली, जर्मन, रूसी, इतालवी, बोल्जियन आदि भाषाएँ भी आती हैं।

साहित्य रचना भी इस परिवार में आनेवाली भाषाओं में ही अधिकतर हुई है। वैज्ञानिक साहित्य का विकास इस परिवार की भाषाओं में ही अधिक हुआ है। इस संबन्ध में अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रांसीसी और रूसी भाषाओं के उदाहरण दे सकते हैं। इस प्रकार विस्तार, जनसंख्या सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, वैज्ञानिक साहित्य, राजनितिक एवं भाषावैज्ञानिक महत्व की दृष्टि से यह परिवार अन्य सभी भाषा परिवारों से आगे हैं।

२.४.१. भारोपीय परिवार का विभाजन

इस परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर 'सतम्' और 'केंतुम' दो वर्गो में रखा गया है। इस वर्गीकरण का प्रथम संकेत अस्कोली नामक भाषावैज्ञानिक ने उन्नीसवी सदी के उत्तरार्ध में किया था। भारोपीय मूल भाषा की कंठस्थानीय ध्वनियाँ कुछ शाखाओं में ज्यों की त्यों रह गई और कुछों में संघर्ष (स, श, ज आदि) या स्पर्श- संघर्ष (च, ज आदि) हो गई। इसी आधार पर वान बाडके ने इनको इन दो वर्ग में विभक्त किया। इन दोनों शब्दों का अर्थ हैं 'सौ'। 'सौ' के लिए एक वर्ग 'स' से आरंभ होनेवाले शब्द है जबकि दूसरे में 'क' से आरंभ

होनेवाले। 'केन्तुम' लाटिन भाषा का शब्द है और 'सतम्' अवेस्ता का शब्द है। कुछ उदाहरणों के साथ इसको इस प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं -

केन्तुम वर्ग			**सतम् वर्ग**		
लैटिन	-	केन्तुम	अवेस्ता	-	सतम
ग्रीक	-	हेक्तोन	फारसी	-	सद (सत)
फ्रेंच	-	केन्त	संस्कृत	-	शतम्
क्षोखारी	-	कत्(कन्ध)	स्लाविक	-	सुनो
वेल्श	-	कन्त्	हिन्दी	-	सौ
बीटन	-	कैन्ट	बलगेरियन	-	सुनो
			रूसी	-	स्तो

२.४.२. केंतुम वर्ग

केन्तुम वर्ग के अन्तर्गत निम्न लिखित भाषाएँ आती हैं

केल्टिक, द्यूटोनिक, लैटिन हैलानिक और तोखारी

१. केल्टिक

दो हज़ार वर्ष पूर्व इस भाषा बोलनेवाले मध्य युरोप, उत्तरि इटलि, फ्रांस का एक बड़ा भाग, स्पेन, एशिया मैनर, ग्रॉट ब्रिटेन आदि में थे। अब आयरलैंट, वेल्स, स्काटलैंड, मालद्वीप, ब्रिटेन तथा कार्नवाल के कुछ भागों में इसका क्षेत्र रह गया है।

भारोपीय परिवार की भाषाओं में भाषावैज्ञानिक दृष्टि से केल्टिक भाषाएँ अत्यधिक दुरूह और अस्पष्ट हैं। वाक्य - रचना में जटिलता और भी अधिक है।

२. दूयटोनिक या जर्मानिक

भारोपीय परिवार की यह महत्वपूर्ण शाखा है। अन्तराष्ट्रीय भाषा अंग्रेज़ी इस शाखा की एक भाषा है। दयूटन शब्द जर्मन और ईग्लिश आदि जातियों का द्योतन करता है।इसकी भाषाओं को भौगोलिक दृष्टि से तीन उपशाखाओं में विभाजित किया गया है।

पूर्वी जमानिकः गाथिक इसकी प्राचीनतम भाषा है।

उत्तरी जर्मानिकः यह भाषा डेनमार्क, 'नावे' और स्विड़न में व्याप्त है और इसके अन्तर्गत टैनिश, स्वीटश, नार्वजियन और आइसलैडिक आती हैं। पौराणिक कथात्मक साहित्य इस भाषा में प्राप्त है जिसे सागा कहते हैं।

पश्चमि जर्मानिक : इसके दो समुदाय है उच्च जर्मानिक और निम्न जर्मानिक। उच्च जर्मन में पुराना साहित्य प्राप्त है। निम्न जर्मन में अंग्रोजी, उच्च, पलेमिय़, फ्रजियन, और उत्तरी जर्मनि की प्रादेशिक बोलियाँ सम्मलित है।

३. लैटिन (इतालिक) :

लैटिन शाखा के अन्तर्गत इतालवी (इटली, सिसिली), रुमानियन (रूमानिया), फ्रांसिसी (फ्रांस)), स्पानिश (स्पेन), पुर्तगाली (पुर्तगल) आदि भाषायें आती है।

इस शाखा की सर्वप्रमुख भाषा लाटिन है जो अब भी रोमन काथोलिक संप्रदाय की धार्मिक भाषा है।

पुर्तगाली भाषा पुर्तगल और ब्रसील में व्यवहार में आती है। भारतीय भाषाओं के श्ब्द समूह में पुर्तगाली का प्रभाव स्पष्ट है। इतालवी इटली की राजभाषा है। रुमानिया की राजभाषा रुमानि ट्रानिसिलवानिया तथा ग्रीक के कुछ भागों में भी व्यवहार में आती है। प्रवेकल, सार्डनियन, सेफार्दि आदि भी इस शाखा के अन्तर्गत आनेवाली भाषाएँ है।

४. हेलनिक (ग्रीक)

ग्रीक का क्षेत्र है ग्रीस, इंडियन उपसागर के द्वीप - समूह, दक्षिणी अलवानिया, युगारलाविया, बलगेरिया, तुर्की का कुछ भाग तथा साइप्रेस और क्रीट द्वीप। अब इसके बोलनेवालों की सख्या ७० लाख बताई गई है। दर्शन, साहित्य और विज्ञान आदि की दृष्टि से इसका महत्व है।

५. तोखारी

तोखारी में व्यंजनों की संख्या कम है। इसमें सर्वनाम और संख्यावाचक शब्द भारोपिय के ही हैं। क्रियारूपों में अधिक जटिलता आ गई है। संधि - नियम कुछ संस्कृत - जैसे हैं। श्ब्द - भंडार संस्कृत - पितु, तोखारी - पाचर् संस्कृत - मातृ, तोखारी - माचर्)। द्रिवचन का प्रयोग इस भाषा में पाया जाता हैं।

२.४.३. सतम् वर्गा

सतम् वर्ग के अन्तर्गत ये शाखायें आती हैं।

१. इलिरियन (अलवानी)

२. आर्मेनियन (आरमीनी)

३. बाल्टिक - स्लाविक

४. भारत - ईरानी।

१. इलिरियन (अलबानि)

इलिरियन को अलबानी भी नाम दिया है। अलबेनियन के बोलनेवाले अलबेनिया तथा कुछ ग्रीस में है। इसके अन्तर्गत अनेक बोलियाँ है। इसके प्राचीनतम लेख सत्रहवीं सदि के हैं। इस भाषा में अब ग्रीक, स्लाविक, लातिन, इतानिक एवं तुर्कीभाषाओं की संख्या लगभग दस लाख है। दस भाषा में साहित्य का प्रारंभ सत्रहवीं सदि से हुआ है। साहित्य में प्रमुखता लोकगीतों की है।

३. बाल्टिक - स्लाविक

बाल्टिक - स्लाविक वर्गों की अपनी अपनी बोलियाँ है। बाल्टिक उपशाखा की भाषाएँ बाल्टिक सागर के तट पर बोली जाती हैं। बाल्टिक शाखा के अन्तर्गत तीन भाषाएँ हैं – प्राचीन प्रशियाई प्रशिचा प्रदेश में बोली जाती थी। सत्रहवीं शती में यह भाषा है। इसमें आज की

संस्कृत की भाँती द्रिवचन का प्रयोग हो रहा है। यह भाषा संगीतात्मक है। लेति लताविया देश की भाषा है। यह लिधुआनी से अधिक विकसित है। पंद्रह लाख के करीब लोगों के द्वारा यह भाषा बोली जाती है। लिथुआनी तथा लेति भाषाओं का महत्व साहित्यिक न होकर भाषावैज्ञानिक अधिक है।

४. भारत- ईरानी

भारत- ईरानी के अन्तर्गत भारतीय आर्यभाषाएँ तथा फारसी, अवेस्ता पहलवि, प्रशनो, बलूची, पामीरी, दरद आदि भाषाएँ आती हैं।

२.५. भारतीय आर्य भाषाएँ

भारतीय आर्य भाषाओं के अध्ययन की सुविधा के लिए तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं -१.

१. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा

((१५०० ई. पूर्व. से) ५०० ई. पूर्व तक)

२. मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा

(५०० ई. पूर्व से १००० ई. पु. तक)

३. आधुनिक भारतीय आर्य -भाषा

१००० ई. से वर्तमान समय तक।

२.५.१. प्राचीन भारतीय आर्यभाषा ((१५०० ई. पूर्व. से ५०० ई. पूर्व तक)

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा का स्वरूप 'ऋग्वेद से प्राप्त होता है। प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के अन्तर्गत भाषा के दो रूप मिलते हैं - 'वैदिक संस्कृत' और 'लौकिक संस्कृत'।

वैदिक संस्कृत को संस्कृत, वैदिकी, छन्दस, प्राचीन संस्कृत आदि भी कहते हैं। ऋग्वेद संहिता में इसका प्राचीनतम रूप मिलता है। चारों वेद, ऋग, यजुस, साम, अथर्व, ब्राहाण और उपनिषदों की भाषा वैदिक संस्कृत है। मूल युरोपीय ध्वनियों से वैदिक संस्कृत की ध्वनियों की तुलना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ तक आते ध्वनियों में पर्याप्त परिवर्तन हो गया था। व्यंजनों में चवर्ग और टवर्ग दो नये वर्ग आ गये थे।

लौकिक संस्कृत

इसको संस्कृत, क्लासिकल, संस्कृत, देवभाषा आदि भी कहते हैं। संस्कृत का प्रथम प्रयोग वाल्मीकि रामायण में है। क्लासिकल संस्कृत पण्ड़ित समाज की भाषा है। साहित्य में प्रयुक्त भाषा के रूप में इसका आरंभ आठवी सदि ईस्वी पूर्व से होता है। पाणिनी ने सातवी सदि ईसवी पूर्व के आस पास ही इसको व्याकरण - बद्ध किया। हानेल, ग्रियसेन आदि भाषावैज्ञानिकों ने इसको बोलचाल की भाषा नहीं माना। लेकिन थण्डार्कर, डा. गुणो आदि ने व्यक्त किया कि संस्कृत कभी बोलचाल की भाषा थी। भारत की सभी भाषाओं में संस्कृत से असंख्य शब्द लिये हैं। संस्कृत का साहित्य बहुत ही संपन्न है और कालिदास विश्व के सर्वश्रेष्ठ कवियों में एक है। यह श्लिष्ट योगात्मक भाषा है।

संस्कृत भाषा ने अनेक अन्य भाषाओं से शब्द - ग्रहण किया है जैसे 'ऊ'

द्रविड. से > कूंतल (बाल), भाल (ललाट), मुख (चेहरा), अनल (अग्नि) आदि।

अरबी से > इकबाल (सौभाग्य), सहस आदि।

ईरानी से > हिन्दू, नाज़िक (ईरानि व्यक्ति) मिहि(सूर्य) आदि।

युनानी से > त्रिकोण, सूरंग आदि।

तुर्की से > तुस्व्क, खच्छर् आदि।

२.५.२. मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाः ५०० ई. पू से १००० ई तक

इसको तीनों भागों में विभक्त कर सकते हैं

१. प्रथम प्राकृत (पालि) ५०० ई.पू.से। ई तक

२. दृतीय प्राकृत (साहित्यक प्राकृत) ई से ५०० ई तक

३. तृतीय प्राकृत (अपभ्रंश) ५०० ई से १००० ई तक

२.५.२.१. प्रथम प्राकृत - पालि

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा के प्रथम युग की महत्वपूर्ण भाषा पालि है। इसे 'देश भाषा' भी कहा गया है। 'पालि'शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में विद्वोनों में मतभेद है। भाषा के

अर्थ में 'पालि' का प्रयोग अत्याधुनिक है और युरोप के लोगों के द्वारा हुआ है। मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा के प्रथम युग के अन्तर्गत ही शिलालेखी प्राकृत या अशोक के शिलालेखों की प्राकृतें आती हैं। अशोक ने अपने राज्य के भिन्न – भिन्न भागों में खरोष्ठी लिपि में अनेक अभिलेख खुदवाये थे। स्तंभों और चट्टानों पर ये लेख उल्लिखित हैं। अभिलेखि प्राकृत में द्विवचन नहीं है। लिंग तीन हैं।

२.५.२.२. द्वितीय प्राकृत

द्वितीय प्राकृत को साहित्यिक प्राकृत कह सकते हैं। वेद और संस्कृतकालीन जनभाषा के विकसित रूप से प्राकृत की उत्पित्त हुई है।

प्राकृत के पाँच प्रमुख भेद स्वीकार किये गये हैं – शोरसेनि, पैशाचि, महाराष्ट्री, अर्धमागधी, मागधी।

क) शौरसेनी : शौरसेनी प्रकृत मथुरा या शूरसेन प्रदेश की भाषा थी। कुछ लोग इसे संस्कृत की भाँति इस काल की परिनिष्ठित भाषा मानते हैं। 'कर्पूरमंजरी' का गाध इसी में है। इसका प्राचीन रूप अध घोष के नाटकों में मिलता है। जैनों ने संप्रदायिक ग्रन्थों का लेखन इसमें किया है।

दो स्वरों के बीच आनेवाला 'त' का 'द' 'थ' का 'ध' हो गया है। जैसे - गच्छति > गच्छदि। कथम > कधोहि। 'च' का विकास 'कख' में हुआ है। (इक्षु > इक्खु), कुक्षि > कुविख)

ख) पैशाचि : इसे पैशाचिक, पैशाविका, ग्राम्यभाषा आदि भी कहते है। हानेल इसे द्राविडों द्वारा प्रयुक्त प्राकृत मानते हैं। वररुचि इसका आधार संस्कृत मानते हैं इसमें सघोष व्यंजनें के स्थान पर अघोष का प्रयोग है जैसे -गगन - गकन, नगर - नकर्, राजा - राचा। इसके कुछ रूपों में' 'ल' के स्थान पर 'र' और कही कही 'र' के स्थान पर 'ल' मिलता है। जैसे - कुमार - कुमाल, रुधिरं -लुधिरं।

ग) महाराष्ट्री : यह सर्वाधिक विकसित रूप है। इसको आदर्श प्राकृत कह सकते हैं। साहित्य की दृष्टि से यह बहुत धनी है। गाहा सतसाई, रावणबहो, बज्जालग्गा आदि इसकी प्रमुख कृतियाँ हैं। इसमें दो स्वरों के बीच आनेवाले अल्प-प्राण स्पर्श (क, त प, द, ग) प्रायः लुप्त हो गये हैं। ऊष्म ध्वनियों स, श, का प्रायः ह हो गया है - लस्य - लाह प्रषाण -पाहाण। यह भाषा संगीतात्मक है। इसमें स्वर बाहुल्य है।

घ) अर्ध मागधीः शैरसेनी और मागधी द्वोनों के लक्षण पाये जाते हैं। इसको 'आर्षी' 'आदिभाषा' भी कहते हैं। जैन साहित्य के कारण इसका खूब महत्व है। साहित्यिक नाटकों में भी इसका प्रयोग हुआ है। इसमें 'श', 'ष', के स्थान पर प्राय 'स' मिलता है - श्रावक - सावग। दंत्य ध्वनियँ मूर्धान्य हो गयी हैं - स्थित - टिय। कृत्वा - कट्टु।

ङ) मागधीः मगध की भाषा है। वररुचि इसे शौरसेनी से निकली मानते हैं। मागधी में कोई स्वतंत्र रचना नहीं मिलती है। इसमें 'स', 'ष' के स्थान पर 'श' का प्रयोग मिलता है। (सप्त - रात्त), पुरुष - पुलिश)। 'र' का स्वर्ग 'ल' हो जाता है - राजा - लाजा, समर - शमल। कहीं कहीं 'ज' का 'य' हो जाता है - जानति - याणदि।

२.५.२.३. तृतीय प्राकृत अपभ्रंशः

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा का अंतिम रूप है अपभ्रंश। महाभाष्यकार पतंजली ने पहले पहल इस श्ब्द का प्रयोग किया है। इसके अन्य नाम है. – ग्रामीण भाषा, देसी , देशभाषा आभिरोक्ति, अपभ्रष्ट, अवहंस आदि। 'अपभ्रंश' का अर्थ है 'बिगडा' भृष्ट अथवा गिरा हूआ। प्राकृत वैयाकरण चण्ड ने भाषा के अर्थ में इसका प्रयोग क्रिया। आगे चलकर कालिदास के नाटक 'विक्रमोर्वशीयम' के चौथे अंक में अपभ्रंश के कुछ छंद मिलते हैं। अपभ्रंश के भेदों को लेकर विद्वानों में मतभेद है। फिर भी अधिकांश विद्वानों ने इसके छः भेद माने हैं, शौरसेनी, पैशाची, महाराष्ट्रि, ब्राचड, अर्न्धमागधी और मागधी।

१. शौरसेनी

शौरशेनी प्राकृत से विकसित यह अपभ्रंश परिचमि उत्तर प्रदेश, पूर्व पंजाब, मध्यप्रदेश के परिचमी भाग, राजस्थान एवं गुजरात में बोली जाती थी। इसे परिचमी अपभ्रंश, नागरिक अपभ्रंश, नागरिका या नगर अपभ्रंश आदि भी कहते हैं। परमात्मा प्रकाश, पाहुड दोहा, भविश्यतकहा, अपभ्रंश - तरंगिणी, सनत्कुमारचरित्र, कुमारपाल प्रतिबोध आदि साहित्यिक रचनाएँ इसमें मिलती हैं। इसमें प्रयुक्त क् ख् त् ध् कमरा, ग् घ् द् ध्हो जाते थे। कुछ सर्वनामों में रूपों का आधिक्य है। क्रिया रूप कम हो गये थे। अंत्य अ, इ, उ अनुनासिक हो जाते थे। वर्तमान कालिक कृदंत का प्रयोग तीनों कालों के लिए हो सकता था।

२. अपभ्रंश की प्रयुक्त विशेषताएँ

अपभ्रंश उकार - बहुला भाषा थी। (उदा, एक्कु , कारणु, अंगु, मूलु,जगु आदि।

अपभ्रश में बलात्मक स्वराघात की प्रवृत्ति पायी जाती है। शब्द के अन्तिम स्वर के हस्व होने की प्रवृत्ति इसमें बढ़ गयी है। यह वियोगात्मकता की और अधिक झुकी है। भाषा में धातु और नाम दोनों रूप कम हो गये।

'म' का वँ (आँवलय, कवँल), ष्ण का न्ह (कृष्ण - कान्हा), क्ष का वख चा च्छ (पक्षी - पक्खि पच्छि) स्म का म्ह (अस्मै - अम्ह) म का ज (युगल - जुगल आदि रूप में ध्वनि विकास की प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं।

२.५.३. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ : (१००० ई से अब तक)

अपभ्रेंश के विभिन्न रूपों से आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का विकास हूआ।

विशेषताएँ : (१) आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में प्रमुखत : वही ध्वनियाँ हैं जो प्राकृत, अपभ्रंश आदि में थी। २) इनमें बलात्मक स्वराघात है। ३) विदेशी भाषाओं के प्रभाव से आधुनिकभाषाओं में कई नवीन ध्वनियाँ आ गई है - जैसेः ख, ख, ग, ज़, फ़, आँ आदि। इन ध्वनियों का लोकभाषा में क, ख, ग, ज, फ आ के रूप में उच्चारण हो रहा है। ४) आधुनिक भाषाएँ पूर्णरूप से वियोगात्मक हो गई हैं। ५) केवल दो ही वचन हैं। ६) गुजराती, मराठी, सिहली में तीन लिंग हैं, सिन्धी, पंजाबी, राजस्थानी तथा हिन्दी में दो लिंग हैं, बंगाली, उड़िया,

असमिया में लिंगभेद कम - सा है। ७) आधुनिक भारतीय भाषाओं में पश्तो, तुर्कि, अरबी, फारसी, पुर्तगलि तथा अंग्रेज़ी से लगभग आठ - नौ हज़ार नये विदेशी शब्द आ गये हैं।

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में सिन्धी, गुजराती, लहँदा, पंजाबी, मराठी, उड़िया, बंगाली, असमिया, हिन्दी (पश्चमी और पूर्वी) प्रमुख हैं। काश्मीरी भी प्रमुख भाषा है।

२.५.४. आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का वर्गीकरण

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का वर्गीकरण विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न रूपों में किया है। हनेल, डा ग्रीयसेन, डा. सुनीतिकूमार चैटर्जी, डा. धीरेन्द्रवर्मा आदि विद्वानों का वर्गीकरण नीचे दिया जा रहा है। हनेल ने अपनी पुस्तक कंपेरटीव ग्रामर ऑफ गौड़ियन लैग्वेजस में आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का चार वर्गों में रखी जो इस प्रकार है -

१. पूर्वी गौड़ियन : (बिहारि भी शामिल है) बँगला, अयमिया, उड़िया।

२. पश्चिमी गौड़ियन : पश्चमि हिन्दी, (राजस्थानि ही शामिल है) गुजराती, सिन्धी, पंजाबी।

३. उत्तरी गौड़ियन : गढ़वाली नेपाली आदि पहाड़ी भाषाएँ।

४. दक्षिणी गौड़ियन : मराठी।

हनेल ने यह मत रखा कि आर्य भारत में दो बार आये। प्रथम आर्य पंजाब में आकर बस गये थे। दूसरे आर्यों का हमला हुआ और वे उत्तर से आकार प्रचीन आर्यां के स्थल पर

बस गए। पूर्वगत आर्य पूरब, पश्चिम और दक्षिण में फैल गये। नवागत आर्य भीतरी कहलाये और पूर्वागित बाहरी। ग्रियसेन ने इस भीतरी - बाहरी को आधार बनाकर 'लिग्विस्टिक सर्व आफ इंडिया' में अपना पहला वग्र्गीकरण प्रस्तुत किया। लेकिन बाद में 'इंड़ियन डान्टीक्वरी' में दूसरा वर्गीकरण भी प्रस्तुत किया जो इस प्रकार है -

१. मध्यदेशी - परिचमी हिन्दी

२. अन्तर्वती - a) पश्चमि हिन्दी से विशेष घनिष्ठता वाली (पंजाबी, राजस्थानि, गुजराती पहाड़ी आदि)

b) बाहिरण संबन्द (पूर्वी हिन्दी)

३. बहिरंग भाषाएँ a) पश्चिमोत्तरि (लंहदा, सिन्धी)

b) दक्षिण (मराठी)

c) पूर्व (बिहारी, आड़िया, बँगाली, अस्मिया)

यह वर्गीकरण व्याकरण, शब्द समूह, एव ध्वनि पर आधारित है।

डॉ. सुनीतिकुमार चैटर्जी ने इसकी आलोचना की और अपनी ओर से एक वर्गीकरण सामने रखा जो इस प्रकार है -

१. उदीच्य : (सिन्धी, लहंदा, पंजाबी)

२. प्रदीच्य : (गुजराती, राजस्थानी)

३. मध्यदेशीय : (पश्चमी हिन्दी)

४. प्राच्य : (पूर्वी हिन्दी, बिहारी, उडिया, असमिया, बँगाली)

५. दक्षिणात्य : (मराठी)

डॉ. भोलोनाथ तिवारी ने भी अपना वर्गीकरण यों प्रस्तुत किया है -

१. मध्यवर्ती : पूर्वी और पश्चिमि हिन्दी

२ पूर्वी : बिहारी, बँगाली, असमिया, उडिया

३. दक्षिणी : मराठी

४. पशचिमी : सिन्धी, गुजराती, राजस्थानी

५. उत्तरी : लहँदा, पंजाबी, पहाड़ी

तीसरा अध्याय

हिन्दी और मलयालम भाषाओं का भाषावैज्ञानिक विश्लेषण

३.१. हिन्दी की ध्वनि व्यवस्था

भाषा संप्रेषण का महत्वपूर्ण और भावबोध का अन्यतम साधन है। भारतवर्ष में अनेक परिवार की भाषाएँ बोली जाती है। इन में दक्षिण में बोली जानेवाली द्राविड़ परिवार की भाषा मलयालम और भारोपीय परिवार की भाषा हिन्दी सर्वाधिक विकसित और संपन्न भाषाएँ हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बहुत पहले से ही मलयालम भाषा भाषी हिन्दी सीखने लगे थे। दूसरी भाषा के रूप में और राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन हुआ था। दो भिन्न परिवारों की भाषाएँ होने पर भी इनमें साम्य और वैषम्य की संभावना अधिक है। आगे हिन्दी और मलयालम भाषाओं का भाषावैज्ञानिक विश्लेषण का अध्ययन किया जाएगा।

ध्वनियाँ उच्चारित होती हैं उच्चरित होकर वक्ता के मुँह से श्रोता के कान तक पहूँचती है और श्रोता द्वारा सुनी जाती है। इस आधार पर ध्वनियों का मुख्यतः दो भेद होते हैं - स्वर और व्यंजन।

३.२. स्वर

स्वर वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से मुख- विवर से निकल जाती है।

व्यंजन

वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से नहीं निकलने पाती। या तो पूर्ण अवरुद्ध होकर फिर आगे बढ़ना पड़ता है। या संकीर्ण मार्ग से घर्षण खाते हुए निकलना पड़ता है। इस प्रकार वायु मार्ग में पूर्ण या अपूर्ण अवरोध उपस्थित होता है।

३.२.१. स्वरों का वर्गीकरण

भाषावैज्ञानिक दृष्टि से स्वरों का विवेचन मुख्य रूप से जीभ का व्यवहृत भाग, जिह्वा के उठने की स्थिति और ओष्ठों की स्थिति के आधार पर किया जाता है।

३.२.१.१. जिह्वा के उन्नत होनेवाले भाग के आधार पर स्वरों के भेद

अग्र, मध्य, पश्च।

३.२.१.१.१. अग्र स्वर

जिह्वा के अग्रभाग उठकर सक्रिय रहे तो अग्र स्वर उच्चारित होता है।

इ, ई. ए, ऐ - अग्र स्वर है।

३.२.१.१.२ मध्य स्वर

जिह्वा के मध्य भाग उठे तो मध्य स्वर बनता है।

अ - मध्य स्वर है।

३.२.१.१.३ पश्च स्वर

जिह्वा के पश्चभाग के उठने से पश्च स्वर उच्चरित होता है।

उ, ऊ. औ, आ - पश्च स्वर है।

३.२.१.२ जीभ के उन्नत होने की या जीभ की ऊचाई की स्थिति के आधार पर स्वरों के भेद

संवृत, अर्द्ध संवृत, अर्द्धविवृत, विवृत।

३.२.१.२.१. संवृत स्वर

जीभ उठकर तालू के निकट पहूँचकर मुखविवर को संकरा करता है तो तब उच्चारित स्वर संवृत कहलाएँगे।

इ, ई, उ, ऊ - संवृत स्वर

३.२.१.२.२. विवृत स्वर

जिह्वा जब स्वर सीमा की सबसे निचली स्थिति में रहती है तब वायु मार्ग अधिक विस्तृत रहता है। इस प्रकार के स्वर विवृत कहलाएँगे।

आ - विवृत स्वर

३.२.१.२.३. अर्द्ध संवृत

संवृत के निकट की स्थिति में अर्द्ध संवृत स्वर बनता है।

ए, ओ - अर्द्ध संवृत

३.२.१.२.४. अर्द्ध विवृत स्वर

विवृत के निकट की स्थिति में अर्द्ध विवृत स्वर बनते हैं।

ऐ, औ, अ - अर्द्ध विवृत

३.२.१.३. ओठों की स्थिति के आधार पर स्वर स्वनिमों के भेद

३.२.१.३.१. गोलित और अगोलित।

जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ गोलकर स्थिति में होती है, उन्हें गोलित स्वर कहलाते हैं। उ, ऊ, ओ, औ - गोलित स्वर, जिन स्वरों के उच्चारण में ओठ उदासीन या फैले रहते है उन्हीं स्वरों को अगोलित स्वर कहलायेगें। अ, आ, इ, ई, ए, ऐ - अगोलित स्वर।

३.२.१.४. मात्रा के आधार पर स्वरों के भेद

ह्रस्व - अ, इ, उ

दीर्घ - आ, ई, ऊ. ए, ऐ, ओ, औ।

प्लुत - औम

३.२.१.५. कोमलतालु की स्थिति के आधार पर स्वरों के भेद

मौखिक स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, सभी स्वर

अनुनासिक स्वर - सभी स्वरों के अनुनासिक रूप है। आँ, इँ, ईं, उँ, ऊँ,एँ, ऐं, औं, औँ

३.२.१.६. जीभ के चल - अचल स्थिति के आधार पर स्वरों के भेद

मूलस्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए।

संयुक्त स्वर - ऐ, औ

३.२.१.७. स्वरतन्त्रियों की स्थिति के आधार पर स्वरों के भेद

घोष और अघोष

प्रायः हिन्दी के सभी स्वर घोष है। अघोष स्वरों के उच्चारण में स्वर तन्त्रियों में कंपन नहीं होगा। ऐसे- अघोष स्वर रूप को दिखाने के लिए स्वरों के नीचे बिन्दी डालती है।

उदाः अ, ई

३.२.१.८. मुँह की माँसपेशियों की दृढता - शिथिलता के आधार पर स्वरों के भेद।

दृढ़ और शिथिल।

दृढ़ - ई, ऊ

शिथिल - अ, इ, उ।

३.३. व्यंजन

३.३.१ व्यंजनों का वर्गीकरण

व्यजनों के उच्चारण के लिए हवा को रोककर कई प्रकार से उसे विकृत करना पड़ता है। ध्वनियों का उच्चारण जिस तरह किसी विशेष प्रयत्न से किया जाता है उसी तरह किसी विशेष स्थान या अंग से इसका उच्चारण किया जाता है। ध्वनियों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों की स्थिति एवं प्राणत्व के आधार पर भी भिन्नता आती है।

३.३.१.१ स्थान के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

फेफड़ों से निर्गत वायु जहाँ पर बाधित होता है, वह उस ध्वनि का स्थान कहलाता है। इस आधार पर व्यंजनों के नौ भेद हैं।

३.३.१.१.१ ओष्ठ्य : इसके उच्चारण में दोनों ओष्ठ क्रियाशील होते हैं।

जैसे प, फ, ब, भ, म

३.३.१.१.१ दन्तोष्ठ्य : इसके उच्चारण में ऊपर के दाँत और निचले ओष्ठ के योग से ध्वनियाँ उच्चारित होती है।

जैसे व़ और फ

३.३.१.१.३ दन्त्य : इनका उच्चारण जिह्वा नोक द्वारा ऊपर के दाँतों का स्पर्श होने पर होता है।

जैसे त, थ, द, ध, न

३.३.१.१.४ वर्त्स : जिह्वा नोक द्वारा वर्त्स का स्पर्श करने से वर्त्स व्यंजन उच्चरित होता है। जैसे, न, र, ल, स आदि

३.३.१.१.५ तालव्य : इन व्यंजनों का उच्चारण - जिह्वा द्वारा कठोरतालु का स्पर्श करने से होता है। जैसे च, छ, ज, झ, ञ, य, श।

३.३.१.१.६ मूर्धन्य : कठोरतालु के आगे मूर्धा के भाग पर जिह्वा नोक के स्पर्श से मूर्धन्य व्यंजन उच्चरित होते हैं। ट, ठ, ड, ढ, ण ड़, ढ आदि

३.३.१.१.७ कंठ्य : कोमल तालू पर जिह्वा स्पर्श के संपर्क से कोमल तालव्य व्यंजन उच्चरित होते हैं। जैसे क, ख, ग, घ, ङ

३.३.१.१.८ अलिजिह्वीय : अलिजिह्वा पर जिह्वामूल के संपर्क से उच्चरित व्यंजन जैस - क़, ग

३.३.१.१.९ स्वरयन्त्र मुखीय (काकल्य) : काकल्य से उच्चरित ध्वनियाँ 'ह' - स्वरयन्त्र मुखी है।

३.३.२. प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

उच्चारण प्रक्रिया में जो प्रयास करना पड़ता है- वही प्रयत्न है। प्रयत्न के आधार पर व्यंजन आठ प्रकार के है।

३.३.२.१. स्पर्श : जिन व्यंजनों के उच्चारण में दो भिन्न अंगों में स्पर्श या स्फोट होते हैं।

जैसेः क, ख, ग,ध
ट ठ ड ढ
त थ द ध
प फ ब भ
} स्पर्श व्यंजन हैं।

३.३.२.२. संघर्षी : दो भिन्न अंग जब उच्चारण स्थान के अत्यन्त निकट आते हैं तो उसके बीच वायु मार्ग संकरा हो जाता है अतः उससे निर्गत वायु घर्षण के साथ निकलती है। ऐसी स्थिति में उच्चरित व्यंजन संघर्षी व्यंजन कहलाता है। श, स, ह. ज. फ संघर्षी है।

३.३.२.३. स्पर्श संघर्षी : स्पर्श संघर्षी का प्रथम चरण स्पर्श जैसा होता है। उसके उच्चारण में पहले दो अंगो पर स्पर्श होता है

और फिर धीरे से घर्षण के साथ वायु का उनमोचन होता है।

हिन्दी च, छ, ज, झ, स्पर्श संघर्षों है।

३.३.२.४. पार्श्विक : जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा नोक वर्त्स की और उठकर उसका स्पर्श करती है और वायु दोनों पारशों से निकल जाती है, उन्हें पार्श्विक व्यंजन कहते हैं। हिन्दी में 'ल' पार्श्विक व्यंजन है।

३.३.२.५. लुंठित : जिह्वा नोक लुंठन करके वर्त्स के संपर्क में आ जाती है और निर्गत वायु कंपन के साथ निकल जाती है तो लुंठिन व्यंजन उच्चरित होते हैं। जैसे 'र'

३.३.२.६. उत्क्षित्त : जिनके उच्चारण में जिह्वानोक तालु को झटके से मारकर नीचे आ जाती है उन्हें उत्क्षित्त व्यंजन कहते हैं। हिन्दी में ड, ढ उत्क्षिप्त व्यंजन है।

३.३.२.७. नासिक्य : जिनके उच्चारण में अलिजिह्वा नीचे की और झुक जाने से मुख विवर में वायु मार्ग बन्द हो जाता है और नासिका विवर से वायु बाहर निकल जाती है उन्हें नासिक्य व्यंजन कहते है। ङ, य, ण, ल, म नासिवय व्यंजन है।

३.३.२.८. अर्द्धस्वर : जिन ध्वनियों के उच्चारण में उच्चारण अवयव एक दूसरे के संपर्क में आ जाता है किन्तु वहाँ से निर्गत वायु बिना किसी संघर्ष से प्रवाहित होती है। ऐसी ध्वनियाँ अर्द्धस्वर या संघर्ष हीन संप्रवाही व्यंजन कहलाती है। य, व, अर्द्धस्वर हैं।

३.३.३. घोषण के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरणः

इस दृष्टि से व्यंजन दो प्रकार के होते हैं घोष और अघोष।

३.३.३.१. घोष

जिन स्वर त्रंत्रियाँ एक दूसरे के निकट आ जाती है और उनका बीच का स्थान सँकरा हो जाता है तब उससे निर्गत वायु कंपन के साथ निकलती है तो घोष व्यंजन हैं। पाँच वर्गों के अन्तिम तीन (ग घ ङ ज झ ञ ड ढ ण द ध न ब भ म) व्यंजन घोष है, साथ ही य, र, ल, व घोष है।

३.३.३.२. अघोष

जब स्वरतत्रियाँ एक दूसरे से दूर रहती है और निर्गत वायु बिना कंपन के निकल जाती है तो अघोष व्यंजन उच्चरित होते हैं। पाँच वर्गी के प्रथम दो (क ख च छ ट ठ त थ प फ)व्यंजन अघोष है, साथ ही शा, स. ह घोष है।

३.३.४. प्राणत्व के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

प्राणत्व के आधार पर व्यंजन दो प्रकार की है अल्पप्राणा और महाप्राण। जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु अल्पशक्ति के साथ निकलती है उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं। क, ग. ङ, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, न, म, य, र, ल, व आदि अल्पप्राण है।

जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु अधिक शक्ति के साथ निकलती है तो महाप्राण व्यंजन कहते है ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, ह आदि महाप्राणा व्यंजन है।

३.४. मानस्वर Cardinal Vowels

अन्य भाषाओं के अध्ययन के अवसर पर अपनी मातृभाषा के स्वरों के साथ तुलना करके स्वरों के सही उच्चारण का हमें अभ्यास करना होता है। ऐसे अवसरों पर विवृतता, संवृतता तथा अग्रता , मध्यता, पश्चता की दृष्टि से स्वरों का स्थान निर्धारित करने के लिए एक मानदंड की आवश्यकता होती है। इस आवश्यकता की पूर्ती लंडन विश्वविद्यालय के प्रोफसर डानियल जान्स तथा उसके सहयोगियों ने मिलकर की है।

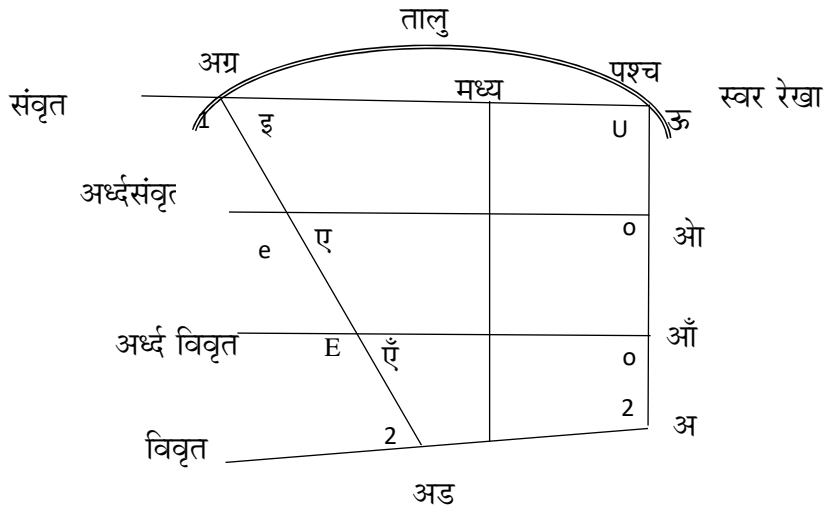

३.५. श्रुति (Glide)

बोलते समय उच्चारण अवयव जब एक ध्वनि के उच्चारण के बाद दूसरे का उच्चारण करने के लिए नयी स्थिति में जाने लगते हैं तो कभी-कभी हवा निकलते रहने के कारण बीच में ही ऐसी ध्यनि उच्चरित हो जाती है। जो वस्तुतः उन शब्दों में नही होती। ऐसी अकस्मात हो जानेवाली ध्वनि श्रुति कहलाती है।

जैसे स्कूल - इस्कूल

स्नान - अस्नान।

३.६. हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था

स्वनिम दो प्रकार के होते हैं - खंड्य स्वनिम और खण्ड्येतर स्वनिम। जिन स्वर व्यंजनों के अन्दर स्वर और व्यंजन स्वनिमें का निर्धारण होता है उन्हें खण्ड्य स्वनिम कहते है। खण्ड्य स्वनिमों की उच्चारण स्वतन्त्र रूप से हो सकता है। इसके विपरीत - खण्ड्येतर स्वनिमों का उच्चारण खण्ड्य स्वनिम पर निर्भर है।

३.६.१. खंड्य स्वनिम

खंड्य स्वनिम दो प्रकार के हैं।

(क) स्वर स्वनिम

(ख) व्यंजन स्वनिम।

३.६.२. हिन्दी के स्वर स्वानिमों का वितरण

/ई/ > [ई]- संवृत, अग्र, दीर्घ (ईस्ट, मील, जाली)

/इ/ > [इ] - संवृत, अग्र, ह्रस्व (इधर, तिथि, जाति)

/ऊ/ > [ऊ] - संवृत, पश्च दीर्घ (ऊपर, मूल, बहू)

/उ/ > [उ] - संवृत, पश्च, दीर्घ (उर, गुरु, साधू)

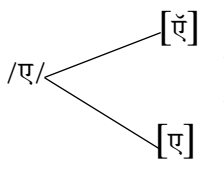

अर्द्ध संवृत, अग्र, ह्रस्व।
वितरणः अनेकाक्षर शब्दों में 'ए' के बाद 'ह' होते तो ऍ, (ह्रस्व) उच्चारण होता है। जैसे मेहमान
अर्द्ध संवृत, अग्र दीर्घ (अन्यत्र प्रयोग) जैसे एक, केला

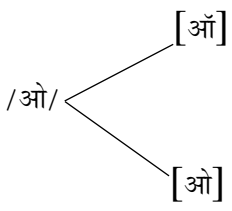

अर्द्ध संवृत, पश्च, ह्रस्व।
वितरणः अनेकाक्षर शब्दों में 'ओ' के बाद 'ह' और उसके बादवाले अक्षर दीर्घ होता तो 'ओ' (ह्रस्व) उच्चारण होता है। उदा जैसे कोहरा, दोहरा
अर्द्ध संवृत, पश्च, दीर्घ (अन्यत्र प्रयोग) जैसे ओर, कोना

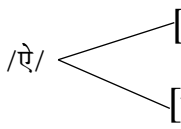

संयुक्त स्वर 'य' के पूर्व उच्चरित जैसे मैया, भैया।
अर्द्ध विवृत, अग्रे , मूलस्वर (अन्यत्र प्रयोग) जैसे ऐनक, कैसा)

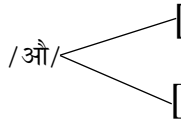

संयुक्त स्वर 'व' के पूर्व उच्चरित जैसे कौआ।
अर्द्ध विवृत, पश्च , मूल (अन्यत्र प्रयोग) जैसे और, कौन

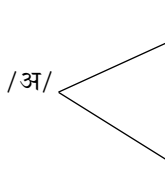

अर्द्ध संवृत, अग्र, ह्रस्व 'ह' के पूर्व उच्चरित जैसै बहना, बहन
अर्द्ध विवृत, मध्यस्वर (अन्यत्र प्रयोग) अब, कम, कम
(हिन्दी में अन्तिम 'अ' अनुच्चरित है)

३.६.३. खंड्येतर स्वनिम (अधिखण्डिय स्वनिम)

जो स्वनीम अर्थभेदक होते हैं किन्तु स्वर और व्यंजन से जुड़े बिना उनका अस्तित्व नहीं होता। उन्हें खंड्येतर स्वनिम कहते हैं। उन्हें किसी खंड्य स्वनिम के साथ रहकर ही अर्थभेद करना पड़ता है। हिंदी में दीर्घता, अनुनासिकता, बलाघात सुर, संगम या संहिता हिन्दी की अधिखण्डिय स्वनिम हैं।

३.६.३.१. अनुनासिकता

मुख विवर में वायु मार्ग बंद होकर नासिका विवर से वायु बाहर निकल जाती है तो अनुनासिक व्यंजन उच्चरित होती हैं।

जैसे आधी - आँधी

काटा - काँटा

३.६.३.२. दीर्घता

जैसे पता - पत्ता

बचा - बच्चा

३.६.३.३. बलाघात

जैसे गला - गर्दन

गला - पिघलना

३.६.३.४. सुर

सुर के सामान्यतः दो भेद हैं।

तान और अनुतान।

जैसेः गोपाल मद्रास गया।

गोपाल मद्रास गया?

३.६.३.५. संगम या संहिता

एक स्वन से दूसरे स्वन की ओर जो संक्रमण होता है उसे संगम या संहिता कहते हैं। कभी यह संक्रमण तेज़ी से होता है कभी धीरे होता है। विराम का होना या न होना अर्थ भेदक होता है। अतः संगम स्वनिमिक है।

जैसेः तुम्हारे - तुम - हारे

सोना - सो - न

रोको, मत जाने दो।

रोको मत, जाने दो।

३.७. हिन्दी भाषा का रूपवैज्ञानिक सन्दर्भ (रूपिम विज्ञान) (Morphonics)

रूपिम सरल शब्दों में स्वानिमों का ऐसा लघुतम अनुक्रम है जो व्याकरणिक दृष्टि से सार्थक होता है। दूसरे शब्दों में कहे तो भाषा या वाक्य की लघुतम सार्थक इकाई, अर्थयुक्त इकाई रूपिम या रूपग्राम है। इसका वैज्ञानिक अध्ययन और विश्लेषण रूपविज्ञान में होता है। पद या रूप ऐसे घटक है, जिनसे - वाक्य बनता है। 'उसके रसोईघर में सफाई होगी' वाक्य में पाँच रूप है। अथति् एक रूप में एक या अधिक रूपिम हो सकते। उपयुक्त वाक्य में उस, के, रसोई, घर, में, साफ, ई, हो, ग, ई - ऐसे दस रूपिम है।

३.७.१. रूपिमों के भेद

रचना एवं प्रयोग की दृष्टि से रूपिम दो प्रकार के होते हैं - **मुक्त रूपिम और बद्द रूपिम।** 'उसके रसोईघर में सफाई होगी' में रसोई, घर, साफ मुक्त रूपिम है और उस, के, में, ई, हो, ग, ई आदि बद्द रूपिम है।

जो अलग नहीं आ सकते और जिसका स्वतन्त्र प्रयोग नही वही बद्ध रूपिम है। अर्थात् सदा अर्थ की दुष्टि से बद्ध रहते हैं।

बद्धरूपिम के तीन भेद है - मुक्त बद्ध बद्धबद्ध और बद्ध मुक्त बद्ध। स्थान और अर्थ की दृष्टि से सदा बद्ध रहनेवाले रूपिम बद्ध रूपिम है। जैसे 'मनुष्यता' में 'ता'। स्थान की दृष्टि से मुक्त और अर्थ की दृष्टि से बद्ध रहनेवाले रूपिम मुक्त बद्ध है। जैसे संस्कृत के इति,

आदि एवं, च। कुछ बद्ध रूपिम कभी स्थान की दुष्टि से मुक्त, तथा कभी बद्ध रहते हैं। उसे बद्दुमुक्त बद्ध कहते हैं।

जैसे, राम ने, राम को, उसने, उसको आदि।

३.७.२. रचना और प्रयोग के आधार रूपिम के दो भेद है।

संयुक्त रूपिम और मिश्रित रूपिम।

जब दो या अधिक ऐसे रूपिम एक में मिलते है, जिनमें अर्थतत्व केवल एक हो उसे संयुक्त रूपिम कहते हैं। जैसे - सफाई, उसके होगी आदि। यदि एक से अधिक अर्थतत्व या मुक्त रूपिम हो तो उसे मिश्रित रूपिम कहते है। जैसे - रसोईघर।

अर्थ और कार्य के आधार पर रूपिम के दो भेद है - अर्थदर्शी और संबन्धदर्शी।

जिनका स्पष्ट रूप से अर्थ होता है और अर्थ व्यक्त करने के अतिरिक्त जो और कार्य नही करते, इन्हीं को अर्थ तत्व कहते हैं - यही अर्थदर्शी रूपिम है। जैसे हो, खा, वह, तुम- आदि। संबन्ध दर्शन या व्यकरणिक कार्य करनेवाला रूपिम संबन्ध दर्शी या कार्यात्मक रूपिम है।

जैसे - लड़का में 'आ'

लड़को में 'ओ' आदि।

३.७.३. उपरूप या संरूप (Allomorph)

रूपिमों के अर्थ उसके सन्दर्भ पर ही निर्भर रहते हैं। जब तक किसी रूपिम के प्रयुक्त होने के संदर्भ की जानकारी प्राप्त नही तब तक उनके अर्थ को ठीक-ठीक नही समझ सकते।

अग्रेज़ी भाषा में संज्ञा शब्दों का एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए ('स्') (cats, books) ज़ (dogs, woods) 'इज़' (bridges, roses) इन (oxen) रिन (children) तथा शून्य रूपिम (furniture) जैसे बहुवचन शब्द जोड़ना पड़ता है। यदि हम उपयुक्त उदाहरणों का विश्लेषण करें तो हम समझ सकते हैं कि 'स' ऐसे शब्दों के अन्त में जोड़ता है, जिसके अन्त में 'स', 'श' के अतिरिक्त और कोई अघोष व्यंजन हो। ज़ ऐसे शब्दों के अन्त में आता है जिसके अन्त में स, श, ज़, हो। इसका आशय यह है कि वे आपस में विरोधी नही है और इनका वितरण परिपूरक है। यदि कई रूप सामानार्थी हो, एक ही प्रकार की रचना में आये और परिपूरक वितरण में हो तो उनके सबको एक ही रूपिम के उपरूप माना जाता है।

रूपिम, उपरूप, एवं वितरण को निम्न प्रकार से दिखा सकते हैं।

रूपिम

रूपिम	**उपरूप**	**वितरण**
	२. /ओ/	संबोधन रूपो में कवियों, घोडे, लड़को
	३. /ए/	अकारान्त पुल्लिंगा शब्दों के साथ

(लड़के, बेटे, छोड़े)

४. /एँ / व्यंजनान्त (किताबें)

आकारान्त (मालाएँ)

उकारान्त (वस्तुएँ) आदि।

५. /आँ/ ईकारान्त (जातियाँ)

६. /$\hat{O}$/ व्यंजनान्त (घर) (शून्य रूपिम)

इकारान्त (कवि) (शून्य रूपिम)

ईकारान्त (आदमी) आदि (शून्य रूपिम)

३.८. हिन्दी का शब्द भंड़ार

एक या एक से अधिक अक्षरों के सार्थक योग को 'शब्द' कहते हैं। हिन्दी के शब्दों का वर्गीकरण मुख्यतः चार आधारों पर किया जाता है।

(क) व्युत्पत्ति के आघार पर

(ख) अर्थ के आधार पर

(ग) रचना या बनावट के आधार पर

(घ) वाक्य में प्रयोग के आधार पर

३.८.१. व्युत्पत्ति के आधार पर हिन्दी भाषा में चार प्रकार के शब्द है

तत्सम, तद्भव, देशी और विदेशी।

३.८.१.१. तत्सम

संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं तत्सम कहलाते हैं।

जैसे - अधीन, अध्यक्ष, आक्रमण, समुद्र आदि।

३.८.१.२. तद्भव

तद्भव शब्द वे है जो प्रायः संस्कृत शब्द हिन्दी तक आते-आते परिवर्तित हो गये हैं।

जैसेः अंधकार - अंधेरा

उच्च -ऊँचा

चक्र - चाक

३.८.१.३. देशी या देशज

देशी या देशज शब्द है जो न संस्कृत के है न संस्कृत से बने है और न ही विदेशी है। वे इस देश की अपनी उपज हैं।

जैसेः चटपट, ठठेरा, हिनहिनाना, गज आदि।

३.८.१.४. विदेशी

विदेशी शब्द अरबी, फारसी, तुर्की आदि ऐशिया की भाषाओं से और अग्रेज़ी, फ्रेन्च, डच आदि युरोपीय भाषाओं से हिन्दी में आये हैं।

जैसे - इरादा, इशारा जिला

अगर, अमरूद

चाकू, चाय

स्कूल, स्टेशन आदि।

३.८.२. अर्थ के आधार पर हिन्दी के शब्दों के तीन भेद किये है

वाचक या अभिधार्थ, लाक्षणिक या लक्ष्यार्थ, और व्यंजक या व्यंग्यार्थ।

३.८.२.१. वाचक या अभिधार्थ

वाचक या अभिधार्थ शब्द है जिनसे अपने मुख्य और साधारण अर्थ का बोध होता है।

जैसे - गाय, पक्षी, काला आदि।

३.८.२.२. लाक्षणिक या लक्ष्यार्थ

जिन शब्दों से रूढ़ी के कारण या किसी प्रयोजन के लिए मुख्यार्थ से संबन्ध अन्य अर्थ का बोध हो उन्हें लाक्षणिक या लक्ष्यार्थ शब्द कहते हैं।

जैसे - उल्लू (मूर्ख)

३.८.२.३. व्यंजक या व्यंग्यार्थ

व्यंग्यार्थ या व्यंजक वे शब्द होते हैं जिनका न तो मुख्य अर्थ लिया जाता है न लाक्षणिक बल्कि जिनमें कोई गुढ़ या सांकेतिक अर्थ प्राप्त होता है।

जैसे - गजानन (गणपती)

३.९. हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना

वाक्य गठन या पद से वाक्य बनाने की प्रक्रिया का वर्णनात्मक, तुलनात्मक और ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन वाक्य विज्ञान में होता है। भाषा का मूल रूप है वाक्य द्वारा ही मनुष्य अपने विचारों का विनिमय करता है। जिस शब्द समूह से कहने या लिखनेवाले का पूरा भाव प्रकट हो जाय उसे वाक्य कहते हैं।

वाक्य को सार्थक श्ब्दों का समूह मानते हैं जो भाव को व्यक्त करने की दृष्टि से अपने आप में पूर्ण हो। पद और वाक्य को लेकर विद्वानों के बीच में मतभेद है। मुख्य रूप से दो सिद्दान्तों को विद्वानों ने सामने रखा - अन्विताभिधानवाद और अभिहितान्चयवाद। अन्वताभिधानवाद के अनुसार 'वाक्य' की ही सत्ता मूल है और पद उसके तोड़े हुए अंश है। अभिहितान्वयवाद के अनुसार 'पद' की ही सत्ता मूल है , वाक्य पदों का जोड़ा हुआ रूप है आज के भाषावैज्ञानिकों को अन्विताभिधानवाद ही मान्य है। अर्थात् वे मानते है कि वाक्य ही सता मूल है और वाक्य ही भाषा की न्यूनतम पूर्ण सार्थक सहज इकाई है। वाक्य केलिए यही

एक सामान्य परिभाषा दे सकते हैं - वह अर्थवान ध्वनि समुदाय, जो पूरे भाव या अर्थ की दृष्टि से अपने आप में पूर्ण हो, जिसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में क्रिया का भाव निहित हो वाक्य है।

३.९.१. वाक्य के अंग

वाक्य के मुख्य रूप से दो भाग होते हैं - **उद्देश्य (कर्ता) विधेय (क्रिया)**

वाक्य में जिसके विषय में कुछ विधान किया जाता है उसे उद्देश्य कहते हैं। उद्देश्य के विषय में जो कुछ विधान होता है उसे विधेय कहते हैं। उदाः मेरे हाथ कभी खाली नहीं रहता। इस वाक्य में 'मेरा हाथ' उद्देश्य और 'कभी खाली नहीं रहता' विधेय है। कभी खाली नहीं रहता में 'नही रहता में' क्रिया मुख्य है और शेष उसका विस्तार है।

प्रायः एक वाक्य में एक कर्ता, एक क्रिया होती है। पर कुछ वाक्य ऐसे होंगे जिसके कर्ता और क्रिया तो, होते हैं, पर वक्ता का पूरा आशय प्रकट नहीं होता। ऐसे वाक्यों को उपवाक्य कहते हैं। उदाहरण - केलिए 'जब वे यहाँ पहूँचे'।

उपवाक्य दो तरह के होते हैं - प्रधान उपवाक्य और आश्रित उपवाक्य। आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के उधीन होते हैं। उदाहरणार्थ 'रामने कहा था कि वह कल आएगा'। इसमें 'राम ने कहा था' प्रधान उपवाक्य 'कि वह कल आएगा' - आश्रित उपवाक्य हैं।

परसपर संबन्ध रखनेवाले श्ब्दों को, जिनमें थोडा सा ही भाव प्रकट होता है उन्हें वाक्यार्थ कहते हैं। वाक्यांश में कर्ता और क्रिया का बन्धन नहीं है। इसमें केवल एक भावना रहती है।

३.९.२. वाक्य रचना

वाक्य रचना में चार बातें मुख्य है - पदक्रम (शब्द क्रम), अन्वय, लोप और आगम।

३.९.२.१. पदक्रम

इसका वाक्य में महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी में वाक्य में शब्दों का स्थान निश्चित है। इसमें प्रायः पहले कर्ता, बाद में कर्म और अंत में क्रिया आती है। जैसे – राम ने मोहन को मारा। इसके विपरीत अंग्रेज़ी में क्रिया बीच में तथा कर्म बाद में आती है। जैसे Ram killed Mohan

पदक्रम की दृष्टि से वाक्य दो प्रकार के है - एक तो वे हैं जिनमें पदों का स्थान निश्चित नहीं है। दूसरी तो ये है जिनमें पदों का स्थान निश्चित है। पहले प्रकार की भाषाओं में शब्दों के स्थान परिवर्तन से अर्थ बदलते नहीं शब्दों में विभक्ति लगी रहती है। ग्रीक, लेटिन, अरबी, फार्सी एवं संस्कृत इस प्रकार की है।

जैसे - संस्कृत में जैदः अमन अहनत्उ जैद ने अमन को मारा।

अमरं जैदः अहनत्उ अमर्को जैद ने मारा।

दूसरे प्रकार की भाषाएँ स्थान प्रधान भाषाएँ हैं। वाक्य में शब्द का स्थान बदलने से अर्थ बदल जाता है।

जैसे Zaid Killed Aman = जैद ने अमन को मारा

Aman Killed Zaid = अमन ने जैद को मारा

३.९.२.२. अन्वय

व्याकरणिक एकरूपता ही अन्वय है। हर भाषा के अन्वय के नियम अलग अलग है। इतना ही नहीं अलग अलग भाषाओं में अलग अलग चीजों का अन्वय होता है। जैसै संस्कृत में कर्ता - क्रिया में लिंग का अन्वय नही है। किन्तु हिन्दी में है।

रामः गच्छति - राम जाता है।

सीता गच्छति - सीता जाती है।

हिन्दी क्रिया कर्ता के अनुरूप है - मोहन गया। सीता गई।

हिन्दी में विशेषण में भी वचन तथा लिंग का अन्वय है।

अच्छा लड़का - നല്ല ആൺകുട്ടി

अच्छी लड़की - നല്ല പെൺകുട്ടി

३.९.२.३. लोप

वाक्य रचना में कभी कभी कुछ श्ब्दों का लोप होता है। लोप कर्ता, कर्म एव क्रिया का हो सकता है। जैसे – सुना है उसके भाई बंबई में है। (कर्ता का लोप)

- तुम भी खाओ (कर्म का लोप)

धोबी कुत्ता न घर का न घाट का (क्रिया का लोप)

३.९.२.४. आगम्

कभी आवश्यकता होने पर अतिरिक्त शब्दों का प्रयोग करते है। जैसे - 'कृपया बैठिए' में कृपया अतिरिक्त शब्द है।

३.९.३. वाक्यों के प्रकार

वाक्य रचना के प्रकार, व्याकरणिक संरचना, भाव या अर्थ आदि कई दृष्टियों से वाक्यों का वर्गीकरण हो सकता है। रचना एवं प्रयोग के आधार पर वाक्य चार प्रकार के होते हैं – अयोगात्मक, प्रश्लिष्ट योगात्मक, अश्लिष्ट योगात्मक और श्लिष्ट योगात्मक।

३.९.३.१. अयोगात्मक वाक्य

अयोगात्मक वाक्य में संबन्ध तत्व या प्रत्यय का योग नहीं होता। पदों के स्थान बदलने से शब्दों का पारस्परिक संबन्ध ही बदल जाता है। कभी कभी स्थान के बदलने से भी अर्थ

बदल जाता है। उदाहरण केलिए चीनी भाषा में - न्गो त नि का अर्थ है - मैं तुम को मारता हूँ।

नि त न्गो उ तुम मुझे मारते हो ?

३.९.३.२. प्रश्लिष्ट योगात्मक वाक्य

प्रश्लिष्ट योगात्मक वाक्य में वाक्य के सभी शब्द - संज्ञा, विशेषण, क्रिया सब - एक साथ मिल जाते हैं और एक वाक्य के स्थान पर एक बडा शब्द ही रह जाता है। यह समास प्रधान वाक्य है।

उदाः अमेरिका की चिरोकी भाषा में – नातेन उ लाओ, अमोखोल उ नाव, निन उ हम। तीनों के योग से बने वाक्य है – 'निधोलिनिन' जिसका अर्थ है – हमारे पास नाव लाओ।

३.९.३.३. अश्लिष्ट योगात्मक वाक्य

इन वाक्यों में प्रत्ययों की प्रधानता है। प्रत्ययों के द्वारा संबन्ध तत्व प्रकट किया जाता है। यह पूर्व, मध्य, अन्त एवं पूर्वान्त में प्रत्यय जोड़कर बनता है। उदाहरण केलिए बंटू भाषा में मध्य योगात्मक वाक्य दिखा सकते है।

सि - तन्दा = हम प्यार करते हैं।

सि - म - तन्दा = हम उसे प्यार करते हैं।

सि - ब - तन्दा = हम उन्हें प्यार करते हैं।

३.९.३.४. श्लिष्ट योगात्मक वाक्य

श्लिष्ट योगात्मक वाक्यों में विभक्तियों का प्राधान्य रहता है। इसमें विभक्तियों के मिलने पर भाषा में छोटे - मोटे परिवर्तन भी आ जाता हैं। उदाहरण केलिए अरबी भाषा में - यकतलु - वह मारता है।

३.९.४. व्याकरणिक संरचना की दृष्टि से वाक्य के भेद - सरल वाक्य और मिश्र वाक्य।

जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक ही विधेय रहता है तो उसे सरल वाक्य कहते हैं।

उदाः नौकर चावल लाता है।

जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य हो और, उसके आश्रित एक या अधिक उपवाक्य हो तो उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं

उदाः सब आदमियों से कह दो कि चलना होगा।

आश्रित वाक्य तीन प्रकार के होता हैं - संज्ञा विशेषण और क्रियाविशेषक वाक्य।

जिस आश्रित वाक्य का प्रयोग प्रधान वाक्य की किसी संज्ञा की जगह होता है तो उसे संज्ञा वाक्य कहते हैं।

उदा - मैं ने तुम्हारी शिकायत की कि यह बिलकुल झूठ है।

जब कोई आश्रित वाक्य प्रधान वाक्य किसी संज्ञा के विशेषण का काम आता है तो उसे विशेषण वाक्य कहते है।

उदाः विद्यार्थी उसी अध्यापक से डरते हैं, जो खूब मारते हैं। यहाँ जो खूब मारते हैं - विशेषण के रूप में आया है।

जो आश्रित वाक्य किसी क्रिया विशेषण का काम देता है उसे विशेषण वाक्य कहते हैं।

उदाः जब वर्षा होती है तब किसान प्रसन्न होते हैं। जिनमें दो अधिक सरल अथवा मिश्रित वाक्य परसपर निरपेक्ष रूप में मिलते हैं तो वे संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं।

उदाः मैं नौकरी करूँगा, पर आधा वेतन पहले लूँगा।

संयुक्त वाक्य मे वाक्य एक दूसरे पर आश्रित नहीं होते इसलिए उन्हें समानाधिकारण वाक्य कहते हैं। यह समानाधिकरण वाक्य समुच्चय बोधक द्वारा जुड़ होता है। समुच्चय बोधक के भेदो के अमुसार यह चार प्रकार के होते हैं।

१. संयोजक : स्नान से ही शरीर शब्द रहता है और सत्य से मन।

२. विभाजक : मैं ने कहा था, पर वह नही आया।

३. विकल्प सूचक : देश हितैषी या देशद्रोही कहलाओ।

४. परिणाम बोधक : आज मैं थका हूआ हूँ इसलिए खेल न सँकूगा।

३.९.५. भाव या अर्थ की दृष्टि से वाक्य के अनेक भेद हैं।

१. विधान सूचक : जिससे किसी बात का होना प्रमाणित हो उसे विधान सूचक कहते हैं।

उदाः भारत स्वतंत्र देश हैं।

२. निषेध सूचक : जो किसी विषय का अभाव सूचित करता है उसे निषेध सूचक कहते हैं।

उदाः आज पानी नहीं बरसा।

३. आज्ञा सूचक : जिसमें आज्ञा का बोध हो।

उदाः रोज़ अपना पाठ पढ़ो।

४. विस्मयादिबोधक : जो आश्चर्य, विस्मय आदि सूचित करती है उसे विस्मयादिबोधक कहते हैं।

उदाः वाह। वाह कितना अच्छा गाती है।

५. इच्छा सूचक : जिसमें इच्छा सूचित हो -

उदाः भगवान आप की रक्षा करें।

६. सन्देह सूचक : जिसमें सन्देह भावना प्रकट हो - शायद वह आज आये।

७. संकेतार्थ : जिसमें संकेत पाये जाते हैं वही संकेतार्थ वाक्य है।

८. प्रश्नार्थ : जिसमें प्रश्न का बोध हो

उदाः वह पत्र क्यो नहीं लिखता ?

३.९.६. क्रिया के होने और न होने के आधार पर वाक्य दो प्रकार के होते हैं -

क्रियायुक्त वाक्य और क्रिय विहीन वाक्य।

क्रिया युक्त वाक्य : जिसमें क्रिया हो, वही क्रियायुक्त वाक्य है। अधिकाँश वाक्य क्रिययुक्त वाक्य है। जैसे - मोहन पढ़ता है।

क्रिया विहीन वाक्यः जिसमें क्रिया न हो। समाचार पत्र के शीर्षकों, विज्ञापनों और लोकोक्तियों में ऐसे क्रियाविहीन वाक्य के प्रयोग होते है। जैसे - कुतबमीनार से कुदकर आत्महत्या, धोनी का कुत्ता न घर का न घाट का। रचना के आधार पर वाक्य के और भी कई भेद हैं - पूर्ण वाक्यात्मक, अपूर्णवाक्यात्मक, अन्तःकेन्द्रित और बहिष्केन्द्रित।

पूर्ण वाक्य में वाक्य केलिए अवश्यक सभी तत्व मौजूद होगा। अपूर्ण वाक्य में एक या अधिक तत्वों का लोप होता है। उदाहरण केलिए -

राम - मोहन, आज तुम घर जाओगे ?(पूर्ण)

मोहन - हाँ। (अपूर्ण)

३.१०. हिन्दी भाषा की अर्थपरक संरचना (Semantics)

भाषा के अर्थ पक्ष का वैज्ञानिक अध्ययन अर्थ विज्ञान में होता है। अर्थ भाषा की आत्मा है ; अर्थ के अध्ययन के बिना भाषा का अध्ययन पूर्ण नहीं होता।

किसी भी भाषिक इकाई (वाक्य, वाक्यंश,रूप, शब्द, मुहावरा आदि) को किसी भी इन्द्रीय द्वारा ग्रहण करने पर जो मानसिक प्रतीति होती है, वही अर्थ है।

३.१०.१. अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ

प्रत्येक शब्द का अर्थ होता है और यह अर्थ सर्वदा एक नहीं होता। देश काल और वातावरण के अनुसार अर्थ में भी परिवर्तन होता रहता है। उदाहरण केलिए पहले संस्कृत में 'आकाशवाणी' का अर्थ देववाणी था लेकिन अब इसका अर्थ परिवर्तन होकर 'रड़ियो' हो गया है। इस प्रकार आवश्यकतानुसार या परिस्थितिवश अर्थ में परिवर्तन होता रहता है।

भाषावैज्ञानिकों ने अर्थ परिवर्तन की तीन दिशाएँ निधारित की है - अर्थविस्तार, अर्थसंकोच और अर्थादेश।

३.१०.१.१. अर्थविस्तार

जब किसी शब्द का अर्थ सीमित क्षेत्र से निकल कर विस्तार पा जाता है, तो उसे अर्थविस्तार कहते हैं। उदाहरणार्थ 'तेल' शब्द को लिया जाय। संस्कृत में मूलतः 'तिल के रस' को ही तेल कहते थे। लेकिन अब यह शब्द सभी चीज़ो के तेल केलिए प्रयुक्त हैं। जैसे नारियल का तेल, सरसों का तेल, मिट्ठी का तेल, साँप का तेल, मछली का तेल आदि।

अर्थात् तेल के अर्थ का विस्तार हो गया। उसी प्रकार पहले 'गवेषण' का अर्थ था 'गो की एषणा' अर्थात् 'गाय की खोज', लेकिन अब किसी भी प्रकार की खोज 'गवेषण' है। 'वीणावादन में समर्थ' ही पहले 'प्रवीण' कहते थे, लेकिन आज 'किसी भी काम में निपुण' प्रवीण कहलाता था। पहले 'स्याही' का अर्थ था 'लिखने केलिए प्रयुक्त 'काले रंग द्रव पदार्थ' अब लिखने के काम आने वाला कोई द्रव पदार्थ 'स्याही' कहलाता है।

व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के भी अर्थ विस्तृत हो जाते हैं। विभीषण, सत्यवान, मंथरा, नारद, हिटलर, सावित्री आदि नामों का प्रयोग उन सभी केलिए होता है जो उनके जैसे आदतवाले हो।

३.१०.१.२. अर्थ संकोच

किसी भी शब्द का प्रयोग सामान्य विस्तृत अर्थ से हटकर विशिष्ट या सीमित अर्थ में होने लगाता है तो उसे अर्थ संकोच कहते हैं। उदाहरण केलिए 'मृग' शब्द को ले। पहले कोई भी जानवर को 'मृग' कहते थे, लेकिन आज वह हिरण' के अर्थ में सीमित हो गया है। पहले जिसका भरण पोषण हो वही 'भार्या' कहते थे, अब 'पत्नी' का समानार्थ है। चमकानेवाले सभी वस्तुओं, को 'नेत्र' कहते थे, लेकिन आज यह 'आँख' के लिए सीमित हो गया है। 'श्रद्धा' से करने लायक काम 'श्राद्ध' था, आज मृत्यु के बाद पितरों की तृप्ति के लिए करनेवाले कार्य को 'श्राद्ध' कहने लगा।

३.१०.१.३. अर्थादेश

भाव या साहचर्य के कारण कभी कभी शब्द के प्रधान अर्थ के साथ एक गौण अर्थ भी चलने लगता है। कालान्तर में प्रधान अर्थ लुप्त होकर गौण अर्थ का प्रचार होता है। इस प्रकार प्रधान अर्थ के लोप तथा गौण अर्थ के आगम को अर्थादेश कहते हैं। 'गँवार' शब्द इसकेलिए उत्तम उदाहरण है गँवार का मुख्य अर्थ है - गाँव का लड़का आशिक्षित एवं अनपढ़ होंगे। अतः धीरे यह 'असभ्य' का वाचक हो गया। उसी प्रकार 'वर' का अर्थ था श्रेष्ठ, अब 'दूल्हा' है। मुनि के व्रत केलिए पहले मौन कहते थे, अब अर्थ बन गया 'चुप्पी'।

इन परिवर्तनों में कभी कभी अर्थ का उत्कर्ष होता है, कभी अपकर्ष। अर्थात् शब्द पहले के अर्थ से उत्कृष्ट अर्थ में प्रयुक्त हो उसे अर्थापकर्ष कहते हैं और पहले के अर्थ से निकृष्ट अर्थ में प्रयुक्त हो तो उसे अर्थोपकर्ष कहते हैं।

(क) अर्थोत्कर्षः प्रयोग करते कोई शब्द अपने बूरे अर्थ से निकलकर अच्छे अर्थ ग्रहण करें तो उसे अर्थोत्कर्ष कहेंगे। 'साहस' शब्द पहले हत्या, चोरी आदि बुरे कार्यो को सूचित करते थे, अब तो इसका अर्थ हैं 'हिम्मत'। 'मुग्ध' शब्द पहले 'मूढ़' को सूचित करता था। आज प्रत्येक सुन्दर वस्तु को देखकर लीन होना 'मुग्ध' है। गोष्ठी का मूल अर्थ था 'गो के रहने का स्थान', अब विद्वानों की मंड़ली 'गोष्ठी' कहलाती है।

(ख) अर्थापकर्षः कोई भी शब्द उत्कृष्ट अर्थ को छोड़कर निकृष्ट अर्थ व्यक्त करे तो उसे अर्थापकर्ष कहेंगें। 'घृणा' का पुराना अर्थ 'दया' था, अब यह नफरत को सूचित करता है।

'गुरु' एवं 'महाराज' शिक्षक एवं 'शासक' को सूचित करते थे, अब स्थानीय गुण्डों को गुरु कहा जाता है तथा रसोइया को 'महाराज'। 'बाई' शब्द आदरणीय महिलाओं को सूचित करता था, अब 'वेश्या' केलिए भी प्रयुक्त होते हैं।

३.११. द्राविड़ परिवार की विशेषताएँ

द्राविड़ परिवार की प्रमुख भाषाएँ और क्षेत्र हैं तमिल (तमिलनाडु में) तेलुगु (आन्ध्राप्रदेश) कन्नड़ (कर्नाटक) और मलयालम (केरल में)। इसी परिवार में गोंडी (मध्यप्रदेश, ब्रुन्देलखंड) कुरुथ्व या ओराओं (बिहार, उडीसा) बाहुई (बलूचिस्तान) भाषाएँ भी हैं। इस परिवार की भाषाएँ आश्लिष्ट योगात्मक हैं। इनमें 'ए- ऍ, ओ- ऑ ह्रस्व और दीर्घ दोनों है। द्राविड़ परिवार की भाषाओं में युराल अलताई परिवार के तुल्य स्वर अनुरूपता है और अन्तिम व्यंजन के बाद अतिलघु 'अ' जोड़ा जाता है। दो वचन और तीन लिंग है। लिंग बोध केलिए पुरुष या स्त्री वाचक शब्द जोड़े जाते हैं। विशेषणों के रूप संज्ञा के अनुसार नहीं चलते हैं। विभक्तियों का काम परसर्ग या प्रत्ययों से लिया जाता है। इस परिवार की भाषाओं की क्रिया में कृदन्त रूपों की अधिकता है। कर्मवाच्य नही होता है। और मूर्धन्य (टवर्ग) ध्वनियों की प्रधानता है।मलयालम भाषा का उद्‌भव और विकास दक्षिण भारत की सुप्रधान चार भाषाओं में मलयालम का विकास परिणाम सबसे अन्त में माना जाता है। इसमें संस्कृत शब्दों की बहुलता है। संस्कृत प्रभावित बोलचाल की भाषा की एक अलग ही शैली का विकास हुआ जो मणिप्रवाल शैली के नाम से मानी जाती है। धीरे धीरे परिमार्जित भाषा के रूप में मलयालम भाषा का विकास हुआ।

मलयालम भाषा - साहित्य को उत्पत्ति के संबन्ध में सही और विश्वसनीय प्रमाण प्राप्त नही हैं। एल - वी रामस्वामि अययर अपने ग्रन्थ 'एवल्यूशन ओफ- मलयालम मारफलजी' में मलयालम भाषा की उत्पत्ति के बारे में कहते है कि मलयालम भाषा की उत्पत्ति के बारे में सुनिशचित तौर पर कुछ कहना मुश्किल है।

३.११.१. काल विभाजन

मलयालम भाषा के विकास की प्रवृत्तियों के आधार पर विकास के लंबे अन्तराल को तीन कालखण्ड़ो में विभक्त किया जाता है।

१. प्राचीनकाल (९ ई से १३ ई तक)

२. मध्यकाल (१४ वी सदि से १८ वी तक)

३. आधुनिक काल (१९ सदी से अब तक)

३.११.१.१. प्राचीन काल (९ ई से १३ ई तक)

मलयालम का यह संधिकाल है। इस खण्ड को भाषा में तमिल का प्रभाव स्पष्ट है। फिर भी इस समय तक आते - आते मलयालम भाषा एक स्वतन्त्र भाषा का रूप धारण किया था। प्राचीन काल के अन्तिम समय तक आते आते मलयालम तमिल से संस्कृत की गोदी में आ पड़ी। इस काल की भाषा में दो विभाग की रचनाएँ हुई हैं। भाषा स्वरूप के आधार पर रामचरित कृतियां, चंपू आदि संस्कृत के प्रभाव को स्पष्ट करती है।

३.११.१.२. मध्यकाल (९४ वीं सदी से १८ वी सदी तक)

मध्यकाल की मलयालम संस्कृत से प्रभावित है। भाषा के विकास में मध्यकाल का अपना महत्व है। इस काल की सबसे बड़ी उपलब्धि है ''मणिप्रवालम भाषा''। यह मलयालम और संस्कृत के योग से बनी हुई है। नये-नये विचारों और भावों को ठीक तरह से प्रकट करने को अभिव्यंजना शक्ति के अभाव से संस्कृत से कुछ शब्दों की ग्रहण किया जो अनिवार्य थे। बारहवीं सदी के बाद में ही मणिप्रवालम एक विशेष भाषा शैली के रूप में विकसित हुई।

३.११.१.३. आधुनिक काल (१९ वी, सदी से अब तक)

उन्निसवीं सदी से मलयालम का आधुनिक काल शुरु होता है। यह मलयालम का प्रगतिशील विकास का काल है। अंग्रेज़ी के प्रचार के कारण भाषा विकास के नये शिखरों को छूने लगा। समाचार पत्रों का आर्विभाव इस युग की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसके कारण मलयालम ज़्यादा अयोगात्मक एवं सरल हो गयी।

३.१२. मलयालम भाषा का भाषावैज्ञानिक परिचय

पारिवारिक वर्गीकरण में मलयालम द्राविड़ परिवार के अन्तर्गत आती है। अतः द्राविड़ परिवार की भाषाओं की सभी सामान्य विशेषताएँ मलयालम में भी विद्यमान है। आकृतिमूलक वर्गीकरण में मलयालम भाषा का स्थान योगात्मक भाषाओं के अन्तर्गत आता है। आगे मलयालम का ध्वनि वैज्ञानिक, रूप वैज्ञानिक, शब्द बैज्ञानिक, वाक्य वैज्ञानिक एव अर्थ वैज्ञानिक परिचय - प्रस्तुत किया जा रहा है।

३.१२.१. मलयालम भाषा की ध्वनि व्यवस्था

स्वर स्वनिम

मलयालम में दस मूलस्वर और दो संयुक्त स्वर पाए जाते हैं।

अ आ इ ई उ ऊ

അ ആ ഇ ഈ ഉ ഊ

ए ऍ ऐ ओ ऑ औ

എ ഏ ഐ ഒ ഓ ഔ

भाषाबैज्ञानिक दुष्टि से स्वरों का वर्गीकरण मुख्य रूप से जीभ का व्यवहृत भाग (നാവിന്റെ സ്ഥിതി) जिह्वा की उठने की स्थिति (നാവിന്റെ ഉയർച്ചയും താഴ്ചയും) मुँह की स्थिति (വായയുടെ ആകൃതി) और ओष्ठों की स्थिति (ചുണ്ടിന്റെ ആകൃതി അനുസരിച്ച്) के आधार पर किया जाता है।

३.१२.१.१. जिह्वा के उन्नत होनेवाले भाग के आधार पर स्वरों के तीन भेद है।

१. अग्रस्वर (മുൻസ്വരം) Front Vowel

उदा : ए, इ (എ, ഇ)

२. पश्च स्वर (പിൻസ്വരം) Back Vowel

उदा : उ, ओ (ഉ, ഒ)

३. मध्य स्वर (നടുസ്വരം) Mid Vowel

उदा : अ (അ)

३.१२.१.२. जीभ के उन्नत होने की या जीभ की ऊचाई की स्थिति के आधार पर स्वरों के चार भेद हैं।

१. उच्च स्वर (ഉന്നതസ്വരം) High Vowels

उदा : इ, उ (ഇ, ഉ)

२. मध्य स्वर (മദ്ധ്യസ്വരം) Mid Vowel

उदा : ए, ओ (എ, ഒ)

३. निम्न स्वर (നിമ്ന സ്വരം) Law Vowel

उदाः अ (അ)

३.१२.१.३. मुँह की स्थिति के अनुसार स्वरों के तीन भेद हैं।

१. संवृत स्वर (സംവൃതം) Closed Vowel

२. अर्द्ध संवृत (പകുതി ഉന്നതം) half high

३. विवृत (വിവൃതം) open Vowel

४. अर्द्ध विवृत (പകുതി വിവൃതം)

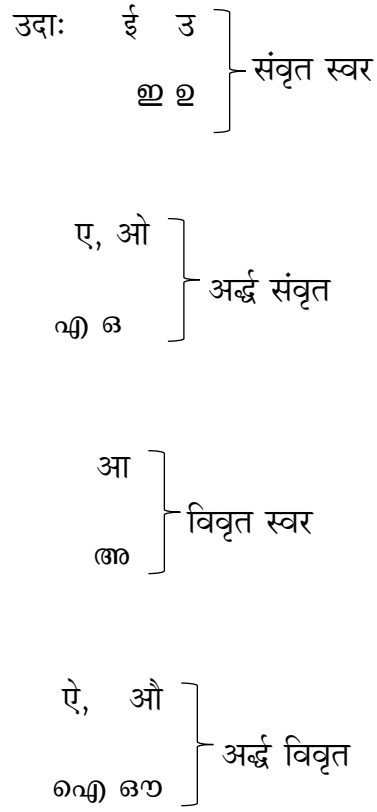

उदाः ई उ
ഇ ഉ
} संवृत स्वर

ए, ओ
എ ഒ
} अर्द्ध संवृत

आ
അ
} विवृत स्वर

ऐ, औ
ഐ ഔ
} अर्द्ध विवृत

३.१२.१.४. ओष्ठों की स्थिति के अनुसार. स्वरों के दो भेद हैं।

१. गोलित (വർത്തുളം) Rounded

उदाः उ ओ (ഉ ഒ)

२. अगोलित स्वर (അവർത്തുളം) unrounded

उदाः आ, ई, ए, (ആ ഇ എ)

३.१२.१.५. संयुक्त स्वर

मलयालम के उच्चारण में दो संयुक्त स्वर पाये जाते हैं। /ऐ/और/औ

ऐ - अइ (ഐ)

(औ) - अउ (ഔ)

३.१३. मलयालम के स्वर स्वनिमों का विवरण

സ്വരങ്ങൾ	നാവിന്റെ സ്ഥാനം	ജിഹ്വോന്നതി	വായയുടെ ആകൃതി	അധര ആകൃതി
അ ആ	നിമ്നം	പിൻസ്വരം	വിവൃതം	ആവർത്തുളം
ഇ ഈ	ഉന്നതം	മുൻസ്വരം	സംവൃതം	ആവർത്തുളം
ഉ ഊ	അർദ്ധ ഉന്നതം	പിൻസ്വരം	സംവൃതം	വർത്തുളം
എ ഏ	അർദ്ധ ഉന്നതം	മുൻസ്വരം	പകുതി സംവൃതം	ആവർത്തുളം
ഐ	നിമ്നത്തിൽ നിന്ന് ഉന്നതിയിലേക്ക്	മുൻസ്വരം	-	ആവർത്തുളം
ഒ ഓ	അർദ്ധ ഉന്നതി	പിൻസ്വരം	പകുതി സംവൃതം	ആവർത്തുളം
ഔ	നിമ്നത്തിൽനിന്ന് അർദ്ധ ഉന്നതിയിലേക്ക്	പിൻസ്വരം	-	വർത്തുളം
ഋ	-	പിൻസ്വരം	-	ആവർത്തുളം

३.१४. मानस्वर മാനസ്വരങ്ങൾ (Cardinal vowels)

1. i - (He, See) - ഇ (इ)

2. e - (get, any) - എ (ए)

3. ε - (leir, bird) – 'എ'കാരത്തിനും 'ഇ'കാരത്തിനും ഇടയിലുള്ള ഉച്ചാരണം 'ए' और 'इ' क नीच का उच्चारण।

4. χ - (Man, can) – या ⟶अ

5. a - (pass, card) – ആ आ

6. o - (hot, doll) - ഒ ओ

7. O - (lot) - ഓ ओं

8. U - put, look - ഉ (उ)

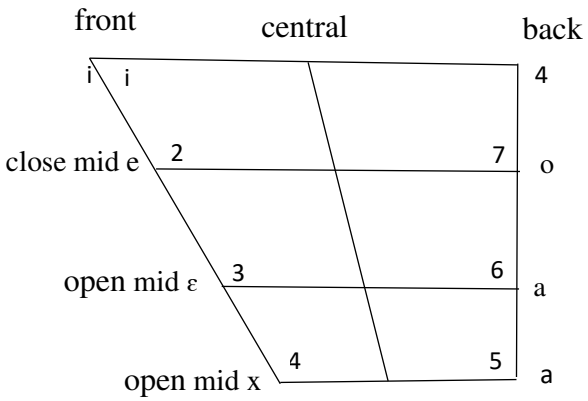

मानस्वर (മാനസ്വര ലംബകം)

३.१५. मलयालम व्यंजन स्वानिम व्यवस्था

फेफडों से निर्गत वायु जहाँ पर बाधित होती है, वह उस ध्वनि का स्थान कहलाता है। इस आधार पर व्यंजनो के भेद -

३.१५.१. तालव्य (താലവ്യം) palate

इन व्यंजनों का उच्चारण जिह्वां द्वारा कठोर तालु का स्पर्श करने से होता है।

जैसेः ച, ഛ, ജ, ഝ, ഞ, യ, ശ

च, छ, ज, झ, ञ, थ, श

३.१५.२. मृदु तालव्य (soft palate)

जैसेः ക, ഖ, ഗ, ഘ, ങ, ഹ

क, ख, ग, घ, ङ, ह

३.१५.३. दन्त्य ദന്ത്യം (Dental)

इनका उच्चारण जिह्वा नोक दूसरा ऊपर के दाँतों का स्पर्श होने पर होता है।

जैसेः ത, ഥ, ദ, ധ, ന, സ

त, थ, द, ध, ऩ, स

३.१५.४. वर्त्स വർത്സ്യം (Alveolar)

जिह्वा नोक द्वारा वर्त्स स्पर्श करने से उच्चारित ध्वनियाँ।

जैसे - ഠ, ന, ല, ര

ऱ, ऩ, ल, र

३.१५.५. मूर्धन्य മൂർദ്ധന്യം (Retroflex)

जिह्वा नोक द्वारा कठोरतालु के आगे मूर्धा के भाग पर जिह्वा नोक के स्पर्श से उच्चरित ध्वनियाँ।

जैसे - ട, ഠ, ഡ, ഢ, ണ, ഴ, ഷ, ള, റ

ट, ठ, ड, ढ ण, ष, ष, ल, र

३.११.६. ओष्ठ्य ഓഷ്ഠ്യം (Bilabial)

इन व्यंजनों के उच्चारण में दोनों ओष्ठ क्रियाशील रहते हैं।

जैसे, प, फ, ब, भ, म

പ, ഫ, ബ, ഭ, മ

३.१६. वायु प्रवाह के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरणः

३.१६.१. स्पर्श സ്പർശങ്ങൾ (Stops)

व्यंजनों के उच्चारण में दो विभिन्न अंगों में स्पर्श या स्फोट होते हुए उच्चरित ध्वनियाँ।

उदाः ക, ച, ട, ത, പ

क, च, ट, त, प

३.१६.२. संघर्षी ഘർഷം (fricative)

व्यंजनों के उच्चारण में दो विभिन्न अंग जब उच्चारण स्थान के अत्यन्त निकट आकार घर्षण के साथ वायु निकलती है।

उदाः ഹ, ശ, ഷ, സ

ह, श, ष, स

३.१६.३. अनुनासिक അനുനാസികം (Nasal)

मुख विवर में वायु मार्ग बंद होकर नासिका विवर से वायु बाहर निकल जाती है तो अनुनासिक व्यंजन उच्चरित होती है।

उदाः ങ, ഞ, ണ, ന, ന, മ

ङ, ञ, ण, न, ऩ, म

३.१६.४. पार्श्विक പാർശ്വികം (lateral)

जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा वर्त्स की ओर उठकर उसका पार्श स्पर्श करती है तो वह पार्श्विक व्यंजन हैं।

जैसे, ള, ല

ळ, ल

३.१६.५. प्रवाही പ്രവാഹി (continuant)

उदाः य, व, ष़

യ വ ഴ

३.१६.६. उत्क्षिप्त ഉൽക്ഷിപ്തം (Flap)

तालु को झटके से मारकर नीचे आ जाता है तो उत्क्षित व्यंजन है।

उदाः ര, റ

र, र

३.१७. मलयालम भाषा का व्यंजन स्वनिम

മലയാളത്തിലെ വ്യഞ്ജനസ്വനിമങ്ങൾ

	സനധാനം	മൃദു താലവ്യം	താലവ്യം palate	മൂർദ്ധന്യം Retro flex	വർത്സ്യം Alveolar	ദന്ത്യം Dental	ഓഷ്ഠ്യ ദന്ത്യം Dental	ഓഷ്ഠ്യം Bila Bial	
വ്യഞ്ജനം व्यंजन	ഖരം	ക	ച	ട	റ	ത	-	പ	6
	അതിഖരം	ഖ	ഛ	ഠ	-	ഥ	-	ഫ	5
	മൃദു	ഗ	ജ	ഡ	-	ദ	-	ബ	5
	ഘോഷം	ഘ	ഝ	ഢ	-	ധ	-	ഭ	5
	അനുനാസികം	ങ	ഞ	ണ	ന	ന	-	മ	6
	പ്രവാഹി	-	യ	ഴ	-	-	വ	-	3
	ഘർഷം	ഹ	ക	ഷ	-	സ	-	-	4
	പാർശ്വികം	-	-	ള	ല	-	-	-	2
	ഉൽക്ഷിപ്തം	-	-	റ	റ	-	-	-	2

३.१८. मलयालम भाषा का रूप वैज्ञानिक सन्दर्भ

रूप विज्ञान (രൂപിമവിജ്ഞാനം)

भाषा या वाक्य की लघुतम सार्थक इकाई जो अर्थयुक्त है वह रूपिम है। इसका वैज्ञानिक अध्ययन और विश्लेषण रूप विज्ञान में होता है।

A morph is the phonetic realization of a morphame, a formal unit with a physical shape.

३.१८.१. प्रयोग की दृष्टि से मलयालम के रूपिम मुख्यतः दो प्रकार के होते है

(i) स्वतंन्त्र रूपिम (free morpheme)

(ii) आश्रित रूपिम (Bound morpheme)

३.१८.२. स्वतन्त्र रूपिम (സ്വതന്ത്രരൂപിമം)

स्वतन्त्र रूप से अर्थ बोध करनेवाले रूपिम को स्वतन्त्र रूपिम कहते हैं।

free morphemes are can stand on there as an independent words bound

Tour ടൂർ

vehicle വാഹനം

३.१८.३. आश्रित रूपिम (ആശ്രിത രൂപിമം)

जिसका स्वतन्त्र प्रयोग नही वह आश्रित या बद्ध रूपिम है।

Bound morphemes are cannot normal stand alone, but it is typically attached to another.

उदाः (रूपिम)

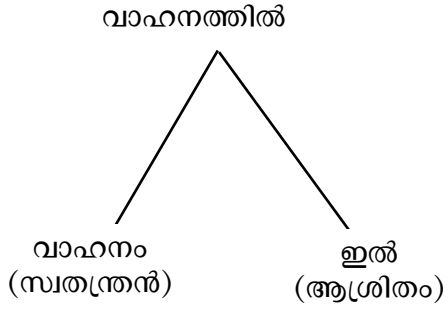

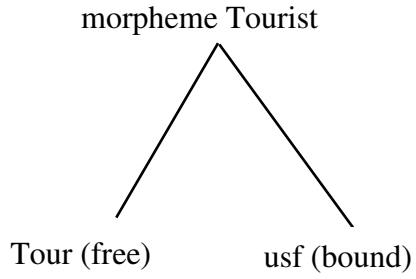

३.१८.४. उपरूप या संरूप (Allomorph)

रूपिमों के अर्थ उसके सन्दर्भो पर ही निभर है। कभी कभी रूपिमों को रूपभेद दिखाई देता है। उदाहरण के लिए संबन्धिका विभक्ति प्रत्यय 'ഉടെ, ന്റെ'। ये दोनों एक ही रूप का भेद हैं। ये परस्पर पूरक भी है। इस प्रकार एक ही प्रकार के रूप के उपरूपों को (ഉപരൂപങ്ങൾ) उपरूप कहते है।

Allomorph is phonologically distinct variants of the same morpheme

उदाः അവന്റെ (അവൻ + ന്റെ) वह + का ⟶ उसका

അവളുടെ (അവൾ + ഉടെ) वह + की ⟶ उसकी

यदि कई रूप समानार्थी हो, एक ही प्रकार के रचना में आये और परिपूरक वितरण में हो तो उन सबको एक ही रूपिम के उपरूप माना जाता है।

३.१९. मलयालम भाषा के प्रत्यय (മലയാള ഭാഷയിലെ പ്രത്യയങ്ങൾ)

प्रत्यय (പ്രത്യയങ്ങൾ) (Afflexes)

स्वतंन्त्र रूपिमों के अर्थ में भिन्नता लाने के लिए आश्रित रूपिमों का प्रयोग करते हैं।

Afflixation is the process off attaching an infection or more generally, a bound morpheme to a word. This can occur at the beginning or end and occasionally in the middle of a word form.

३.१९.१. मलयालम भाषा की सभी प्रत्यय आश्रित रूपिम है। इसके अनुसार मुख्यतः इन्हें तीन प्रकार के भेद हैं।

१. परप्रत्यय (suffix)(പരപ്രത്യയം)

२. पूर्व प्रत्यय (prefix) (പുരപ്രത്യയം)

३. मध्य प्रत्यय (Infix) (അന്തഃപ്രത്യയം)

परप्रत्यय (പരപ്രത്യയം)

स्वतन्त्र रूपिमों के बाद प्रयोग करते है।

उदाः കുട്ടി + കൾ = കുട്ടികൾ (बच्चे)

അവർ + ഉടെ = അവരുടെ (उनके)

पूर्व प्रत्यय (പുരപ്രത്യയം)

उदाः അനീതി - അ + നീതി (अनीति)

അപ്രിയം - അ +പ്രിയം (अप्रिय)

സസുഖം - സ + സുഖം (ससुख)

मध्यप्रत्यय (അന്തഃപ്രത്യയം)

उदाः പ്രചരണം - പ്രചാരണം

३.२०. मलयालम भाषा का शब्द वैज्ञानिक सन्दर्भ

भाषा के अर्थ पक्ष के वैज्ञानिक अध्ययन अर्थ विज्ञान है (sematics) शब्दों के प्रयोग के भिन्नता के आधार पर अर्थ कई प्रकार के होते हैं।

१. अभिधार्थ - जिनसे अपने मुख्य या साधारण अर्थ का बोध होतो है।

उदाः പക്ഷി (पक्षी)

പശു (गाय)

२. लक्ष्यार्थ किसी प्रयोजन के लिए मुख्यार्थ से संबन्ध अर्थ का बोध हो।

उदाः ഗജാനനൻ (ഗണപതി) गजानन।

जैसे - लड़का शेर है।

३. व्यंग्यार्थः वे शब्द होते है न तो मुख्य अर्थ लिया जाता है न लाक्षणिक बल्कि कोई गूढ़ या सांकेतिक अर्थ होता है।

उदाः കഴുത (വിഡ്ഢി)

३.२०.१. अर्थ के आधार पर मलयालम शब्दों का वर्गीकरण

१. अनेकार्थ ബഹുവാർത്ഥത (polysemy)

उदाः കെട്ട് क्रिया धातु के लिए अनेकार्थ हैं।

വീട്, കല്ല്യാണം

घर, शादी

२. पर्यायवाची തുല്യാർത്ഥത (synonym)

उदाः സൂര്യൻ (सूरज)

(ദിവാകരൻ, അർക്കൻ, ആദിത്യൻ)

३. विपरीतार्थ വിപരീതാർത്ഥത (Antonymy)

उदाः ശരി x തെറ്റ്

ചൂട് x തണുപ്പ്

३.२०.२. अर्थ परिवर्तन की दिशाएँः

मलयालम भाषा में अर्थ परिवर्तन की पाँच दिशाएँ निर्धारित की है।

१. अर्थ संकोच (അർത്ഥസങ്കോചം)

किसी भी शब्द का प्रयोग विशिष्ट या सीमित अर्थ में होने लगता है।

उदाः 'കുടി' शब्द का अर्थ 'पीना' अर्थ में कहते थे लेकिन आज यह 'शराब पीना' के लिए सीमित हो गया है।

२. अर्थ विकास (അർത്ഥവികാസം)

जब किसी शब्द का अर्थ सीमति क्षेत्र से निकलकर विस्तार पा जाता है तो उसे अर्थ विकास कहते हैं।

उदाः പലഹാരം (ഫലഹാരം)

शब्द का अर्थ 'फुलखाना' अर्थ में कहते थे लेकिन अब उसका अर्थ विशालरूप में प्रयोग करते है।

३. अर्थादेश (അർത്ഥാദേശം)

भाव या साहचर्य के कारण कभी-कभी प्रधान अर्थ के साथ एक गौण अर्थ भी चलने लगता है।

उदाः 'അവിശ്വാസി' अर्थ में प्रयोग करनेवाला नामक शब्द 'मरुभूमि में रहनेवाला' शब्द से आया है।

४. अर्थोत्कर्ष (അർത്ഥോൽക്കർഷം)

प्रयोग करते -करते कोई शब्द अपने बुरे अर्थ से निकलकर अच्छे अर्थ ग्रहण करते है तो अर्थोत्कर्ष है।

उदाः 'ഓതുക' शब्द को अर्थ बोलना है। लेकिन आज हिन्दु और मुसलमान लोग वेदोच्चारण के लिए प्रयोग करते है।

५. अर्थापकर्ष (അർത്ഥാപകർഷം)

कोई भी शब्द उत्कृष्ट अर्थी को छोड़कर निकृष्ट अर्थ व्यक्त करे तो उसे अर्थापकर्ष कहेगा।

उदाः 'പൂജ്യം' शब्द का अर्थ (പൂജിക്കപ്പെട്ടവൻ) संपूज्य था। लेकिन आज 'शून्य' रूप में अर्थोपकर्ष हो गया है।

६. अर्थ सादृश्य (അർത്ഥസാദൃശ്യം)

उदाः പൊന്ന് - പൊന്നോമന

മുള്ള് - മുള്ള് വാക്ക്

७. अर्थ सामीप्य (അർത്ഥസാമീപ്യം)

उदाः മുഖം → താടി

मुख के एक भाग है ठोड़ी। लेकिन 'ठोड़ी लगना' अर्थ में प्रयोग करते है।

८. अर्थात्तिशय (അർത്ഥാതിശയം)

उदाः 'ദീനം' साधारण अर्थ में बीमार है। लेकिन वसूरी के लिए प्रयोग करते समय अर्थातिशय होता है।

९. अर्थन्यून (അർത്ഥന്യൂനം)

जो मान्य नही है। उसकेलिए प्रयोग करते समय अर्थ न्यून होता है। उदाः മാന്യൻ - മാന്യനല്ലാത്ത ആളുകൾക്ക് വേണ്ടി ഉപയോഗിക്കുമ്പോൾ

३.२१. मलयालम भाषा की वाक्य संरचनाः

वाक्य को सार्थक शब्दों का समूह मानते है जो भाव को व्यक्त करने की दृष्टि से अपने आप से पूर्ण हो। सी. वी भट्टतिरि के अनुसार 'एक वाक्य एक शब्द या वाक्यांश है जो एक विचार व्यक्त करता है'।

वाक्य के मुख्य रूप से दो भाग होते हैं -उद्देश्य (कर्ता) और विधेय (क्रिया) वाक्य में जिसके बारे में कुछ विधान किया जाता है उसे उद्देश्य कहते हैं।

उदाः राम ने रावण को मारा।

उद्देश्य के विषय में कुछ विधान होता है उसे विधेय कहते है।

प्रायः एक वाक्य में एक कर्ता, एक क्रिया होती है। पर कुछ वाक्य ऐसे होते है जिसके कर्ता और क्रिया तो होते हैं पर वक्ता का पूरा आश्रय प्रकट नही होता। ऐसे वाक्यों को उपवाक्य कहते है।

वाक्यों के प्रकार (വാക്യവിഭാഗങ്ങൾ)

वाक्य रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं।

१) सरल वाक्य (Simple Sentence)

ഉദാ: കുട്ടി ഓടി, അവൾ വന്നു

२) संयुक्त वाक्य (Complex Sentence)

ഉദാ: മഴ പെയ്താൽ വൃക്ഷലതാദികൾ തളിർക്കും.

३) महावाक्यम (Compound Sentence)

ഉദാ: പലരും നാടുഭരിക്കും എന്നാലും കോരന് കഞ്ഞി കുമ്പിളിൽ തന്നെ.

चौथा अध्याय

हिन्दी सीखनेवाले मलयालम भाषा-भाषी छात्रों की भाषावैज्ञानिक त्रुटियाँः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।

४.१. हिन्दी सीखनेवाले मलयालम भाषा-भाषी छात्रों के उच्चारण संबंधी त्रुटियाँ

बहुभाषी विश्व समुदाय में भाषाओं की विवधता एवं उसकी विशिष्टताओं का हमेशा अध्ययन विश्लेषण आवश्यक रहा है। भाषा परिवर्तन शील है। इससे स्वन रूप, शब्द, वाक्य एवं अर्थ का समय समय पर अध्ययन अपेक्षित हो जाता है। भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन महत्वपूर्ण माना जाता है। इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर दो या दो से अधिक भाषाओं के व्यतिरेकी तत्वों का अध्ययन भी संभव है। भाषा-शिक्षण एवं अनुवाद के सन्दर्भ में व्यतिरेकी अध्ययन का महत्वपूर्ण स्थान है।

भारत बहुभाषी देश है। भारत के प्रमुख भाषाओं में हिन्दी और मलयालम लोकप्रिय और परिमार्जित भाषाएँ हैं। राजभाषा एवं संपर्क भाषा होने के कारण पूरे भारत में विशेषकर हिन्दीतर भाषी प्रदेशों में भी हिन्दी का प्रचार प्रसार, अध्ययन-विश्लेषण स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बिलकुल वैज्ञानिक ढंग से हो रहा है। भारत के सुदूर दक्षिण केरल में भी दूसरी भाषा के रूप में स्कूलों से ही हिन्दी सिखायी जाती है।

आज केरल में हिन्दी का मलयालम के बराबर सब कहीं प्रयोग होता है। हिन्दी साहित्य एवं भाषा पर अध्ययन अनुसंधान कॉलेज और विश्वविद्यालयों में हो रहा है। हिन्दी

भाषा के विकास में केरल का योगदान विशेषरूप से सशहनीय है। स्कूल कक्षाओं में हिन्दी दूसरी भाषा के रूप में सिखायी जाती है। मलयालम भाषी छात्र-छात्राएँ हिन्दी सीखते समय उन पर मातृभाषा मलयालम का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। मलयालम और हिन्दी का व्यतिरेकी अध्ययन करने पर भाषा संबंन्धी त्रृटियों का पता चलता है। दूसरी भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में सेलिंगर और अन्य भाषावैज्ञानिकों ने काफी अध्ययन किया है। इस सन्दर्भ में अन्तरभाषा की परिकल्पना बिलकुल सार्थक रहता है।

मलयालम भाषी हिन्दी सीखनेवाले छात्र-छात्राओं में पायी जानेवाली भाषावैज्ञानिक त्रुटियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास आगे किया जा रहा है। इसके लिए केरल के विभिन्न स्कूलों के विशेषकर जिला कालिकट के हिन्दी सीखनेवाले छात्र-छात्राओं को प्रश्नावली देकर सर्वक्षण मैं ने किया है। इसके आधार पर मैं ने प्रस्तुत अध्ययन किया है।

स्वन, रूप, शब्द, वाक्य आदि भाषा की विभिन्न इकाइयों के स्तर पर और अन्य भाषावैज्ञानिक तत्वों के आधार पर मैं ने अध्ययन किया है। यहाँ सबसे पहले हिन्दी सीखनेवाले मलयालम भाषा-भाषी छात्र छात्राओं में स्वन स्तर पर जो त्रुटियाँ होती हैं इस पर आगे विचार किया जा रहा है।

४.१.१. हिन्दी और मलयालम स्वर स्वानिमों का व्यतिरेकी विश्लेषण

हिन्दी भारोपीय परिवार की भाषा है और मलयालम द्राविड़ परिवार की। इस कारण ध्वनियों के उच्चारण में काफी व्यतिरेक दिखाई देती है। हिन्दी भाषा में दस स्वर स्वनिम है

और मलयालम में बारह स्वर स्वनिम। दोनों भाषाओं के स्वर स्वनिमों का व्यतिरेकी विश्लेषण आगे किया जा रहा है।

४.१.२. हिन्दी सीखनेवाले मलयालम भाषा भाषी छात्रों की स्वर स्वन संबन्धी त्रुटियाँ

४.१.३. हिन्दी भाषा के /ए/ऍ/ और मलयालम भाषा के എ, ഏ

हिन्दी भाषा में दस स्वर स्वनिम है और मलयालम में बारह स्वर/यानी मलयालम के /എ/ /ഏ/ /ऍ/ /ए/ अलग अलग स्वनिम है। हिन्दी में /ऍ/ स्वनिम जो ह्रस्व है लेकिन उसका दीर्घ स्वनिम [ए] सहस्वन के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

/ऍ/ - ह्रस्व, अर्द्ध संवृत अनेकाक्षर शब्दों में 'ह' के पहले।

जैसेः मेहमान

चेहरा

मेहन्दी

सेहरा

[ए] - दीर्घ, अर्द्ध संवृत - अन्यत्र

जैसेः केरल

प्रत्येक

अनेक

विवेक

हिन्दी पढ़नेवाले मलयालम भाषी - प्रस्तुत नियम से परिचित नहीं। दूसरी बात यह है कि [ऍ] ह्रस्व स्वन का बहुत कम सन्दर्भों में प्रयुक्त होता है। अतः मलयालम भाषी हिन्दी /ए/ ध्वनियों का प्रयोग सभी सन्दर्भों में दीर्घ रूप में करते हैं। वे /ऍ/ (ह्रस्व) /ए/ (दीर्घ) संबन्धी हिन्दी के नियम से परिचित नही/यानी अनेकाक्षर शब्दों में जब /ए/ ध्वनि /ह/ के पूर्व आती है तो उसका उच्चारण ह्रस्व होता है।

(देखिए परिशिष्ट 'क' उच्चारण के लिए दिए गए शब्द)

४.१.४. हिन्दी भाषा के /ऐ/ और मलयालम भाषा के /ഐ/ स्वन

हिन्दी भाषा के /ऐ/ अलग स्वनिम है। इसका सहस्वन है [ए] [ऐ]

/ए/ - अर्धसंवृत, ह्रस्व है।

जौसे - कैसे, वैसे

/ऐ/ - दीर्घ, अर्द्ध विवृत है।

भाषा के /ऐ/ का प्रयोग केवल /य/ के पहले होता है - जैसे, तैयारी, ऐयारी

लेकिन मलयालम भाषा के /ഐ/ /ऐ/ स्वन हर कहीं /ऐ/ होता है।

मलयालम भाषा के प्रभाव के कारण छात्र हर कहीं /ऐ/ /ഐ/ का प्रयोग करता है जो /ऐ/ का सहस्वन है।

४.१.५. हिन्दी भाषा के /ओॅ/ /ओ/ और मलयालम भाषा के /ഒ/ /ഓ/स्वन

हिन्दी भाषा में /ओ/ स्वनिम है /ओ/ /ओ/ सहस्वन है। लेकिन मलयानम भाषा में /ओ/ /ഒ/ (ह्रस्व) और ओ (ഓ) दीर्घ अलग अलग स्वनिम है। अतः मलयालम भाषी हिन्दी /ओ/ ध्वनियों का प्रयोग सभी सन्दर्भों में दीर्घ रूप में करते हैं /वे/ /ओ/ ह्रस्व और /ओ/ दीर्घ संबन्धी हिन्दी में निम्नलिखित नियम से परिचित नही है। यानी हिन्दी में अनेकाक्षर शब्दों में जब (ओ) ध्वनि /ह/ स्वन के पूर्व आती है तो उसका उच्चारण ह्रस्व होता है।

जैसे : कोहरा

मोहरा

दोहरा

दीर्घ /ओ/ अन्यत्र।

जैसे : मोती

मोल

मोरनी

मोमबत्ती

४.१.६. हिन्दी भाषा के /औ/ और मलयालम भाषा के /ഔ/

/औ/ - ह्रस्व, अर्द्ध विवृत

हिन्दी भाषा के /औ/ का उच्चारण अनेकाक्षर शब्दों में /औ/ के बाद यदि /व/ स्वन आ जाए तो उसका उच्चारण (औ) हो जाता है।

अन्यत्र /ओ/

जैसे : कौवा

मलयालम भाषी मातृभाषा के प्रभाव के कारण सब कहीं 'औ' का उच्चारण ह्रस्व अर्द्ध विवृत रूप में करता है।

जैसे : सौभाग्य, औषध

सौन्दर्य, औरत

४.१.७. हिन्दी भाषा के /अ/ स्वन हिन्दी भाषा के /अ/ स्वन के दो सहस्वन है (अ) (ए)।

अः ह्रस्व, अर्द्ध विवृत

हिन्दी भाषा में /अ/ स्वन अनेकाक्षर स्वरों में /ह/ के पहले आए तो इसका उच्चारण /ए/ होता है।

जैसे : कहना

पहना

पहले

अन्यत्र /अ/ का ही प्रयोग होता है।

जैसे : कम

पर

चल

नल।

४.२. व्यंजनों के उच्चारण संबन्धी व्यतिरेकी विश्लेषण

४.२.१. /ड/ /ढ/ (ड़) (ढ़) ध्वनियों का व्यतिरेकी विश्लेषण

हिन्दी में /ड/ /ढ/ उक्षिप्त ध्वनियाँ है। और (ड़) (ढ़) सहस्वन के रूप में प्रयुक्त होता है। /ड/ /ढ/ उक्षिप्त घोष स्वानिम है जो अधिकांश शब्दों के प्रारंभ में प्रयुक्त होते हैं।

जैसे:	डमरू	ढेर
	डगमग	ढक्कन
	डोली	ढाँचा
	डग	ढोग

४.२.२. (ड़) और (ढ़)

हिन्दी पढ़ने वाले मलयालम भाषी इन सहस्वनों से अपरिचित है। अतः भाषा प्रयोग और उच्चारण में त्रुटियाँ होते हैं।

	सही	गलत
जैसेः	लड़का	लडका
	भड़कना	भडकना
	पढ़ाई	पढाई
	पीढ़ी	पीढी

४.२.३. /न/ (ऩ) ध्वनियों का व्यतिरेकी विश्लेषण

हिन्दी सीखनेवाले मलयालम भाषी के हिन्दी अनुनासिक में सबसे अधिक अस्वाभाविकता वर्त्स /न/ के प्रयोग में परिलक्षित होता है।

हिन्दी में /न/ - वर्त्स ध्वनि है। लेकिन मलयालम में /न/ का उच्चारण दन्त्य है। मलयालम में /न/ का एक सहस्वन भी है वह दन्त्य है। जो मलयालम भाषी के उच्चारण में त्रुटियाँ पहूँचाने में कारण बन जाता है।

(ऩ)
(ന) } दन्त्य नासिक्य और घोष स्वन है जो शब्दों के प्रारंभ में प्रयुक्त होता है।

जैसेः നനയ്ക്കുക (ऩनक्क्युक)

നാരായണൻ (ऩरायणन)

നാടകം (ऩाटकम)

प्रस्तुत दन्त्य स्वन का अंकन हिन्दी में (ऩ) का प्रयोग होता है।

(ऩ)
} वर्त्स स्वन है / अन्यत्र प्रयुक्त होते है।
(ന)

इस प्रकार उच्चारण संबन्धी व्यतिरेक के कारण हिन्दी सीखनेवाले मलयालम भाषी हिन्दी में /न/ (वर्त्स) का प्रयोग दन्त्य (ऩ) रूप में करता है। इससे त्रुटियाँ होती हैं।

४.४. रूप संबन्धी त्रुटियाँ

मलयालम श्लिष्ट योगात्मक भाषा है और हिन्दी अशिलिष्ट योगात्मक भाषा है। हिन्दी अपने विकास की गति में शिलिष्टता से अस्लिष्टता की ओर बढ़ रही है। अतः संबन्ध तत्व के रूप में अधिकांश सन्दर्भों में हिन्दी में स्वतन्त्र रूपिमों का प्रयोग होता है। मलयालम में उसके स्थान पर प्रत्ययों का प्रयोग चलता है। यह व्यतिरेक त्रुटियों का कारण बन सकते हैं।

जैसेः गाड़ी में (हिन्दी)

വണ്ടിയിൽ (मलयालम)

रास्ते में (हिन्दी)

വഴിയിൽ (मलयालम)

४.४.१. स्वतन्त्र रूपिम 'ने' का व्यतिरेकी विश्लेषण

हिन्दी में 'ने' एक स्वतंत्र रूपिम है। जो कर्ता के साथ सकर्मक भूतकाल में प्रयुक्त होता है। इसकेलिए कुछ अपवाद तो अवश्य है। मलयालम में कर्ता के साथ 'ने' स्वतन्त्र रूपिम का प्रयोग कहीं भी नही होता है।मलयालम भाषा में 'ने' परसर्ग ऐसा तो है ही नही। इसलिए प्रयोग संबंधी जानकारी मलयालम भाषी को नही है। दूसरी भाषा के रूप में हिंदी सीखते समय मलयालम भाषी को 'ने' नियम सीखना पडता है। अतः त्रुटियों का होना सहज बात है।

जैसेः राम रोटी खाया (नियमों की अज्ञता)

राम ने रोटी खाया (उपनियमों की अज्ञता)

(देखिए परिशिष्ट)

४.४.२. 'ने' रूपिम और 'को' रूपिमों का व्यतिरेकी विश्लेषण

वाक्यों में कर्ता के साथ 'ने' रूपिम और कर्म के साथ 'को' रूपिम आने से क्रिया पुल्लिंग एक वचन में होता है। लेकिन मलयालम भाषा में ऐसा कोई विशेष नियम नही है। यानी हिन्दी सीखनेवाले मलयालम भाषी इस उपनियम से अपरिचित है। अतः त्रुटियाँ करते हैं।

जैसेः राज़ी ने राजू को पकड़ी। (गलत प्रयोग)

माँ ने उण्णी को खिलायी।

४.४.३. शून्य रूपिम का व्यतिरेकी विश्लेषण

हिन्दी में ऐसे बहुत सारे शब्द है जिनके एकवचन और बहुवचन रूपों में अन्तर दृष्टिगत नही होता है। लेकिन मलयालम में उसके स्थान पर अन्तर दिखाई देता है। यह व्यतिरेक त्रुटियों का कारण बन सकते हैं।

जैसेः	एकवचन	बहुवचन
	जय	जय
	मान	मान
	घर	घर

४.४.४. स्वतन्त्र रूपिम में, पर संबन्धी व्यतिरेकी विश्लेषणः

मलयालम में परसर्ग के रूप में ഇൽ, കൽ अर्थ में प्रयुक्त करता है। जहाँ हिन्दी में, पर स्वतंत्र रूपिमों के रूप में प्रयुक्त करता है। मलयालम भाषी छात्र इस प्रयोग से अपरिचित है।

जैसेः	അച്ഛൻ വീട്ടിലുണ്ട്	पिताजी घर पर है।
	മെത്തയിൽ കിടക്കുന്നു	बिस्तर पर लेटता है
	പടിക്കൽ നിൽക്കുന്നു	दरवाज़े पर खड़ा है।

'में' 'पर' के लिए हिन्दी का अपना प्रयोग है। जैसे उपनियमों के अज्ञता के कारण सर्वक्षण में त्रुटियाँ देखने की मिली हैं।

४.४.५. संबन्ध कारक का, के, की संबन्धी व्यतिरेकी विश्लेषण

मलयालम में का, के, की विभक्ति प्रत्यय के रूप में /ൻ്റെ, ഉടെ, ഉള്ള, ലെ/ अर्थ में प्रयुक्त करता है। हिन्दी में का, के, की का प्रयोग स्वतंत्र रूपिम के रूप में प्रयुक्त करता है। हिन्दी भाषा में लिंग वचन के अनुसार का, के, की परसर्ग बदलता है। यह स्थिति में भी त्रुटियाँ होती है। जहाँ स्वतंत्र रूपिमों का प्रयोग मलयालम भाषी छात्रों के लिए सुपरिचित नहीं है। अतः मलयालम भाषी का, के, की प्रयोग से त्रुटियाँ करते है।

जैसेः राम का घर

रोश्नी के पिल्ले खेल रहे है।

बंदर की पूँछ लंबी होती है।

मेरे दो आँखे हैं।

उसके दो बहिनें हैं।

उपनियमो के अज्ञता के कारण अनेक त्रुटियाँ देखने को मिली है।

४.५. शब्द संबन्धी त्रुटियों का व्यतिरेकी विश्लेषण

समस्वनात्मक शब्द संबन्धी त्रुटियों का व्यतिरेकी विश्लेषण

हिन्दी संस्कृत से विकसित हो जाए इस कारण अनेक संस्कृत शब्दों का प्रयोग तत्सम रूप में हिन्दी में होता है। मलयालम भाषा में ही अनेक संस्कृत शब्दों का प्रयोग तत्सम या तत्भव रूप में समस्रोतीय होने के बावजूद हिन्दी और मलयालम में अनेक ऐसे शब्द है जो अपने मूल अर्थ से भिन्न अर्थ द्योदित करते हैं, ऐसे शब्दों को भाषाविज्ञान में भ्रामक सजातीय शब्द कहते हैं। अर्थ संबन्धी यह भिन्नता मलयालम भाषी छात्र-छात्राओं में त्रुटियाँ पैदा करती है। हिन्दी और मलयालम में कुछ ऐसे समस्वनात्मक शब्द हैं जिसका अर्थ भिन्न-भिन्न होते हैं। मलयालम भाषा भाषी उन शब्दों का प्रयोग उसी अर्थ में करते हैं जो मलयालम भाषा में है।

जैसेः

हिन्दी शब्द	**हिन्दी अर्थ**	**मलयालम शब्द**	**मलयालम अर्थ**
अनुवाद	तर्जमा	अनुवादम	अनुमति
आलोचना	समीक्षा	आलोचना	विचार
अवकाश	समय	अवकाशम्	अधिकार
कल्याण	मंगल	कल्याणम	शादी
सम्मान	आदर	सम्मानम्	पुरस्कार
संगति	संग	संगति	विषय
सावधान	सर्तक	सावधान	धीरे

हिन्दी में लिंग निर्णय के बारे में कोई निश्चित नियम नहीं है। कुछ नियम अवश्य है लेकिन जितने नियम हैं उतने अपवाद भी है। इसलिए हिन्दी में शब्दों का लिंग निर्णय करना कठिन है। मलयालम में लिंग निर्णय बहुत ही सरल कार्य है। हिन्दी की भाँति मलयालम में कभी कर्ता, के लिंग के अनुसार क्रिया पदों में परिवर्तन नहीं होता। यह परिवर्तन मलयालम भाषी छात्र-छात्राओं में त्रुटियाँ पैदा करती हैं।

नदियों के नाम हिन्दी में स्त्रीलंग है जैसे, गंगा, यमुना, सरस्वती आदि। मलयालम में भी इन्हें स्त्रीलंग मानकर प्रयुक्त किया जाता है। लेकिन हिन्दी में 'सिन्धु' तथा 'ब्रह्मपुत्र' पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है। इस प्रकार के अपवादों से मलयालम भाषी छात्र-छात्राओं में त्रुटियाँ पैदा करती हैं।

जैसेः

घर
फूल
कपड़ा
जूता
पेड़
फल
कमरा

} पुल्लिंग है जो 'अ' और आ में अन्त होने वाले शब्द है।

जैसेः

किताब
जगह
बात
हवा
कलम
दवा
चाय
चाज़
दुनिया

} स्त्रीलिंग है जो 'अ' और आ में अन्त होनेवाले शब्द है।

जैसेः - देह (हिन्दी में स्त्रीलिंग शब्द मलयालम में नपुंसक लिंग)

- प्राण (हिन्दी में पुल्लिंग)

उनकी प्राण चली गयी। (अशुद्ध)

उनके प्राण चले गये।

हिंदी में कुछ ऐसे शब्द पाए जाते हैं जिनका प्रयोग हमेशा बहुवचन में होता है। लेकिन ऐसे शब्द देखने पर एकवचन प्रतीत होती है। लेकिन मलयालम में ऐसी शब्द अधिकाँश एकवचन ही है। प्रयोग की इस भिन्नता के कारण मलयालम भाषी छात्र-छात्राओं हिन्दी में इसका प्रयोग एकवचन में करते हैं। अतः त्रुटियाँ पैदा करती हैं।

जैसेः दर्शन

प्राण

हस्ताक्षर

आँसू

दाम

होश

समाचार

बाल

हिन्दी में संख्या वाचक के बाद आनेवाली संज्ञा रूप बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। लेकिन मलयालम का यह नियम है कि संख्यावाचक के बाद आनेवाली संज्ञा रूपों के साथ बहुवचन प्रत्यय जोड़ने की ज़रूरत नहीं है। इसलिए मलयालम भाषा-भाषी हिन्दी में भी ऐसे प्रसंगों में मलयालम के अनुरूप एक वचन का ही प्रयोग करते जो त्रुटियाँ पैदा करती हैं।

जैसेः दो रुपया (दो रुपये) - सही प्रयोग

तीन रोटी (तीन रोटियाँ) - सही प्रयोग

सौ रुपया (सौ रुपये) - सही प्रयोग

४.६. वाक्य संबन्धी त्रुटियाँ

१.५.१ अन्विति

वाक्य स्तर पर व्यतिरेकी अध्ययन - करने पर हिन्दी और मलयालम की वाक्य संरचना में काफी व्यतिरेक दिखाई देता है। अन्विति के संदर्भ में कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार हिन्दी- क्रियाओं में परिवर्तन होता है। लेकिन मलयालम भाषा में इस प्रकार की अन्विति नही होता है।

उदः राम आता है। (हिन्दी) രാമൻ വരുന്നു

सीता आती है। (हिन्दी) സീത വരുന്നു

वे आते हैं। (वहु. पुल्लिंग) അവർ വരുന്നു

वे आती है। (वहु. स्त्रीलिंग) അവർ വരുന്നു

हिन्दी के सकर्मक भूतकाल के साथ 'ने' परसर्ग जोडने पर क्रिया के अन्विति कर्मे के लिंग वचन के अनुसार होती है।

राम ने आम खाया। രാമൻ മാങ്ങ തിന്നു

सीता ने आम खाया। സീത മാങ്ങ തിന്നു

राम ने रोटी खायी। രാമൻ ചപ്പാത്തി തിന്നു

सीता ने रोटी खायी। സീത ചപ്പാത്തി തിന്നു

मलयालम भाषा में अन्विति के संदर्भ में लिंग और वचन के अनुसार क्रियाओं में परिवर्तन नही होता है। इसी कारण से मलयालम भाषी छात्र वर्तमान काल के रूप चाहे पुल्लिंग हो या स्त्रीलिंग चाहे एकवचन या बहुवचन, पुल्लिंग एकवचन का प्रयोग करके त्रुटियाँ कर बैठते है। हिंन्दी में 'तुम' कर्ता है तो वर्तमानकाल के साथ 'ते हो' पुल्लिंग एकवचन में जोड़ते है। मलयालम भाषा में सभी केलिए एक ही क्रिया रूप होता है।

उदाः तुम आते हो (पुल्लिंग एकवचन) നിങ്ങൾ വരുന്നു

तुम आती हो (स्त्रीलिंग एकवचन) നിങ്ങൾ വരുന്നു

हिन्दी भाषा में ''मैं'' का प्रयोग करते समय सामान्य वर्तमानकाल में 'ता हूँ' का प्रयोग अनिवार्य है। लेकिन मलयालम में 'मैं' का समानार्थी ज्ञान (ഞാൻ) का प्रयोग करते समय खास वर्तमानकालिक सहायक क्रिया का प्रयोग न होने के कारण मलयालम भाषा भाषी 'हूँ' का स्थान पर 'है' का ही प्रयोग करते है। जो त्रुटियाँ पैदा करती हैं।

जैसे : मैं जाता हूँ।(ഞാൻ പോകുന്നു)

मैं जाती हूँ।(ഞാൻ പോകുന്നു)

उसी प्रकार तात्कालिक वर्तमान काल में भी क्रिया रूप लिंग और वचन के अनुसार बदलते है। लेकिन मलयालम में कोई बदलाव नहीं है। मलयालम के इस प्रवृत्ति से प्रभावित

होकर मलयाल भाषा भाषी छात्र पुल्लिंग एकवचन का प्रयोग स्त्रीलिंग एकवचन में, स्त्रीलिंग बहुवचन तथा पुल्लिंग बहुवचन के स्थान पर करते हैं जो गलत है।

जैसेः राम जा रहा है। (രാമൻ പോകുകയാണ്)

सीता जा रही है। (സീത പോകുകയാണ്)

वे जा रहे हैं। (बहुवचन पुल्लिंग) (അവർ പോകുകയാണ്)

वे जा रही हैं। (बहुवचन स्त्रीलिंग) (അവർ പോകുകയാണ്)

इन उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी में लिंग वचन के अनुसार रूप में परिवर्तन होता है। जबकि मलयालम भाषा में ऐसे कोई परिवर्तन नहीं हो जो त्रुटियाँ का कारण बन सकते हैं।

(देखिए परिशिष्ट)

४.५.२ 'और' संबन्ध बोधक अव्यय संबन्धी व्यतिरेकी विश्लेषण.

हिन्दी में शब्दों के बीच में संयोजक संबन्ध बोधक अव्यय 'और' का प्रयोग करते समय कर्ता बहुवचन हो जाता है और क्रिया भी उसके अनुसार बहुवचन में प्रयुक्त होता है।

जैसेः राम और रानी गए। രാമനും റാണിയും പോയി

लेकिन मलयालम में इस प्रकार क्रिया में परिवर्तन नहीं है तथा संज्ञाओं को 'उम्' से जोड़ते समय कर्ता का बहुत्व का बोध वाक्य के किसी शब्द से मालूम भी नहीं होता। जिससे त्रुटियाँ पैदा होती हैं।

जैसेः प्रदीप और प्रवीण घर जा रहे हैं। (सही) പ്രദീപും പ്രവീണും വീട്ടിൽ പോകുക യാണ്

राजु और राधा खेल रहे हैं। രാജുവും രാധയും കളിക്കുകയാണ്

वाक्य स्तर पर व्यतिरेकी अध्ययन करने पर हिन्दी और मलयालम में काफी व्यतिरेक दिखाई देता है। मलयालम से प्रभावित वाक्य रचना में हमारे, उनके, मेरे, तेरे शब्द खटकते लगते हैं। लेकिन हिन्दी की शुद्ध वाक्य रचना में उसके, मेरे, तेरे के स्थन पर लिंग विशेष्य के अनुसार अपना, अपने, अपनी प्रयोग ठीक लगता है। वाक्य में प्रयुक्त शब्दों में अन्वय का होना आवश्यक है।

४.७. अन्तरभाषा संबन्धी त्रुटियाँ

जब भी कोई व्यक्ति अन्यभाषा सीखता है तो सीखने की प्रक्रिया के दौरान उसके मन में सीखी जानेवाली भाषा का एक रूप बन जाता है। यह रूप न तो पूर्णतः उसकी अपनी मातृभाषा का होता है जो अपने नियमों को प्रक्षेपित कर व्याघात उपस्थित करती है। और न पूर्णतः लक्ष्य भाषा का बल्कि दोनों के बीच का होता है। इसलिए सेलिगर ने इसे

अन्तरभाषा (inter language) कहा है। अन्तरभाषा अपने स्वरूप में मातृभाषा से बहुत अधिक प्रभावित तथा विभिन्न कारणों से होनेवाली भूलों और त्रुटियों से युक्त होती है। किन्तु धीरे-धीरे प्रभाव कम हो जाता है तथा अन्तरभाषा लक्ष्य भाषा के समीप पहूँचती जाती है। लक्ष्य भाषा के नये-नये नियमों तथा अपवादों को हृदयंगम करता जाता है और अन्तरभाषा बदलती जाती है। उसका नया-नया रूप उसके मन में बैठता जाता है, जिसमें रोज़ मातृभाषा का प्रभाव कम होता जाता है। इसलिए इसे संक्रमणकालीन भाषा (Transitional language) भी कहा गया है।

अन्तरभाषा न तो अध्येता की मातृभाषा है न ही अध्येता द्वारा अधिगम की जानेवाली अन्यभाषा, यह अध्ययन की जाने वाली भाषा का वह रूप है जिसे अध्येता क्रमशः अपने ढंग से सीखने की कोशिश कर रहा होता है। सही विश्लेषण से मालूम होता है कि ऐसी अन्तरभाषा संबन्धी त्रुटियों का मूलकारण मातृभाषा के प्रयोगों से उत्पन्न जड़ता है जो गुरुत्वाकर्षण के समान लक्ष्यभाषा के नियमों पर हावी होकर उसको अपने नियमों से परिवर्तित कर लेती है।

केरल के लोगो की मातृभाषा मलयालम है। हिन्दी सीखनेवाले मलयालम भाषा भाषी हिन्दी दूसरी भाषा के रूप में पढ़ते समय मातृभाषा का व्याघात से त्रृटियों का होना स्वाभाविक है। हिन्दी भाषा की प्रकृति का आत्मसात न करने के कारण तथा अपनी मातृभाषा के संस्कारों

के प्रभाव के कारण व्याघात होता है। बच्चे पहले मातृभाषा का ही अर्जन करता है अतः उसकी जड़े बच्चे के मस्तिष्क में गहरी होती है।

दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी सीखनेवाले मलयालम भाषा-भाषियों के अन्तरभाषा संबन्धी तथा भाषावैज्ञानिक त्रुटियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन आगे किया जा रहा है। छात्रों के हिन्दी भाषा के प्रयोग के अन्तर होनेवाली त्रुटियों की अध्ययन भाषा-विज्ञान के विभिन्न इकाइयों के आधार पर की गयी है।

४.७.१. नियमों का अपूर्ण प्रयोग (Incomplete Application of Rules)

हिन्दी सीखनेवाले मलयालम भाषा भाषी छात्रों में नियमों का अपूर्ण प्रयोग से कई त्रुटियाँ दिखाई देती है।

हिन्दी भाषा में संज्ञा विकारी शब्द है। इसलिए अलग अलग अर्थ सूचित करने के लिए संज्ञा शब्दों के रूपान्तर किये जाते हैं। संज्ञा शब्दों के रूपान्तर लिंग, वचन और कारक के कारण होते हैं।

लिंग वचन और कारक संबन्धी जो व्यकरणिक नियम हिन्दी में है वह मलयालम भाषा में नहीं है। यह भिन्नता मलयालम भाषी छात्र-छात्राओं में त्रुटियाँ पैदा करती है। मलयालम में लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार क्रिया में कोई परिवर्तन नहीं होता।[१५]

---

[१५] 'ने' - संबन्धी नियमों का अपूर्ण पयोग।

जैसेः

हिन्दी	मलयालम
लड़का गाता है।	ആൺകുട്ടി പാടുന്നു
लड़के गाते हैं।	ആൺകുട്ടികൾ പാടുന്നു
लड़की गाती है।	പെൺകുട്ടി പാടുന്നു
लड़कियाँ गाती हैं।	പെൺകുട്ടികൾ പാടുന്നു
लड़के को गाना हैं।	ആൺകുട്ടികൾക്ക് പാടണം
लड़कियों को गाना है।	പെൺകുട്ടികൾക്ക് പാടണം
लड़की को गाना है।	പെൺകുട്ടിക്ക് പാടണം

लड़का / ആൺകുട്ടി संज्ञा रूप के ये रूपान्तर लड़का, लड़की, लड़कियों, लड़के को, लड़कों को, लड़की को, लड़कियों को - लिंग, वचन, कारक के आधार पर होते हैं।

हिन्दी में अपूर्णभूतकाल और हेतुहेतुमत् भूतकाल को छोडकर बाकी सभी भूतकालों की सकर्मक क्रिया के साथ /ने/ रूपिम का प्रयोग होता है।

जैसे - राजू ने रोटी खायी

सीता ने आम खाया।

लेकिन लाना, बोलना, भूलना आदि सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक रूप के साथ /ने/ रूपिम का प्रयोग नहीं किया जाता।

जैसेः राम कुछ बोला

राजु पुस्तक लाया

राम अपने आपको भूला।

सक, चुक, लग, आदि सहकायक क्रियाओं का प्रयोग करते वक्त कर्ता के साथ /ने/ रूपिम नहीं जुड़ता।

जैसेः रमा हिन्दी पढ़ सकती है।

मनु काम कर चुका

मैं सुनने लगा।

सकर्मक क्रिया के पूर्ण कृदंत के साथ 'ने' स्वतन्त्र रूपिम और कर्म के साथ 'को' रूपिम जोड़ते वक्त क्रिया एकवचन पुल्लिंग में होगा।

हिन्दी के इन सारे नियमों से मलयालम भाषा-भाषी सुपरिचित नही है। इसलिए भाषा अधिगम प्रक्रिया में अनेक त्रुटियाँ करती हैं।

निषेधात्मक वाक्य संबन्धी व्यतिरेकी विश्लेषण

निषेधात्मक वाक्य किसी विषय का अभाव सूचित करता है। मलयालम में इस तरह का विभाजन नहीं है, लेकिन निषेधात्मक वाक्य का प्रयोग भी होता है।

जैसे

हिन्दी मलयालम

हम ने गाना नही गाया। ഞങ്ങൾ പാട്ടു പാടിയില്ല

हम ने खाना नही खाया। ഞങ്ങൾ ഭക്ഷണം കഴിച്ചില്ല

वाक्य में निषेधार्थ सूचित करने के लिए 'नही न, मत' आदि अलग शब्द है और वह प्रयोग और प्रसंग के अनुसार शब्दो के पहले या बाद में जाड़ते हैं। मलयालम में 'ഇല്ല, അല്ല, അരുത്' शब्दों का प्रयोग निषेध सूचित करने के लिए है लेकिन तीनों का प्रयोग हमेशा वाक्यान्त में ही होता है।

जैसेः

हिन्दी	मलयालम
रजनी नृत्य नहीं करती।	രജനി നൃത്തം ചെയ്യുന്നില്ല
सड़क पर थूको मत।	റോഡിൽ തുപ്പരുത്.

मलयालम भाषा भाषी 'नहीं' का प्रयोग भी शब्द के अन्त में रखकर करते हैं। क्योंकि मलयालम में इसका प्रयोग भी वाक्य के अन्तिम भाग में हमेशा होता है। यह वाक्य में त्रुटियाँ पैदा करती है।

(देखिए परिशिष्ट)

४.७.२. भ्रांतिपूर्ण धारणा

भाषा सीखने के समय कुछ धारणाएँ भ्रांति रूप से मन में बैठ जाती है। हिन्दी पढ़नेवाले मलयालम भाषी हिन्दी को अन्य भाषा के रूप में पढ़ते समय समझ जाता है कि हिन्दी में दो वाच्य होते हैं। कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य। कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार बदलती है। तब कर्म वाच्य प्रयोग में प्रायः जो त्रुटियाँ देखने को मिलती है उसका कारण जड़ीभूत भ्रांति ही होता है।

जैसेः लड़के ने रोटी खा, ली।

लड़के ने रोटी को खा ली।

तुम ने किताब पढ़ी।

तुम ने किताब को पढ़ी।

४.७.३. उपनियमों की अज्ञानता (Ignorance of Rule Restrictions)

हर भाषा में कुछ सामान्य नियम होते हैं और कुछ उन नियमों के विशेषीकृत प्रयोग, जिनका संबन्ध उपनियमों से रहता है।

मलयालम का यह नियम है कि संख्यावाचक के बाद आनेवाली संज्ञाओं के साथ बहुवचन प्रत्यय जोड़ने की ज़रूरत नहीं है।

जैसेः പത്തു രൂപ

നൂറ് രൂപ

लेकिन हिन्दी में संख्यावाचक के बाद आनेवाली संज्ञाएँ बहुवचन में प्रयुक्त होती है।

जैसेः दो रुपये

दस रुपये

संज्ञा संबन्धी इस उपनियम मलयालम छात्रा-छात्राओं को परिचित नहीं। इसलिए मलयालम भाषा-भाषी हिन्दी में भी ऐसी प्रसंगों में मलयालम के अनुरूप एकवचन का ही प्रयोग करते हैं।

जैसेः दो रुपया - दो रुपये (सही प्रयोग)

तीन रुपया - तीन रुपये (सही प्रयोग)

दो रोटी - दो रोटियाँ (दो रोटियाँ)

पूजक बहुवचन संबन्धी त्रुटियाँ

आदर प्रकट करने के लिए हिन्दी में एकवचन संज्ञाओं का प्रयोग बहुवचन में किया जाता है। लेकिन हिन्दी सीखनेवाली मलयालम भाषी छात्र इसका प्रयोग एकवचन में करते हैं। क्योंकि वे इस उपनियम से अज्ञान है।

जैसेः मेरे बापू ईमानदार अफ़सर हैं।

पन्त जी मुख्यतः प्रकृति के कवि है।

उसी तरह 'ले', 'दे' का भूतकाल 'लिया', 'दिया' है। लेकिन 'जाना' के सन्दर्भ में 'गया' का प्रयोग न कर 'जिया' का प्रयोग करता है।

उदाहरणः आप कहिए

आप आइए

'कर' के सन्दर्भ में आप 'कीजिए' न कर 'आप करिए' का प्रयोग - करता है।

'प्रत्येक' 'हर एक' शब्द का प्रयोग

हिन्दी में सदा 'प्रत्येक' और 'हर एक' शब्द का प्रयोग एकवचन में किया जाता है। उसके बाद आनेवाली संज्ञाएँ भी एकवचन प्रयुक्त की जाती है। लेकिन उनका प्रयोग अज्ञता के कारण बहुवचन में करता है, जिससे गलतियाँ आ जाती हैं।

जैसेः प्रत्येक व्यक्ति को इसमें भाग लेना चाहिए। हर एक छात्र पास होने केलिए कठिन प्रयास करता है। हर एक छात्र पास होने के लिए कठिन प्रयास करता है।

'और' अथवा 'या' शब्द का प्रयोग

कभी-कभी एक वाक्य में एक से अधिक संज्ञाओं का प्रयोग होता है। यदि और का प्रयोग हो तो बहुवचन में होना चाहिए और 'या' का प्रयोग है तो क्रिया एकवचन में। लेकिन मलयालम भाषा-भाषी छात्र इस उपनियम से अज्ञान है जिससे त्रुटियाँ पैदा करती हैं।

४.७.३.१. वाक्य में विशेषण संबन्धी त्रुटियों का व्यतिरेकी विश्लेषण

वाक्य में विशेषण विशेष्य के अनुसार होना चाहिए। लेकिन मलयालम में इसके लिए एक ही विशेषण का प्रयोग हर लिंग और वचन में होता है।

जैसेः काला बैल घास खाता है। കറുത്ത കാള പുല്ലു തിന്നുന്നു

काली गायी घास खाती है। കറുത്ത പശു പുല്ലു തിന്നുന്നു

काले बैल घास खाते है। കറുത്ത കാളകൾ പുല്ലു തിന്നുന്നു

काली गाये घास खाती है। കറുത്ത പശുക്കൾ പുല്ലു തിന്നുന്നു

लेकिन इस प्रकार के नियम से मलयालम भाषा भाषी छात्र सुपरिच नही है। इसलिए मलयालम भाषी छात्र-छात्राएँ इसका प्रयोग करते समय पुल्लिंग-एकवचन में प्रयुक्त विशेषण का प्रयोग ही हमेश करते हैं।

यदि कर्ता के बाद 'ने' रूपिम हो और कर्म हो या न हो तो हिन्दी में क्रिया कर्ता के अनुसार होती है। लेकिन मलयालम में कोई परिवर्तन क्रिया में नहीं होता। 'ने' रूपिम के समानार्थी रूपिम भी मलयालम में नहीं है।

जैसेः

हिन्दी	मलयालम
राम ने रोटी खायी	രാമൻ റൊട്ടി തിന്നു
राम ने दो रोटियाँ खायीं	രാമൻ 2 റൊട്ടി തിന്നു

मलयालम में 'ने' के सामान कोई रूपिम न होने के कारण मलयालम भाषा भाषी छात्र ने रूपिम के बिना वाक्य बनाते हैं। जो त्रुटियाँ पैदा करती है।

हिन्दी में एक ही लिंग की प्राणिवाचक संज्ञाओं को 'और' से जोडने से क्रिया बहुवचन हो जाती है। लेकिन यह भी हिन्दी में है कि अप्राणिवाचक चीज़ों या गुणों को 'और' से जोड़ते से क्रिया एकवचन में ही होती है। यह मलयालम भाषा भाषी छात्र - छात्राओं के लिए कठिनाइयाँ उपस्थित करता है। वे एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग करके त्रुटियाँ कर बैठते हैं।

जैसेः उस लड़के के पास सिर्फ छतरी और घड़ी है।

यदि वाक्य में दो कर्ता है और उनमें से दूसरा कर्ता पहले से संबन्धित हो तो क्रिया प्रथम कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार होगा।

जैसेः मद्रास अंग्रेज़ों की राजधानी था।

यहाँ प्रथम कर्ता के अनुसार ही क्रिया रहती है। मलयालम में यह प्रवृत्ति नही है। इसलिए मलयालम भाषा-भाषी छात्र छात्राएँ दूसरे कर्ता के अनुसार क्रिया में परिवर्तन करते हैं।

हिन्दी में सर्वनामों के प्रयोग में 'अपना' का प्रयोग ज्यादा प्रचलित है। मलयालम में अपना के अर्थ में 'സ്വന്തം' शब्द का प्रयोग होता है। यह इस अर्थ में विशेषण शब्द

है। मलयालम में सर्वनाम प्रकरण में 'अपना' के अर्थ में उसी सर्वनाम को दोहराया जाता है। हिन्दी में यह दुहराना मुहावरे के खिलाफ और अरोचक माना गया है।

जैसेः वह अपनी बहन के साथ स्कूल गया था। അവൻ അവന്റെ സഹോദരിയുടെ കൂടെ സ്കൂളിൽ പോയി

मैं अपने घर में खेल रहा हूँ। ഞാൻ എന്റെ വീട്ടിൽ കളിക്കുകയാണ്

(देखिए परिशिष्ट)

दिन, रात, तारिख, तथा, हफता के नाम के साथ हिन्दी में 'को' रूपिम आता है। जबकि मलयालम में इस तरह के शब्दों के साथ कोई रूपिम नहीं जुड़ता।

जैसेः पिताजी शनिवार को आएगें। അച്ഛൻ ശനിയാഴ്ച വരും

सीता शुक्रवार को पहूँचेंगी സീത വെള്ളിയാഴ്ച എത്തും

इसी भिन्नता के कारण मलयालम भाषी छात्र-छात्राएँ इन शब्दों का प्रयोग 'को' रूपिम के बिना ही करते हैं जो गलत है।

हिन्दी में भूतकालिक कृदंत के साथ 'बिना' आने पर उसके साथ प्रत्यय का प्रयोग नहीं होता।

जैसेः बच्चा दूध पिए बिना सो गया।

मलयालम भाषी छात्र इस सन्दर्भ में असमंजस में पड़ जाते हैं और कभी कभी 'के' का अनावश्यक प्रयोग भी करते हैं।

४.७.४. अतिसामान्यीकरण (Over Generalisation)

इस प्रक्रिया का संबंध लक्ष्यभाषा की तथ्य सामग्री और भाषा व्यवस्था के आधारभूत नियमों का सदृश्य विधान के आधार पर प्रयोग-प्रसार है। शिक्षार्थी भाषायी तथ्यों के आधार पर नियमों का सामान्यीकरण करता है।

जैसेः രാജു രാവിലെ വീട്ടിൽ എത്തി

राजु सुबह आ पहूँचा।

('आ' का समावेश आकस्मिकता के आति सामान्यीकरण)

അവൻ പറഞ്ഞു

उसने बोला

(नियमों का सामान्यीकरण)

आप काम करिए

(नियमों का सामान्यीकरण)

४.८. अभिसरण और अपसरण संबन्धी त्रुटियाँ

व्यतिरेकी विश्लेषण से मातृभाषा और अन्य भाषा में विद्यमान भेदों की जानकारी प्राप्त होती है। अन्यभाषा के शिक्षण सामग्री के निर्माण में सीखनेवाले को आवश्यकता, उसकी मानसिक स्थिति, उसकी मातृभाषा आदि को ध्यान में रखना पड़ता है। शिक्षण सामग्री के चयन में अन्यभाषा के उन स्थलों पर विशेष ध्यान रखा जाता है जहाँ मातृभाषा के नियम व्याघात पैदा करते हैं। मतलब यह है कि सीखनेवाले को अन्य भाषा के सभी नियम सिखाए नहीं जाती बल्कि उन नियमों को सिखाये जाते हैं, जो किसी न किसी रूप में मातृभाषा के नियमों के विपरीत होते हैं। व्यतिरेकी विश्लेषण का मुख्य उद्देश्य ऐसे ही नियमों का पता लगाना और वर्णन करना होता है। मातृभाषा और अन्य भाषा के व्यतिरेकी विश्लेषण से मोटे रूप से तीन प्रकार की स्थितियाँ सामने आती हैं।

1. मातृभाषा के नियम के समान नियम अन्य भाषा में विद्यमान रहना। यह सीखनेवाले के लिए सरल स्थिति मानी जाती है।

2. मातृभाषा के नियम के समान नियम का अन्य भाषा में अभाव।

3. अन्य भाषा के नियम के समान नियम का मातृभाषा में अभाव।

मातृभाषा और अन्य भाषा में समान नियमों के होने पर भी एक दूसरे प्रकार की कठिनाई सीखनेवले के सामने आती है। समान नियमों में भी चुनाव की दृष्टि से भेद हो सकती है।

व्यतिरेकी भाषाविज्ञान में अभिसरण और अपसरण का विशेष महत्व है मातृभाषा से भिन्न दूसरी भाषा का अध्ययन में अभिसरण और अपसरण का होना स्वाभाविक है। जब मातृभाषा के एकाधिक शब्दों के स्थान पर अन्य भाषा में केवल एक शब्द का अर्थ मिलता है तो अभिसरण की त्रुटियाँ उत्पन्न होती है। उसी प्रकार मातृभाषा के किसी एक तत्व के स्थान पर अन्यभाषा में अनेक शब्द उपलब्ध होता है तो अपसरण की समस्या या त्रुटियाँ उत्पन्न होते हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य में कालिकट जिले के विभिन्न छात्र-छात्राओं के बीच जो सर्वक्षण मैं ने किया है उसके आधार पर इस निष्कर्ष पर पहूँचना पड़ता है कि अभिसरण की प्रवृत्ति प्रायः सभी छात्र छात्राओं में दिखाई देता है। लेकिन उपसरण की प्रवृत्ति नहीं के बराबर है। प्रस्तुत अध्ययन का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी शब्दों के विशेषकर सर्वनामों के सही प्रयोग से छात्र-छात्राएँ इतनी परिचित नही है। इसलिए छात्राएँ मलयालम के समतुल्य शब्दों का सही अर्थ ढूँढने में असफल निकले।

अन्य भाषा शिक्षण में मातृभाषा और अन्य भाषाओं में समान तत्व के होने पर कोई विशेष कठिनाई नही होती। लेकिन कुछ ऐसे सन्दर्भ आते है जहाँ चुनाव की समस्या आती है। मातृभाषा के एकाधिक शब्दों के स्थान पर अन्यभाषा में केवल एक शब्द प्रयुक्त होने की स्थिति हो सकती है। यह स्थिति अभिसरण कहलाती है। मलयालम में अन्यपुरुष सर्वनाम के लिए प्रयुक्त होनेवाले शब्द ഇവൻ, ഇവൾ, ഇത്, ഇൗ के स्थान पर हिन्दी में केवल एक शब्द 'यह' का प्रयुक्त होता है।

मातृभाषा के किसी एक तत्व के स्थान पर अन्यभाषा में अनेक शब्द प्रयुक्त होने की स्थिति भी हो सकती है। इस स्थिति को अपसरण कहलाती है। 'यह' के स्थान पर मलयालम में ഇവൻ, ഇവൾ, ഇത്, ഈ का प्रयोग होता है। अन्यभाषा शिक्षण के सन्दर्भ में दोनों स्थितियाँ स्वाभाविक रूप से आते हैं।

४.८.१. अभिसरण संबन्धी त्रुटियाँ

मलयालम भाषी हिन्दी सीखनेवाले छात्रों में अभिसरण और अपसरण की प्रवृत्ति अध्ययन के लिए कालिकट के उच्च माध्यमिक स्तर पर (१२ वीं) कक्षा के २०० छात्रों को चुन लिया। छात्रों को मलयालम से हिन्दी में अनुवाद-करने के लिए १५ वाक्य तथा हिन्दी से मलयालम में अनुवाद करने के लिए २० वाक्य दिया गया। अभिसरण और अपसरण दोनों संदर्भों को अध्ययन केलिए अलग से वाक्य दिया गया। छात्रों की मातृभाषा मलयालम होने के कारण अभिसरण के संदर्भ को जानने के लिए हिन्दी से मलयालम में अनुवाद करने के लिए दिया गया। उसके लिए चुने गये वाक्य निम्नलिखित हैं।

मातृभाषा में अनुवाद करने के लिए दिए गए शब्द

१. राजु अपने कमरे में बैठकर आप गा रहा है।

२. नीनु रो चुकी है अब वह आप सो जाएगी।

३. आप से मिलिए, बनारस विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हैं।

४. आप हिन्दी के उच्चस्तर के समालोचक है।

५. सब कोई कविता नहीं कर सकते।

६. कोई न कोई घर में रहेगा।

७. कुछ-कुछ मुझे भी मालूम है।

८. ये किताबें अच्छी नहीं है, और कुछ दिखाओ।

९. वह काम करता है।

१०. वह काम करती है।

११. यह मेरा काम नहीं है।

१२. यह अच्छा लड़का है।

१३. कौन सा उत्तर सही है।

१४. कौन आ रहा है?

१५. वे काम कर रहे है।

१६. वे फूलें बेचने के लिए नहीं है।

१७. वे हिन्दी के प्रमुख लेखक हैं।

१८. ये हमारे पास आये हैं।

१९. ये कहाँ जा रहे हैं।

२०. ये काम कर रहे हैं।

अनुवाद के लिए दिये गये इन वाक्यों में पहले, दूसरे और तीसरे तथा चौथे वाक्यों में 'आप' शब्द के मलयालम का अर्थ ताङ्कल (താങ്കൾ) होता है। लेकिन हिन्दी में 'आप' कई

अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। इस सन्दर्भ में छात्रों को चुनाव की समस्या आती है। वे सभी वाक्यों में 'आप' की बदले ताङ्कल (താങ്കൾ) शब्द का ही प्रयोग करते हैं। इन चार वाक्यों में 'आप' शब्द का प्रयोग ये, वे himself, herself जैसे अर्थों में होते हैं।

लगभग १८० छात्रों में से सभी छात्र पहला, दूसरा तथा चौथा वाक्य में प्रयुक्त 'आप' शब्द को ताङ्कल (താങ്കൾ) अर्थ में ही अनुवाद किया गया। लेकिन तीसरा वाक्य को सही अर्थ में ही अनुवाद कर लिया। सन्दर्भ के अनुसार छात्रों ने तीसरा वाक्य को सही कर दिया।

पाँचवाँ तथा छठा वाक्य में 'कोई' शब्द का प्रयोग मिलता है। हिन्दी में जिनका कई इसके लिए एक ही अर्थ होते हैं। लेकिन मलयालम में इसके लिए एक ही अर्थ होता है। छात्रों ने इन दोनों वाक्यों के अनुवाद गलत कर दिया। यहाँ चुनाव की समस्या आने के कारण छात्रों ने गलती की।

सातवाँ तथा आठवाँ वाक्य में 'कुछ' शब्द का प्रयोग किया गया है। यह शब्द दो अर्थ में हिन्दी में प्रयुक्त होता है। लेकिन मलयालम में इसके लिए अनेक शब्द मिलते हैं। छात्रों को चुनाव की समस्या ज़रूर आती है। अभिसरण की समस्या के कारण अनुवाद करते समय अर्थ में बदलाव आता है।

नवाँ तथा दसवाँ वाक्य में 'वह' शब्द का प्रयोग होता है। लेकीन इस शब्द के लिए मलयालम भाषा में അവൻ, അവൾ, അത്, ആ आदि अनेक शब्द प्रयुक्त होते हैं। इस

सन्दर्भ में छात्रों को भ्रम होने की संभावना है कि कौन-सा शब्द चुन ले। यहाँ भी चुनाव की समस्या होने के कारण छात्रों ने गलती की।

ग्यारहवाँ तथा बारहवाँ वाक्य में 'यह' शब्द का प्रयोग किया गया है। जिनके लिए मलयालम में ഇവൻ, ഇവൾ, ഈ आदि शब्दों का प्रयोग होता है। इससे यह समस्या आती है कि किस शब्द का प्रयोग किया जाये। लेकिन यहाँ वाक्य संरचना के अनुसार बच्चों ने सही शब्द को चुन लिया है। अध्येता को मातृभाषा में सीखे गये नियमों की अपेक्षा अन्य भाषा के नियमों को भी सीखना पड़ता है। चुनाव की त्रृटियों को दूर करने के लिए नियमों को जानना आवश्यक हो जाता है।

तेरहवाँ तथा चौदहवाँ वाक्यों में 'कौन' शब्द का प्रयोग किया गया है। जिसको लिए मातृभाषा में कई शब्द प्रयुक्त होते हैं। इस अवसर पर सीखनेवाले के सामने यह समस्या आती है कि कौन सा शब्द सही होगा। यहाँ अभिसरण की समस्या को दूर करने के लिए नये नियमों को सीखना पड़ता है।

अगले तीन वाक्यों में 'वे' शब्द का प्रयोग किया है। जिनके लिए मातृभाषा में അവർ, അദ്ദേഹം, അവ आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। यहाँ पर भी बच्चों ने चुनाव की समस्या से गलती की। वैसे ही अठारहाँ, उन्नीसवाँ तथा बीसवाँ वाक्य में प्रयुक्त 'ये' शब्द को मातृभाषा में अनेक शब्द प्रयुक्त होते हैं। ഇവർ, ഇദ്ദേഹം, ഇവ यहां पर छात्रों को चुनाव की समस्या मुश्किल खड़ा कर दिया है। क्योंकि इन वाक्यों के संरचना के आधार पर सही शब्द को चुनने में भी तकलीफ आया है। क्यों कि यहाँ पर तीनों वाक्य बहुवचन में है।

अभिसरण एक बहुत बड़ी समस्या सामने रखते हैं। अन्यभाषा शिक्षण में यह बहुत मुश्किल हो जाता है।

४.८.२. अपसरण संबन्धी त्रुटियाँ

यहाँ छात्रों की मातृभाषा मलयालम है, तथा दूसरी भाषा (अधिगम भाषा) हिन्दी है। अपसरण संबन्धी त्रुटियाँ को जानने के लिए मलयालम से हिन्दी में अनुवाद करने के लिए 15 वाक्य दिया गया। उसके लिए चुने गये वाक्य निम्नलिखित हैं।

१. ഇവൾ എന്റെ സഹോദരന്റെ മകനാണ്.

२. ഇവൾ മാങ്ങ തിന്നുകയാണ്.

३. ഇത് എന്റെ പശു ആണ്.

४. നോക്കൂ, അവിടെ എന്തോ തിളങ്ങുന്നു.

५. അമ്മേ, എന്തെങ്കിലും കഴിക്കാൻ തരൂ.

६. കുറച്ച്-കുറച്ച് എനിക്കും അറിയാം.

७. അവൻ പന്ത് കളിക്കുകയാണ്.

८. അവൾ പാട്ട് പാടുന്നു.

९. അത് പൂവ് ആകുന്നു.

१०. ഞാൻ എന്റെ വീട്ടിലേക്ക് തനിയെ പോകും.

११. താങ്കൾ വന്നാലും.

१२. മുറിയിൽ ആരോ ഉണ്ട്.

൧൩. ക്ലാസ്സിൽ ആരും ഇല്ല.

൧൪. അദ്ദേഹം അധ്യാപകനാകുന്നു.

൧൫. അവർ ഓടുകയാണ്.

पहले, दूसरे तथा तीसरे वाक्य में प्रय्कुत ഇവൻ, ഇവൾ, ഇത്, ഈ आदि शब्दों के लिए हिन्दी में केवल एक ही शब्द 'यह' प्रयुक्त होते हैं। इस संन्दर्भ में चुनाव की समस्या आ जाती है। 'यह' शब्द इन तीनों में से किस शब्द के बदले प्रयोग किया जाये।

चौथा, पाँचवाँ, तथा छठाँ वाक्य में प्रयुक्त എന്തോ, എന്തെങ്കിലും, കുറച്ച്-കുറച്ച് आदि शब्दों के बदले प्रयुक्त करने के लिए हिन्दी में केवल एक ही शब्द मिलते हैं ' कुछ' | इस समस्या अपसरण कहलाता है। यह अन्यभाषा सीखनेवालों के लिए कठिनाई उत्पन्न करते हैं।

सांतवाँ, आठवाँ तथा नवाँ वाक्य में അവൻ, അവൾ, അത് आदि तीन शब्दों के लिए हिन्दी में केवल 'वह' शब्द ही मिलते हैं। अन्य भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में यह स्थिति स्वाभाविक रूप से सामने आते हैं।

दसवाँ, ग्यारहवाँ वाक्य में തനിയെ तथा 'താങ്കൾ' दोनों शब्दों के लिए हिन्दी में केवल एक ही शब्द 'आप' प्रयुक्त होते हैं। यह सीखनेवालों के बीच कठिनाई उत्पन्न करते हैं।

बारहवाँ तथा तेरहवाँ वाक्यों में ആരോ तथा ആരും दोनों शब्दों के बदले | कोई | का प्रयोग किया गया है। चौदहवाँ तथा पन्द्रहवाँ वाक्य में അദ്ദേഹം तथा അവർ शब्दों के लिए केवल 'वे' शब्द का ही प्रयोग होता है।

अभिसरण के समान अपसरण का भी बहुत बड़ी समस्या पैदा करती हैं। कौन-सा शब्द ठीक रहेगा इसके लिए वाक्यों के संरचना को देखना पड़ता है। वाक्य की संरचना तथा संदर्भ के अनुसार शब्दों को चुन लेने से अपसरण खड़ी करनेवाली समस्या का समाधान कर सकते हैं।

उपसंहार

मानव जाति के विकास के इतिहास में भाषा की अहम भूमिका है। मनुष्य की भाषा की विशेष क्षमता जो है वह बेजोड़ है। यह मनुष्य की अर्जित संपत्ति है। समय समय पर भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक माना गया है। भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन भाषाविज्ञान कहलाता है। भाषा के सिद्धान्तों, प्रक्रियाओं और अनुप्रयोगों का विवेचन, विश्लेषण भाषा विज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है। बीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में जब अन्यभाषा शिक्षण से संबन्धित वैज्ञानिक अध्ययन हुआ तो भाषाविज्ञान की उपयोगिता को महसूस किया गया। इसी सन्दर्भ में, दो, या दो से अधिक भाषाओं के व्यतिरेकी विश्लेषण पर बल दिया गया। स्वन, रूप, शब्द, वाक्य और अर्थ स्तर पर विभिन्न भाषाओं का तत्वों को ढूँढ़ निकालने का प्रयास शुरु हुआ। वस्तुतः व्यतिरेकी विश्लेषण भाषिक संरचना की एक अन्वेषण पद्धति है। जिसका उद्देश्य भाषा शिक्षण और अनुवाद को सरल एवं वैज्ञानिक बनाना है।

व्यक्ति अन्य भाषा का ज्ञान किसी प्रयोजन के लिए ग्रहण करता है। और इसी कारण द्विभाषिकता या बहुभाषिकता की स्थिति भी उत्पन्न होती है। व्यतिरेकी विश्लेषण हर प्रकार के भाषा शिक्षण में बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। इसके आधार पर सभी प्रकार के भाषा-शिक्षण में शिक्षार्थी की कई प्रकार की कठिनाईयों का पूर्वानुमान लगाया जाता है। व्यतिरेकी विश्लेषण से न केवल लक्ष्यभाषा की विशेषताओं का पता चलता है वरन् स्रोत भाषा की

विशिष्टताओं का भी ज्ञान प्राप्त होता है। त्रुटियों के विभिन्न वर्गों को भाषा शिक्षण के आधारभूत सिद्धान्तों के साथ जोड़कर सुधारात्मक पाठों का निर्माण संभव है और व्यतिरेकी विश्लेषण इसमें अहम् भूमिका निभाता है।

भाषा मानव की संपत्ति है जिसके ज़रिए वह अपने विचारों को दूसरों तक पहूँचता है। सबसे पहले मानव अपने सहज एंव - स्वाभाविक रूप में मातृभाषा से परिचित हो जाता है। वह अपनी मातृभाषा से भिन्न जिस भाषा का अध्ययन करता है वह उसके लिए दूसरी भाषा है। मातृभाषा की प्रणाली की जानकारी जिसकी जड़ सामान्य रूप से प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क में गहरी और दृढ़ होती है। एक अन्यभाषा के अर्जन में कई प्रकार की व्यावहारिक कठिनाईयों का होना स्वाभाविक है। भाषाओं की तुलना करते समय दो प्रकार के तत्व हमारे सामने आते हैं। एक तो समान तत्व दूसरा व्यतिरेकी तत्व। इन व्यतिरेकी तत्वों की जानकारी और उससे संबन्धित त्रुटियों को दूर करना भाषा शिक्षण में महत्वपूर्ण हैं।

मातृभाषा और दूसरी भाषा के अर्जन में काफी अन्तर है। बच्चा पहले मातृभाषा का ही अर्जन करता है। दूसरी भाषा सीखते समय मातृभाषा में सोचता है, विचार करता है और अनुवाद के द्वारा दूसरी भाषा में रूपान्तरित करने का प्रयास करता है। मातृभाषा और अन्यभाषा की संरचनाओ में हर एक स्तर पर व्यतिरेक का होना स्वाभाविक है। ये अन्तर अन्यभाषा प्रयोग में व्याघात पैदा करता है। इस व्याघात से त्रुटियाँ होती है। दूसरी भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में सहज स्वाभाविक रूप से भाषा शिक्षण का अवसर नहीं मिलता है। इस सन्दर्भ में अन्तरभाषा की परिकल्पना बिलकुल सार्थक रहता है।

हिन्दी तथा मलयालम दो भिन्न भाषा परिवारों की भाषाएँ हैं। हिन्दी भारोपीय परिवार की भाषा है और मलयालम द्राविड़ परिवार की। दोनों भाषाओं की व्यतिरेकी विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि अधिकांश छात्र-छात्राओं में व्याघात के फलस्वरूप नाना प्रकार की त्रुटियाँ दिखाई देती हैं। इन भाषाओं के आकृतिमूलक एवं पारिवारिक वर्गीकरण से यह मालूम होता है कि इन दोनों भाषाओं की रूपरचना एवं अर्थ में काफी भिन्नताएँ है। दोनों भाषाओं की उच्चारण संबन्धी त्रुटियाँ पर विश्लेषण करने से यह पता चलता है कि दोनों भाषाओं के स्वर और व्यंजन स्वनिमों के प्रयोग में भी काफी व्यतिरेक है। हिन्दी पढ़नेवाले मलयालम भाषी इन व्यतिरेक तत्वों से परिचित नही हैं जो उनके उच्चारण में त्रुटियाँ पहूँचाने का कारण बन जाता है।

दोनों भाषाओं के रूपिमीय व्यतिरेकी विश्लेषण से यह पता चलता है कि दोनों भाषाओं के कुछ स्वतन्त्र रूपिमों के प्रयोग में विरोध या वैषम्य हैं जो त्रुटियाँ पैदा करती है। शब्द संबन्धी त्रुटियों का छानबीन करके विश्लेषण करते समय यह मालुम पड़ता है कि दोनों भाषाओं में कुछ ऐसी समस्वनात्मक शब्द है जो भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। यह भी व्यतिरेकी तत्वों की त्रुटियों का कारण बन जाती है।

वाक्य स्तर पर दोनों भाषाओं के विश्लेषण करने पर पानेवाली एक प्रमुख व्यतिरेकीपन यह है कि हिन्दी में परिलक्षित होनेवाली वाक्य अन्विति का मलयालम में नितांत अभाव है। मलयालम के क्रिया रूपों में कालसूचक इकाईयों के अलावा लिंग या वचन द्योतक

चिह्न लगाये नहीं जाते। अन्विति के सन्दर्भ में कर्त के लिंग और वचन के अनुसार हिन्दी क्रिया रूपों में परिवर्तन होता है। लेकिन मलयालम में इस प्रकार की आन्विति नही होती है।

व्यतिरेकी भाषाविज्ञान में अभिसरण और अपसरण का विशेष महत्व है। जब मातृभाषा के एकाधिक शब्दों के स्थान पर अन्यभाषा में केवल एक शब्द मिलते हैं तो अभिसरण की समस्या उत्पन्न होती है। उसी प्रकार मातृभाषा के किसी शब्द के स्थान पर अन्यभाषा में अनेक शब्द उपलब्ध होता है तो अपसरण की समस्या उत्पन्न होते हैं। निरंतर अभ्यास से विद्यार्थी इन त्रुटियों से दूर हो सकते हैं। यह तो छात्राओं की कमी नहीं, यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया मात्र है।

प्रस्तुत शोध कार्य के अन्तर्गत जो सर्वेक्षण मैं ने किया है उसके आधार पर इस निष्कर्ष पर पहूँचना पड़ता है कि मलयालम भाषा-भाषी हिन्दी छात्रों के भाषा प्रयोग में कई प्रकार की त्रुटियाँ हैं। सर्वेक्षण के लिए जिला कालिकट के चुने हुए ३६० छात्राओं में हिन्दी भाषा का प्रयोग करते समय कई त्रुटियाँ पाई गईं। प्रत्येक बच्चे को लगभग १५ प्रश्नों से युक्त एक प्रश्नावली दिया गया था। इसमें भाषा प्रयोग के विभिन्न स्तरों के प्रश्न शामिल थे। उन छात्रों में मुख्य रूप से निम्नलिखित त्रुटियाँ पाई गईं।

त्रुटियाँ के प्रकार	छात्रों में पाई जानेवाली त्रुटियाँ	प्रतिशत
१. स्वर स्वनिमों का उच्चारण संबन्धी त्रुटियाँ	२४९	६९
२. व्यंजन स्वनिमों का उच्चारण संबन्धी त्रुटियाँ	२३७	६५
३. स्वतन्त्र रूपिमों के प्रयोग में पाई जानेवाली त्रुटियाँ	१४१	३९
४. समस्वनात्मक शब्द संबन्धी त्रुटियाँ	८७	२४
५. अर्थ संबन्धी त्रुटियाँ	११४	३१.६
६. मातृभाषा व्याघात संबन्धी त्रुटियाँ	१८९	५२.५
७. अन्तरभाषा संबन्धी त्रुटियाँ	२६९	७४.७
८. अपसरण संबन्धी त्रुटियाँ	२१३	५९
९. अभिसरण संबन्धी त्रुटियाँ	२०३	५६.३
१०. 'ने' का प्रयोग संबन्धी त्रुटियाँ	२९४	७५.३
११. अन्विती संबन्धी त्रुटियाँ	२९१	७४

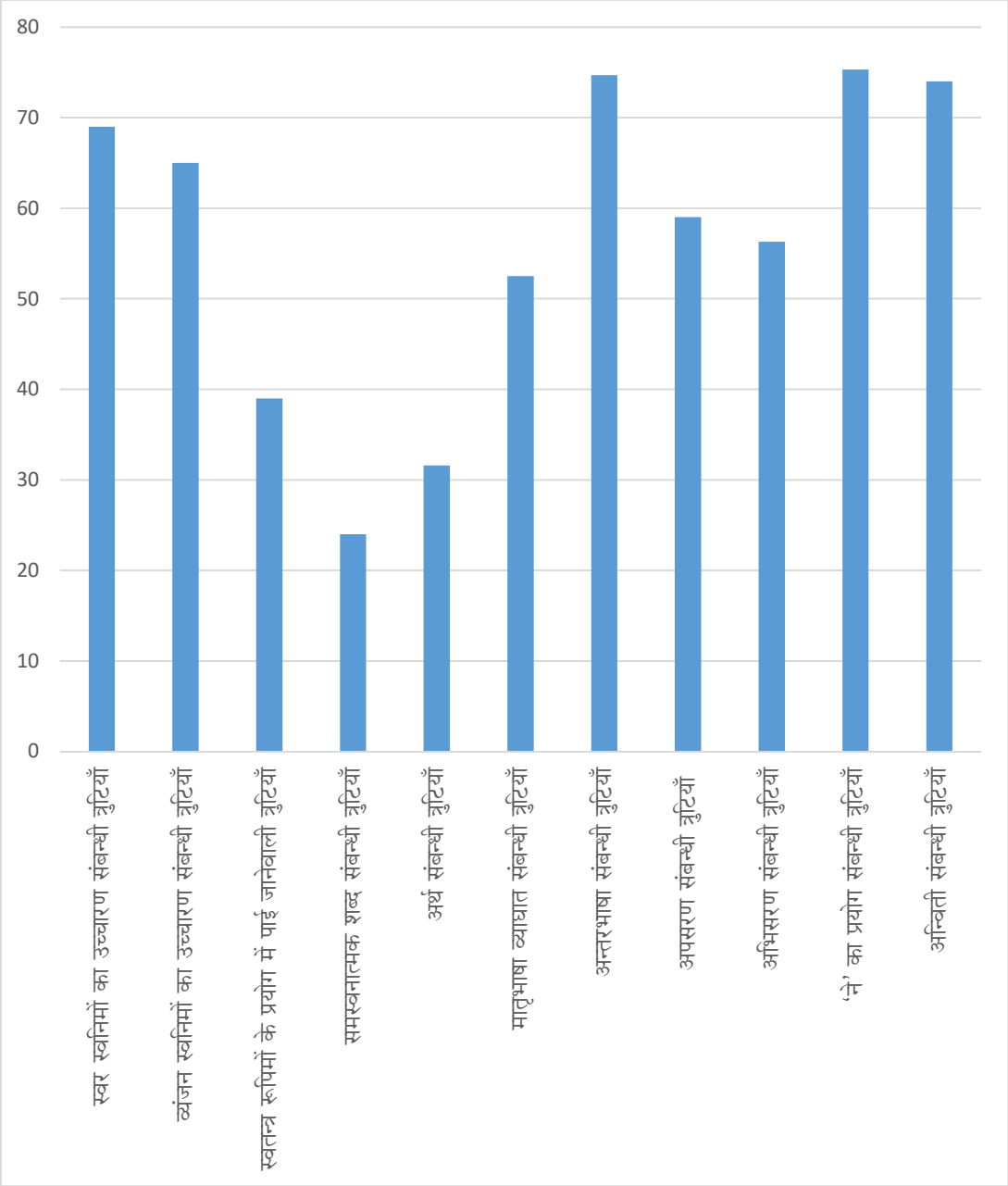

त्रुटियों का वैज्ञानिक विश्लेषण करने के उपरान्त यह पता चलता है कि हिन्दी को दूसरी भाषा के रूप में सीखनेवाले मलयालम भाषा भाषी छात्रों के द्वारा की जानेवाली सबसे अधिक त्रुटियों में से एक हिन्दी भाषा के नियमों की अज्ञानता है। विशेष रूप से 'ने' का प्रयोग और अन्विती। हिन्दी पढ़नेवाले मलयालम भाषी में प्रकट होनेवाली इन समस्याओं की

गहनता मूल रूप से दोनों भाषाओं की संरचनात्मक विशेषताओं पर निर्भर रहती है। ऐसी हालत में हिन्दी का यह विशेष नियम जिसका मलयालम में अभाव है और हिन्दी में कहीं अपवादों के साथ इस नियम का प्रयोग किया जाता है, सामान्य छात्र दूसरी भाषा के अध्ययन में काफी कठिनाई महसूस करता है।

दूसरी बात यह है कि मलयालम भाषा भाषी हिन्दी का अध्ययन करते समय मातृभाषा मलयामल भाषा से परिचित होने के बाद दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन करते हैं। इसलिए उच्चारण संबन्धी कई त्रुटियाँ पैदा होती है। मलयालम भाषा का प्रभाव हिन्दी पर पड़ने के कारण हिन्दी स्वनिमों के उच्चारण में त्रुटियाँ आ जाती है। उच्चारणगत भिन्नता के कारण कभी कभी वर्तनीगत त्रुटियाँ भी हो जाती है। स्वनिमों के उच्चारण में सहायक होनेवाले आधुनिक यन्त्रों का उपयोग करके अध्ययन करने से दोनों भाषाओं की स्वनिमों में जो अन्तर है वह भली भांति समझा जा सकता है, और उससे काफी हद तक समस्याओं को दूर किया जा सकता है। इन बिन्दुओं को केंद्र में रखकर भाषावैज्ञानिक एवं शिक्षा शास्त्रीय दृष्टि से यदि प्रभावोत्पादक शिक्षण सामग्री एवं पाठ बनाए जाए तो विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी को अन्य भाषा के रूप में पढ़नेवाले छात्रों की त्रुटियों को काफी सीमा तक दूर किय जा सकेगा।

हिन्दी तर भाषी क्षेत्रों में हिन्दी सिखते छात्रों की भाषापरक त्रुटियाँ एकत्रित कर उनका भाषिक विश्लेषण करने का प्रयास मैं ने किया है। इस विश्लेषण के आधार पर

हिन्दी का अधिक प्रभावी और सफल अध्यापन करने केलिए परियोजना बनाई जा सकती है। इस प्रकार व्यतिरेकी भाषा विश्लेषण एवं त्रुटि विश्लेषण द्वारा हमें अन्य भाषा शिक्षण की प्रक्रिया और प्रविधि को समग्र रूप से देखने में सहायता मिलती है।

परिशिष्ट १

उच्चारण संबन्धी त्रुटियों की परीक्षा केलिए सर्वेक्षण में दिए गए शब्द

1. उच्चारण कीजिए।

(क)
1) मेहमान
2) चेहरा
3) मेहन्दी
4) एक
5) पेट

(ख)
1) कैसे
2) पैसे
3) वैसे
4) कोहरा
5) मोहरा

(ग) उच्चारण कीजिए
1) लड़का
2) भड़कना
3) डमरू
4) डाली
5) पढ़ाई
6) पीढ़ी

(ग)
1) मोती
2) मोल
3) मोरनी
4) मोमबत्ती
5) कौवा
6) सौभाग्य
7) सौन्दर्य
8) सौरव
9) पहना
10) पहले

(घ)
1) नारायण
2) नाटक
3) नल
4) नीलाकाश
5) निशा

परिशिष्ट २

स्वतन्त्र रूपिम संबन्धी त्रुटियों की परीक्षा केलिए सर्वेक्षण में दिए गए प्रश्न

I. हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

1. ഇത് രാമന്റെ വീടാണ്
2. അത് ഗീതയുടെ വീടാണ്
3. വാച്ചിന്റെ വില എത്രയാണ്?
4. അവന് രണ്ട് സഹോദരിമാരുണ്ട്
5. സച്ചിന് മൂന്ന് പെൺമക്കളുണ്ട്
6. എനിക്ക് രണ്ടു കണ്ണുകളുണ്ട്
7. അവൻ റൊട്ടി കഴിച്ചു
8. അച്ഛൻ വീട്ടിൽ ഉണ്ട്
9. അവൻ കഥ പറഞ്ഞു
10. അവൾ രണ്ടു മാങ്ങ കഴിച്ചു.

परिशिष्ट ३

स्वतन्त्र रूपिम संबन्धी त्रुटियों की परीक्षा केलिए सर्वेक्षण में दिए गए प्रश्न

I. हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

1. തുളസീദാസ് രാമചരിതമാനസം രചിച്ചു.
2. രാജു എല്ലാവരിലും ശ്രേഷ്ഠനാണ്.
3. അച്ഛൻ വീട്ടിൽ ഉണ്ട്.
4. ഈശ്വരനെ വന്ദിക്കണം.
5. രാമുവിന്റെ കൃഷിയിടം വീടിനടുത്താണ്.
6. രമയുടെ മുടി നീളമുള്ളതാണ്.
7. ഗോപാലന് ഒരാൺകുട്ടിയാണ്.
8. ഷീജയുടെ സഹോദരൻ വന്നുകൊണ്ടിരിക്കുന്നു.
9. രാധയുടെ മാമൻ ഇന്ന് ഡൽഹിയിൽ നിന്ന് വരും.
10. സോമൻ കിടക്കയിൽ കിടക്കുകയാണ്.
11. പക്ഷി വൃക്ഷത്തിൽ ഇരിക്കുകയാണ്.
12. താങ്കൾ ഉള്ളിൽ ചെന്ന് നോക്കൂ.
13. കഴിഞ്ഞ ദിവസങ്ങളിൽ അവൻ നന്നായി പഠിച്ചുകൊണ്ടിരുന്നു.
14. അവൻ മനസ്സിൽ കരയാൻ തുടങ്ങി.
15. ഞാൻ ഇതിനെ കൈയ്യിൽ വെക്കും.

परिशिष्ट ४

शब्द संबन्धी त्रुटियों की परीक्षा केलिए सर्वेक्षण में दिए गए प्रश्नः-

मलयालम से हिन्दी में अनुवाद कीजिए

1. രജനി നൃത്തം ചെയ്യുന്നില്ല.
2. റോഡിൽ തുപ്പരുത്
3. കറുത്ത പശു പുല്ല് തിന്നുകയാണ്.
4. നല്ല കുട്ടികൾ വാശിപിടിക്കില്ല.
5. രാമൻ രണ്ട് റൊട്ടി കഴിച്ചു.
6. ലച്ചു തന്റെ ഭർത്താവിന്റെ മരണത്തിന് കാരണമായി.
7. ഞാൻ എന്റെ വീട്ടിൽ ഇരുന്ന് എഴുതുകയാണ്.
8. അവൻ അവന്റെ സഹോദരന്റെ കൂടെ സ്കൂളിൽ പോയി.
9. എനിക്ക് അവന്റെ കല്യാണക്കുറി കിട്ടി.
10. രാഷ്ട്രപതിയുടെ പ്രസംഗം അര മണിക്കൂർ ഉണ്ടായിരുന്നു.

परिशिष्ट ५

वाक्य संबन्धी त्रुटियों की परीक्षा केलिए सर्वेक्षण में दिए गए प्रश्न

शुद्ध कीजिए

1. लडके शौर मचाता हैं।
2. अंजली हाँकी खेलता है।
3. तुम मुझे देखकर इस तरह क्यों भाग रहा है?
4. मैं दौडता है।
5. क्या तुम वास्तव में वहाँ जाने की सोच रहा है?
6. गाडी आ रहा है।
7. पिताजी शाम को बाज़ार जाता होगा।
8. गाडी अभी आ रहा होगा।
9. आप बंबई में काफी पैसे कमाता होगे।
10. वे जाति-पाँति के विरुद्ध आवाज़ उठाये।
11. नेता जी भाषण दिया।
12. शिकारी शेर मारा।
13. राधा कहानियों पढ़ी।
14. मैं मूर्ति पूजा में विश्वास करेगा।
15. मैं पुस्तक खरीदी थी।

परिशिष्ट ६

अन्विति संबन्धी त्रुटियों की परीक्षा केलिए सर्वेक्षण में दिए गए प्रशन

शुद्ध कीजिए

1. चोर जल्दी में भाग गया।
2. नीचे में रखा है।
3. दस तारिख नाटक होगा।
4. वह दोपहर आती है।
5. राधा ने सोमवार पत्र लिखा।
6. नौकर सावधानी में काम करता है।
7. वह कठिनता में आ पाया।
8. वह सरलता में पढ़ने लगा।
9. वह पैसे के दिए बिना किताब ले गया।
10. असली कारण कुछ और ही है।
11. पर उसका फल कुछ और भी हो सकता है।
12. प्रदीप और प्रयूष स्कूल जा रहा है।

परिशिष्ट ७

अन्तरभाषा संबन्धी त्रुटियों की परीक्षा केलिए सर्वेक्षण में दिए गए वाक्य

I. हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

1. രാമു രാജുവിന് പൈസ കൊടുത്തു.
2. രാമൻ രാവണനെ കൊന്നു.
3. സീത കല്യാണിയെ വിളിച്ചു.
4. ലക്ഷ്മി മിഠായി തിന്നു.
5. കൃഷ്ണൻ പാട്ടുപാടി.
6. രാജു പുസ്തകം കൊണ്ടുവന്നു.
7. അവൻ പറഞ്ഞു.
8. അമ്മ കുട്ടിയ്ക്ക് ഭക്ഷണം കൊടുത്തു.
9. എനിക്ക് നീന്താൻ കഴിയും.
10. രാമു സ്വയം മറന്നു.

परिशिष्ट ८

अन्तरभाषा संबन्धी त्रुटियों की परीक्षा केलिए सर्वेक्षण में दिए गए वाक्य

I. शुद्ध कीजिए

1. उसने दस रुपया दिया।

2. उसने दो-चार मीठा फल खरीदा।

3. हाथी, शेर, चीता और मृग जंगल में रहता है।

4. राजु रवी या बाबू में से कोई भी आ सकते हैं।

5. मेरा पिता ईमानदार अफ़सर है।

6. पन्त जी मुख्यतः प्रकृति का कवि है।

7. आप कुछ करिए।

8. प्रत्येक व्यक्ति को इसमें भाग लेने चाहिए।

9. हर एक छात्र पास होने के लिए प्रयास करते हैं।

10. उस ने बोला।

परिशिष्ट ९

अन्विति संबन्धी त्रुटियों की परीक्षा केलिए सर्वेक्षण में दिए गए वाक्य

I. हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

1. രാമൻ വരുന്നു.
2. സീത വരുന്നു.
3. ഞാൻ പോകുന്നു.
4. അവർ മാങ്ങ തിന്നുന്നു.
5. റീന ചപ്പാത്തി തിന്നു.
6. അവർ പോകയാണ്.
7. ആൺകുട്ടി പാടുന്നു.
8. പെൺകുട്ടികൾക്ക് പോകണം.
9. ഞങ്ങൾ പാട്ടു പാടിയില്ല.
10. അവർ ഭക്ഷണം കഴിച്ചില്ല.

परिशिष्ट १०

अपसरण संबन्धी त्रुटियों की परीक्षा केलिए सर्वेक्षण में दिए गए वाक्य

I. हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

1. ഇവൾ എന്റെ സഹോദരന്റെ മകനാണ്.
2. ഇവൾ മാങ്ങ തിന്നുകയാണ്.
3. ഇത് എന്റെ പശു ആണ്.
4. നോക്കൂ, അവിടെ എന്തോ തിളങ്ങുന്നു.
5. അമ്മേ, എന്തെങ്കിലും കഴിക്കാൻ തരൂ.
6. കുറച്ച്-കുറച്ച് എനിക്കും അറിയാം.
7. അവൻ പന്ത് കളിക്കുകയാണ്.
8. അവൾ പാട്ട് പാടുന്നു.
9. അത് പൂവ് ആകുന്നു.
10. ഞാൻ എന്റെ വീട്ടിലേക്ക് തനിയെ പോകും.
11. താങ്കൾ വന്നാലും.
12. മുറിയിൽ ആരോ ഉണ്ട്.
13. ക്ലാസ്സിൽ ആരും ഇല്ല.
14. അദ്ദേഹം അധ്യാപകനാകുന്നു.
15. അവർ ഓടുകയാണ്.

परिशिष्ट ११

अभिसरण संबन्धी त्रुटियों की परीक्षा केलिए सर्वेक्षण में दिए गए वाक्य

I. मलयालम में अनुवाद कीजिए।

1. राजु अपने कमरे में बैठकर आप गा रहा है।
2. नीनु रो चुकी है अब वह आप सो जाएगी।
3. आप से मिलिए, बनारस विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हैं।
4. आप हिन्दी के उच्चस्तर के समालोचक है।
5. सब कोई कविता नहीं कर सकते।
6. कोई न कोई घर में रहेगा।
7. कुछ-कुछ मुझे भी मालूम है।
8. ये किताबें अच्छी नहीं है, और कुछ दिखाओ।
9. वह काम करता है।
10. वह काम करती है।
11. यह मेरा काम नहीं है।
12. यह अच्छा लड़का है।
13. कौन सा उत्तर सही है।
14. कौन आ रहा है?
15. वे काम कर रहे है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा : भाषाविज्ञान की भूमिका
राधाकृष्ण प्रकाशन
2/3 अबसारि रोड
दिल्ली
प्रथम संस्करण : २०१५

2. पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी आचार्य : भाषाविज्ञान और भाषा शास्त्र
विश्वविद्यालय प्रकाशन चैक
वारणसी
प्रथम संस्करण : २०१६

3 डॉ. टी चन्द्रीका : हिन्दी और मलयालम व्याकरण का
विश्लेषणात्मक अध्ययन
लोकभारती प्रकाशन
इलहाबाद
प्रथम संस्करण : २००३

4. प्रो- दिलीप सिंह : अन्यभाषा शिक्षण के बृहत संन्दर्भ
वाणी प्रकाशन
प्रथम संस्करण : २०१०

5. डॉ. देवेनद्र प्रसाद सिंह : भाषाविज्ञान और हिन्दी भाषा का स्वरूप
विकास जयभारती प्रकासन इलहबाद २६७
प्रथम संस्करण : २००६.

6. टी-के नारायण पिल्ले : हिन्दी एंव मलयालम आगत संकृत शब्दावली व्यतिरेकी अध्ययन
केन्द्रिय हिन्दी संस्थान
आगरा।
प्रथम संस्करण : १९८४

7. डॉ. भोलानाथ तिवारी : हिन्दी भाषा की रूप संरचना
साहित्य सहकर
कृष्णा नगर
नई दिल्ली
प्रथम संस्करण : १९८६

8. डॉ. भोलानाथ तिवारी : हिन्दी की ध्वनि संरचना
राधाकृष्ण प्रकाशन
नई दिल्ली
प्रथम संस्करण : १९८१

9. डॉ. भोलनाथ तिवारी डॉ मणिकालाल चतुर्वेदी : भारतीय भाषाविज्ञान की भूमिका
साहित्य सहकर कृष्ण नगर
नई दिल्ली
प्रथम संस्करण : १९८५

10. डॉ. भोलानाथ तिवारी : भाषा विज्ञान
किताब महल
इलाहाबाद
प्रथम संस्करण : १९६७

11. डॉ. भोलनाथ तिवारी : भाषाविज्ञान प्रवेश एंव हिन्दी
साहित्य सहकर
नई दिल्ली
प्रथम संस्करण : १९५४

12. डॉ. भोलनाथ तिवारी : हिन्दी भाषा
साहित्य सहकर
नई दिल्ली।
प्रथम संस्करण : १९२४

13. डॉ. भोलनाथ तिवारी : हिन्दी और भारतीय भाषाएँ,
कमलसिंह प्रभात प्रकाशन,
नई दिल्ली
प्रथम संस्करण : १९८७

14. डॉ. भोलनाथ तिवारी : भाषा विज्ञान,
किताब महल
वारणासी
प्रथम संस्करण : १९८६

15. डॉ. भोलनाथ तिवारी : भाषा विज्ञान कोश
ज्ञानमंडल
वारणासी
प्रथम संस्करण :२०२०

16. डॉ. विजय राघव रेड्डी : व्यतिरेकी भाषाविज्ञान
विनोद पुस्तक मन्दिर
आगरा
प्रथम संस्करण : १९८१

17. बजेश्वर शर्मा राजगोपालन न. वी : भाषा-शिक्षण तथा भाषा- विज्ञान
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान
आगरा
प्रथम संस्करण : १९६९

18. मनोरमा गुप्ता : भाषा आधिगम
केन्द्रीय हिन्दि संस्थान
आगरा
प्रथम संस्करण : १९६९

19. मनोरम गुप्ता : भाषा शिक्षण तथा भाषा विज्ञान
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान
आगरा
प्रथम संस्करण : १९८१

20. मुन्शीराम मनोदयाल : हिन्दी ध्वनिकी और स्वनिमी
वाणी प्रकाशन
रायपूर
प्रथम संस्करण : १९८१

21. मोहबत सिंह मानासिंह चौहान : दिक्तीय भाषा शिक्षण भाषा बैज्ञानिक विधि
चंड़ीगद बाहरी पष्लिकेशनज़
प्रैवेट लिमटेड
दिल्ली

22. सं. डॉ. रमेश चन्द्र शर्मा : भारत के हिन्दीतर क्षेत्रों में हिन्दी
विद्याप्रकाशन सी – 449, गुजैनि
कानपूर, प्रथम संस्करण : २००७

23. डॉ. रमेश चन्द्र शर्मा रणाकोटी : हिन्दी - अग्रेज़ी व्याकरणिक संरचना
आक्षर श्री ४/१,
बाज़ार विश्वास नगर
नई दिल्ली
प्रथम संस्करण : १९९७

24. डॉ. रवीन्द्रनाथ तिवारी : भाषाविज्ञान
किताब महल
इलाहाबाद
प्रथम संस्करण : १९८०

25. डॉ. रवीन्द्रनाथ श्री वास्तव : भाषाशिक्षण
महेश्वरीवाणी प्रकाशन
नई दिल्ली
प्रथम संस्करण : २००५

26. राजमल बोरा : भाषाविज्ञान का अर्थ और परिभाषा
साहित्य सहकर प्रकाशन
नई दिल्ली
प्रथम संस्करण : २००५

27. राजमल बोरा : भाषा विज्ञान (स्वरूप सिद्धान्त और आनुप्रयोग)
नाश्नल पष्लिकेशन्स
औरंगाबाद
प्रथम संस्करण : २०१०.

28. राजेश कुमार : त्रुटियाँ – विश्लेषणा और सुधार
अवुभव प्रकाशन्, १९८९
दिल्ली 110052
प्रथम संस्करण :१९८९

29. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव : हिन्दी भाषा संरचना के विविध आयाम
राधाकृष्ण प्रकाशन
आज़ादी रोड
नई दिल्ली 11002
प्रथम संस्करण : १९७९

30. राजमणी शर्मा : आधुनिक भाषाविज्ञान
वाणी प्रकाशन
नई दिल्ली 11002
प्रथम संस्करण : २०००

31. राजकमल पार्ण्डय : त्रुटि विशेलेषण सिद्धात और व्यवहार
केन्दीय हिन्दी संस्थान
आगरा
प्रथम संस्करण : १९८५

32. रमेश चन्द्र महरोत्रा : हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी
मुन्शीराम मनोहर लाल
नई दिल्ली
प्रथम संस्करण : १९७०

33. रामकिशोर शर्मा : आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत
लोकभारती प्रकाशन
महात्मा गान्धि मार्ग
इलहाबाद
प्रथम संस्करण :२००९

34. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव : हिन्दी के सन्दर्भ में सैद्धान्तिक एंव
अनुप्रतुक्त भाषा विज्ञान
साहित्य सहकार प्रकाशक ई १०/४
कृष्णनगर, दिल्ली,
प्रथम संस्करण :२००३

35. राजमल बोरा : भाषा विज्ञान
नाशनल पब्लिषिंङ हौस 2/35
अनसारी रोड़
नई दिल्ली 110002
प्रथम संस्करण : २०००

36. डॉ. लक्षमण प्रसाद सिन्हा : हिन्दी भाषा का रूपिमिय विश्लेषण
अंसुकमल प्रकाशन
गाँधी नगर
पटना 800।
प्रथम संस्करण : १९८३

37. डॉ. लक्षमण प्रसाद सिन्हा : रूप विज्ञान
अंशुकमल प्रकाशन
बोरिग रोड़ा
पटना 800001.
प्रथम संस्करण : १९८६

मलयालम पुस्तकें

1. കെ.എൽ. ആന്റണി : ഭാഷാ പഠനങ്ങൾ
കേരള സാഹിത്യ അക്കാദമി
പബ്ലിക്കേഷൻസ്, 1911.

2. ഡോ. കെ. രത്നമ്മ : മലയാള ഭാഷാചരിത്രം എഴുത്തച്ഛൻ വരെ
കറന്റ് ബുക്സ് പബ്ലിക്കേഷൻസ്
കോട്ടയം, 1994

3 ഫാ. ജോൺ കുന്നംപുറത്ത് : ശബ്ദസഭഗം, മലയാളം വ്യാകരണം
പോണ്ടിഫിക്കൽ ഇൻസ്റ്റിറ്റ്യൂട്ട്
പബ്ലിക്കേഷൻസ്
ആലുവ, 1976

4. ശ്രീ. ജോർജ്ജ് മല്ലൻ : മലയാളം വ്യാകരണം
കോട്ടയം പബ്ലിക്കേഷൻസ്
കോട്ടയം

5. ഡോ. വി.കെ. പ്രബോധ ചന്ദ്രൻ നായർ : ഭാഷാ ശാസ്ത്രപപരിചയം
മാരുബെൻ പബ്ലിക്കേഷൻസ്
അരയൂർ തിരുവനന്തപുരം, 2016

6. വേദബന്ധു : അർത്ഥവിജ്ഞാനം
കേരള ഭാഷാ ഇൻസ്റ്റിറ്റ്യൂട്ട്
തിരുവനന്തപുരം, 1988

7. ഡോ. എസ്.വി. വേണുഗോപൻ നായർ : മലയാള ഭാഷാചരിത്രം,
മാലുബൻ പബ്ലിക്കേഷൻസ്
അരയൂർ പി.ഒ.
തിരുവനന്തപുരം, 2000

अंग्रेजी पुस्तकें

1. S.K.Varma Contrastive linguistics and the Teacher of English
NIE Journal
New Delhi.

2. T.T. Chaw : Error Analysis Contrastive Analysis and students perception, 1975

पत्र पत्रिकाएँ

1. भाषा : मई जून २००२ मार्च – एप्रेल २०१२, २०१६
   संपादकीय कार्यलिय केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

2. राजभाषा भारती : २११ जूलाई राजभाषा विभाग गुह मन्त्रालय भारत सरकार नई दिल्ली

3. नव-निकष : जूलाई २०११ गाँधी ग्राम रोड नई दिल्ली

Website:

www.indianlanguage.com

www.dictionary.com

www.rajbhasha.com

www.google.com